अनुवादक
शिवदानसिंह चौहान
श्रीमती विजय चौहान

VAASNA : NOVEL
DOSTOEVSKI
मूल्य : दो रुपये

वासना

मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना मोस्कालीव्ना निश्चय ही मोर्दासोव की सबसे प्रमुख महिला हैं, इसमें रत्ती-भर भी शक नहीं। उनके व्यवहार से ऐसा लगता है जैसे उन्हें किसीकी ज़रूरत नहीं, बल्कि इसके विपरीत वे यह जानती हैं कि सब लोगों को उनकी ज़रूरत है। यह सच है कि उन्हें शायद ही कोई पसंद करता हो, और कई लोग तो ऐसे भी हैं जो उनसे दिली नफ़रत करते हैं; लेकिन सब लोग उनसे डरते हैं और श्रीमती मारया को बस इसीकी ज़रूरत है। ऐसी ज़रूरत चरित्र की उत्कृष्टता की निशानी है। मिसाल के लिए, आखिर यह कैसे संभव है कि मारया अलेक्ज़ेन्द्रोव्ना को, जिन्हें निंदा-चुगली से बेहद प्रेम है, और जब तक दिन में वे कोई नई बात न सुन लें, उन्हें नींद नहीं आती, फिर भी शालीन व्यवहार करना आता है, और किसीको उनकी तरफ़ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं पड़ती; और ये सम्मानित महिला दुनिया की सबसे ज़्यादा बकवादी औरत हैं, कम से कम मोर्दासोव की तो हैं ही। लेकिन देखने वाला सोचेगा कि उनकी मौजूदगी में पर-निंदा लुप्त हो जाती होगी और पर-निंदकों का चेहरा मारे शर्म के लाल हो जाता होगा और जिस तरह नन्हे लड़के स्कूलमास्टर के आगे कांपते हैं, उसी तरह पर-निंदक श्रीमती मारया के आगे कांपते होंगे और केवल अत्यन्त उदात्त विषयों पर ही उनमें बातचीत होती होगी। वे मोर्दासोव के कुछ व्यक्तियों के इतने महत्त्वपूर्ण और कलंकमय रहस्यों से परिचित हैं कि अगर वे किसी उचित अवसर पर उन बातों को लोगों के सामने इस अंदाज़ से दुहराएं

कि वे दूरस्थ [illegible] — जिस कमरे में वे सोती हैं, तो मोलोतोव से [illegible] दुनिया का [illegible] हिस्सा [illegible] था। [illegible] है और [illegible], [illegible] भी [illegible] को ही [illegible] है। [illegible] है और वे [illegible] और [illegible] [illegible] प्रदान करती है। इसीलिए तो है विज्ञान और युद्ध-कौशल 'हमारे बीच' मारथा अलेक्सांद्रोवना प्रायः लोकतंत्र और शान्तिपूर्ण व्यवहार के लिए हमेशा से मशहूर रही है, और स्वभावतः मारोतोव की तरह भी अहिंसक शान्तिपूर्ण व्यवहार से श्रीमती मारथा का मुकाबिला नहीं कर सकते। हम इस बात के आदी हैं कि वे एक ही समय में अनेक कठिनाइयों को पार कर सकती हैं, नाच भी सकती हैं और लड़ भी सकती हैं, और सम्भव है कि उन्होंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि वह उधर उनकी जबान से निकला है। यह प्रकृति समाज की सर्वोच्च श्रेणी के लोगों की विशेषता समझी जाती है। इस तरह की भाषा में वे स्वयं किसी को भी मात करती हैं। उनकी शोहरत दूर-दूर तक है। मोलोतोव में आने जाने वाले बहुत से लोग श्रीमती मारथा के अतिथि-सत्कार के गीत गाते हुए लौटते हैं और बाद में उनसे पत्र-व्यवहार तक जारी रखते हैं। एक नाविक ने सच-मुच उन्हें एक कविता भी भेजी थी, जिसे उन्होंने बड़े गर्व से सब लोगों को दिखाया था। एक साहित्यिक प्रतिनिधि ने अपना एक उपन्यास श्रीमती मारथा को समर्पित किया था और उन्हीं के द्वारा दी गई एक दावत में उपन्यास पढ़कर भी सुनाया था, जिसका बड़ा अच्छा असर पड़ा। एक जर्मन वैज्ञानिक, जो कार्ल्सरूहे से खास तौर पर हमारे इलाके में पाए जाने वाले सींग वाले पतंगों की खोज करने आया था और जिसने इन कीड़ों के बारे में चार पुस्तकें लिखी थीं, मारथा अलेक्सांद्रोवना

सामाजिक प्रतिष्ठा को रत्ती-भर चोट नहीं पहुंची। उनका घर आज भी मोर्दासोव में सबसे प्रमुख माना जाता है। वकील की पत्नी अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा ने, जो मारया अलेक्सान्द्रोव्ना की सबसे दुश्मन है और ऊपर से उनकी दोस्त है, मुंह आज बदनाम शुरू कर दिया था, लेकिन लोगों ने देख लिया कि मारया अलेक्सान्द्रोव्ना को हिलाना बड़ा कठिन है, क्योंकि उनकी जड़ें पाताल तक गहरी हैं।

चूंकि हमने अफानासी मातविच का जिक्र कर ही दिया है, तो उनके बारे में कुछ शब्द और कह दें। वे बेहद सज्जन और नैतिक व्यक्ति हैं, हालांकि मुसीबत के क्षणों में वे गूंगों की तरह आंखें फाड़कर देखा करते हैं। वे बड़े शालीन हैं, खास तौर पर नामकरण की दावतों में जब वे सफेद गुलूबन्द पहनकर आते हैं, तो अत्यन्त शालीन दिखाई देते हैं। लेकिन यह शालीनता तभी तक बनी रहती है जब तक वे अपना मुंह नहीं खोलते, जब खोलते हैं तो वे एकदम बेहूदे मालूम होते हैं—इस शब्द के प्रयोग के लिए मैं माफी चाहता हूं। वे मारया अलेक्सान्द्रोव्ना के सर्वथा अनुपयुक्त हैं, सभी लोगों की यही राय है। अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा की वजह से ही वे अपनी नौकरी बनाए रख सके। मैं हमेशा कहा करता हूं कि उन्हें तो बहुत पहले से सब्जी के खेत में चिड़ियों को डराने के लिए खड़ा कर देना चाहिए था, सिर्फ उसी जगह रहकर वे देशवासियों के काम आ सकते हैं। *मारया अलेक्सान्द्रोव्ना ने उन्हें मोर्दासोव से एक या* दो मील दूर दूसरे गांव में भेजकर अच्छा ही किया। उस गांव में श्रीमती मारया की जमीन थी और एक सौ बीस दास भी थे, लोगों का कहना था कि यही एकमात्र साधन था जिससे श्रीमती मारया अपने घर की प्रतिष्ठा को इतनी अच्छी तरह बनाए हुई थीं। सब जानते थे कि अफानासी मातविच को उन्होंने इसलिए पास रख छोड़ा है क्योंकि उनके पास एक सरकारी नौकरी है और उन्हें तनख्वाह मिलती है और उनके पास आमदनी के कुछ और जरिए भी हैं। जब उनकी नौकरी छूट गई

और तनख्वाह आदि सब बंद हो गई तो उन्हें एकदम बेकार समझकर निर्वासित कर दिया गया। सब लोगों ने मारया अलेक्सेंद्रोव्ना के विवेक और दृढ़ निश्चय की तारीफ की। अफानासी मातविच देहात में दूरी घास वाली जमीन पर रहते हैं। मैं एक बार वहां उनसे मिलने गया था और मैंने वहां पूरा एक घंटा अच्छी तरह गुजारा था। अफानासी मातविच अपने सफेद गुलूबंद लगातार पहनकर देखते रहते हैं, अपने जूतों पर खुद पालिश करते हैं, मजबूरी की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए कि उन्हें कोई न कोई काम करना और अपने जूतों को चमकाना पसन्द है। वे दिन में तीन बार चाय पीते हैं, हमाम में जाने का उन्हें बहुत शौक है और वे जीवन से संतुष्ट हैं।

डेढ़ बरस पहले मारया अलेक्सेंद्रोव्ना और अफानासी मातविच की एकलौती बेटी जिनेदा अफनास्यीव्ना को लेकर जो अपमानजनक घटना हुई थी, वह सब लोगों को अच्छी तरह याद है। जिनेदा निस्संदेह एक सुन्दरी है, बेहद शालीन है, लेकिन उसकी उम्र तेईस बरस की है और अभी तक उसकी शादी नहीं हुई। डेढ़ बरस पहले जिनेदा और स्थानीय स्कूल के टीचर के सम्बन्ध को लेकर तरह-तरह की अफवाहें फैली थीं, जो आज तक खत्म नहीं हुईं। जिनेदा के अविवाहित रहने का शायद यही कारण है। लोग अभी तक जिनेदा द्वारा लिखे गए प्रेमपत्र की चर्चा करते हैं, जो मोर्दासोव के घर-घर घूमा था, लेकिन क्या किसीने सचमुच उस खत को देखा था? सबने उस खत की चर्चा सुनी थी, लेकिन किसीने अपनी आंखों से उस खत को नहीं देखा। मुझे यह बताइए कि अगर यह खत सब जगह पहुंचा था तो वह कहां गया? कम से कम मुझे तो ऐसा एक भी आदमी नहीं मिला जिसने उस खत को अपनी आंखों से देखा हो। अगर आप मारया अलेक्सेंद्रोव्ना से इस खत की चर्चा करेंगे तो वे इस तरह पेश आएंगी, जैसे उन्हें आपकी बात समझ में ही नहीं आई। मान लीजिए कि सचमुच कोई बात थी और जेना ने खत भी

लिखा था। और मैं मानने के लिए तैयार हूं कि उसने लिखा था। लेकिन मारया अलेक्सांद्रोव्ना ने उस वक्त जिस असाधारण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था और वह कलंकपूर्ण प्रसंग एकदम दबा दिया गया था। उसका कहीं नामोनिशान भी नहीं रहा था। मारया अलेक्सांद्रोव्ना इस गड़े किस्से पर अब कोई ध्यान नहीं देती, लेकिन उन्होंने अपनी इकलौती बेटी की इज़्ज़त को निष्कलंक बनाए रखने के लिए क्या-क्या किया, यह सिर्फ ईश्वर ही जानता है। और अगर ज़ेना की शादी नहीं हुई तो इसमें कोई ताज्जुब नहीं— आखिरकार यहां कौन-से दूल्हे बैठे हैं! ज़ेना की शादी किसी आला खानदान के आदमी से होनी चाहिए। क्या दुनिया में ज़ेना जैसी सुन्दरी कभी हुई है? माना कि यह अहंकारी है, बेहद अहंकारी। सुना है कि मोजग्ल्याकोव उससे शादी करना चाहता है, लेकिन यह शादी कभी होगी, इसमें सन्देह है। आखिर मोजग्ल्याकोव है क्या? यह सच है कि वह नौजवान है, शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, सौकीन तबियत का आदमी है, उसके पास डेढ़ सौ भूमिदास हैं और वह पीटर्सबर्ग से आया है लेकिन वह मूर्ख, बकवादी और लापरवाह आदमी है। उसके दिमाग में कोई न कोई नई खुराफात समाई रहती है और फिर डेढ़ सौ भूमिदास क्या चीज़ है जबकि उनके स्वामी के दिमाग में हर वक्त नई खुराफातें समाई रहें? नहीं, नहीं! शादी-वादी नहीं होगी!

पाठक ने अभी तक जो कुछ पढ़ा है वह मैंने पांच महीने पहले मारया अलेक्सांद्रोव्ना की प्रशंसा में लिखा था। मैं साफ मानता हूं कि मेरे हृदय में उनके प्रति पक्षपात है, मैं उस शानदार महिला की प्रशंसा में एक छंद लिखना चाहता हूं, यह छंद 'उत्तरी प्रदेश की मधुमक्खी' के खतों तथा अन्य प्रकाशनों की तरह विनोदपूर्ण भाषा में एक दोस्त को लिखे गए खत की तरह होगा—ईश्वर का धन्यवाद है कि उस ज़माने की शैली फिर कभी लौटकर नहीं आएगी। लेकिन चूंकि मेरा ऐसा कोई दोस्त नहीं, जिसे मैं खत लिखूं और मुझमें एक जन्मजात साहित्यिक भीरुता

२

मैं इस वक्तव्य से अपनी कहानी शुरू करूंगा कि काउन्ट—के हरगिज बूढ़ा नहीं कहा जा सकता, लेकिन उनकी तरफ देखने से ही मे यह विचार उठे बगैर नहीं रहता कि वे मरणोन्मुख, जीर्ण ध्व हैं या यूं कहा जाए कि कीड़ों के कुतरे हुए हैं। मोर्दासोव में काउन्ट बारे में अजब किस्म की अफवाहें फैलाई गईं। कुछ लोगों ने यहां कह डाला कि काउन्ट पागल हैं। सबको यह बात अजब मालूम हुई चार हजार भूमिदासों का स्वामी, मशहूर खानदान का वंशज, अ चाहता तो इलाके मे अपना काफी प्रभाव पैदा कर सकता था, जो अप शानदार रियासत मे एक फकीर की-सी जिन्दगी बसर कर रहा है। क लोग काउन्ट को छह या सात बरस पहले से जानते थे जब वे मोर्दासो मे रहते थे। इन लोगो का कहना था कि उस जमाने में काउन्ट को एकान बर्दाश्त नहीं होता था और वे और चाहे जो कुछ हों, फकीर नहीं थे खैर, विश्वस्त सूत्रो से मैं काउन्ट के बारे मे निम्नलिखित जानकारी हासिल कर सका।

बहुत बरस पहले अपनी जवानी के दिनों में काउन्ट ने जोर-शोर के साथ रईसी जिन्दगी बिताई थी, विदेशो में जाकर भोग-विलास पर बहुत खर्च किया था, कई औरतो से मुहब्बत की थी। उस जमाने में काउन्ट ड्राइंगरूमों मे बैठकर गीत गाते थे, व्यंग्यभरी कविताए लिखते थे, शब्दों का खेल खेलते थे। हालांकि उन्होंने कभी विशेष प्रतिभा का परिचय नहीं दिया, न शोहरत ही पाई। कहना न होगा कि उन्होंने अपनी सारी जायदाद इसी तरह फूंक डाली और बुढ़ापे में उनके पास फूटी कौड़ी तक न रही। किसीने उन्हें अपनी रियासत में लौटने की सलाह दी, जिसकी नीलामी होने का खतरा था। काउन्ट ने यह सलाह मान ली और वे जाते-जाते रास्ते मे मोर्दासोव ठहर गए, जहां उन्होंने

हालांकि वह बहुत ही बढ़िया थी। उनके दांत भी बनावटी थे। वे
देखकर तरह-तरह के पेटेन्ट लोशनों से अपना शरीर धोते थे और तरह
तेल-फुलेल से महकते रहते थे। कहा जाता था कि काउन्ट बढ़िया
थे और उनका वातूनीपन लोगों की बर्दाश्त से बाहर हो गया। ऐ
मालूम होता था कि उनके दिन खत्म हो गए हैं। सब जानते थे कि उ
पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। इसी वक्त उनकी एक नज़दी
रिश्तेदार जर्जर बुढ़िया जो स्थायी तौर पर पेरिस में रहती थी, औ
जिससे पैसा मिलने की काउन्ट को कभी कोई उम्मीद नहीं थी, अचान
चल बसी। मरने से ठीक एक महीने पहले बुढ़िया अपनी जायदाद
एकमात्र कानूनी उत्तराधिकारी को दफना चुकी थी। अकस्मात् काउ
ने अपने-आपको बुढ़िया की जायदाद का उत्तराधिकारी पाया। अब
मोर्दासोव से पचास मील दूर एक शानदार रियासत के मालिक बन ग
थे, जिसमें चार हज़ार भूमिदास थे। काउन्ट अपने आर्थिक मामलों क
ठीक करने के लिए फौरन पीटर्सबर्ग रवाना हो गए। मोर्दासोव क
महिलाओं ने मिलकर अपने मेहमान की विदाई के सम्मान में ए
शानदार दावत दी। लोगों को याद है कि इस दावत में काउन्
असाधारण रूप से खुश थे; तरह-तरह के चुटकुले, और शानदा
कहानियां सुना रहे थे। उन्होंने वादा किया कि जल्द से जल्द दुखानोवे
(नई रियासत) पहुंचकर दावतों, तमाशों, पिकनिकों, बालडान्सों औ
आतिशबाज़ी का आयोजन करेंगे। उनके जाने के बाद पूरे एक बरस तक
मोर्दासोव की महिलाओं में इन वादों की चर्चा होती रही और वे बेचैनी
से अपने प्यारे बुज़ुर्ग दोस्त की वापसी का इन्तिज़ार करती रहीं। इस
बीच वे दुखानोवो का भ्रमण भी कर आईं, जहां एक पुराने ढंग की
हवेली और बाग था। बाग की झाड़ियों को काटकर शेरों, कुत्तों और
मंडपों के आकार का बनाया गया था, और जहां बनावटी पहाड़ियां और
मनोरम झीलें थीं, जिनपर सुनहरी नावें तैर रही थीं, उन नावों पर बांसुरी

करने हुए मुर्दों की सूचियाँ थीं। रिश्वत चलने और बड़ी बातचीत का।

फलस्वरूप काउन्ट दीवालिये हो गये और कहा, कहने हैं, यह बात का खानूद और निराश हुए कि वे कोर्दोसोव जाएं, इस बहाने, लेकिन वे दुस्तानोवो चले गए, जहां वे इस समय बड़ी विचित्र जीवन बिता रहे हैं। उनके बारे में विचित्र अफवाहें फैलने लगीं और कुछ समय में काउन्ट का व्यक्तित्व पौराणिक कथाओं की तरह रहस्यमय हो गया। कुछ लोग कि दीवालिये के बावजूद का कोई असमान नहीं किया गया, क्योंकि काउन्ट के कुछ रिश्तेदार जो उनके भावी उत्तराधिकारी थे, इस डर से कि कहीं काउन्ट अपनी जायदाद फूंक न दें, चाहते थे कि काउन्ट को किसी अभिभावक की देख-रेख में रखा जाए। उनकी दलील थी कि काउन्ट का दिमाग कमजोर है। कुछ लोगों ने तो यह भी जोर दिया कि फलस्वरूप काउन्ट को पागलखाने में भेजने की कोशिशें भी की गई थीं, लेकिन उनके एक रिश्तेदार ने, जो बड़ा आदमी है, यह कहकर काउन्ट को बचा लिया कि बेचारा काउन्ट तो पहले से ही अधमरा है, किसी तरह, बदहवासी हालतों में उसका शरीर चुका हुआ है, शायद जल्द ही वह इस दुनिया से चल बसेगा, और काउन्ट की जायदाद अपने-आप इन लोगों के हाथों में आ जाएगी, इसलिए काउन्ट को पागलखाने में भेजने की कोई जरूरत नहीं है। मैं फिर कहता हूं, लोग क्या-क्या नहीं कहते, खास तौर पर हमारे कोर्दोसोव में। लोगों का कहना है कि इन सब बातों से काउन्ट महोदय इतने आत्मलीन हो गए कि उनका चरित्र बिल्कुल बदल गया और वे फकीर बन गए। कोर्दोसोव के कुछ प्रमुख व्यक्ति काउन्ट को बधाई देने के लिए दुस्तानोवो गए, दरअसल वे काउन्ट को देखने के लिए उत्सुक थे। लेकिन काउन्ट या तो उनसे मिले ही नहीं, और अगर मिले भी तो बड़े विचित्र ढंग से। यहां तक कि काउन्ट ने अपने पूर्व परिचितों को पहचाना भी नहीं। कहा गया कि वे जान-बूझकर लोगों को पहचानने से इन्कार कर रहे हैं।

खुद गवर्नर महोदय काउन्ट से मिलने गए
लौटे कि उनकी राय में सचमुच काउन्ट का
बाद जब भी गवर्नर महोदय को उनकी दुर्द
कराया जाता तो वे नाक-भौं सिकोड़ लेते।
था। आखिरकार इस महत्त्वपूर्ण तथ्य की ख्या
स्तेपानीदा मातवीव्ना (यह औरत कौन थी
की मुट्ठी में हैं, जो बड़ी उम्र की एक मोटी और
पहनती थी, और उसके हाथ में हर वक्त चाबि
वह काउन्ट के साथ पीटर्सबर्ग से आई थी।
उस बुढ़िया का हुक्म मानते थे और बिना उसक
भी नहीं सकते थे। वह बुढ़िया अपने हाथों से
काउन्ट से बच्चे की तरह लाड़ करती थी, उन्हें
लोगों को खास तौर पर रिश्तेदारों को काउन्ट
हालात की जांच-पड़ताल करने के लिए वहां आ
मर्दासोव में, विशेषकर महिला वर्ग में, इस रहस
के अनुमान लगाए गए। यह भी कहा गया कि स
काउन्ट की सारी रियासत संभालती है, और
अधिकार और मनमानी करने की खुली छूट दे
बुढ़िया ने सब अमीनों, कारिन्दों और नौकरों को
और खुद ही सारी रकमें वसूल करती है। लेकिन
थी, इसलिए किसान अपने भाग्य को सराहते थे।
से मालूम हुआ कि वह करीब-करीब पूरा दिन
बनावटी बालों की टोपियां और कोट पहनकर
स्तेपानीदा मातवीव्ना के साथ ताश खेलते थे
शान्त अंग्रेज़ी घोड़ी पर बैठकर सवारी करने
मातवीव्ना हमेशा बन्द गाड़ी में उनके साथ

दिखाई रखी है। कमरे के दूसरे सिरे पर एक और मेज है, जिसपर सफ़ेद मेज़पोश बिछा है और एक चांदी के समावार में पानी उबल रहा है, और बढ़िया चाय के बर्तन रखे हैं। चाय बनाने का काम मरगारिता देवोत्कृना उग्रानसोवा को सौंपा गया है, जो मार्या अलेक्जेंद्रोव्ना की दूर की रिश्तेदार है, और यहीं रहती है।

इस महिला के बारे में भी कुछ शब्द कह देना ठीक होगा। वह पैंतीस बरस के करीब उम्र की विधवा थी। उसके बाल काले रंग के थे, चेहरे पर ताज़गी थी और आंखें सुन्दर ब्राउन रंग की थीं। उसे किसी दृष्टि से भी बदसूरत नहीं कहा जा सकता था। हर वक्त खुश रहती थी। हंसने का उसे मर्ज़ था। काफ़ी चालाक और चातुनी थी और अच्छी तरह अपनी देखभाल करने में समर्थ थी। उसके दो बच्चे थे जो किसी स्कूल में पढ़ रहे थे। अब वह दुबारा शादी करने के लिए उत्सुक है, वह आज़ाद तबियत की औरत है, उसका पति एक अफ़सर था।

मार्या अलेक्जेंद्रोव्ना आग के पास बैठी थी और उनकी तबियत बड़ी खुश थी। वे हल्के हरे रंग की पोशाक पहने हुए थीं, जो उनपर खूब फब रही थी। काउन्ट के आने से उन्हें बेहद खुशी हुई थी। काउन्ट इस वक्त ऊपर के कमरे में तैयार हो रहे थे। मार्या अलेक्जेंद्रोव्ना इतनी खुश थीं कि उन्होंने अपनी खुशी को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। उनके सामने एक नौजवान अत्यन्त कृत्रिम भाव से खड़ा था और बहुत ज़िन्दादिली से उन्हें कुछ बता रहा था। उसकी आंखों से श्रोताओं को प्रसन्न करने की इच्छा झलक रही थी। उसकी उम्र पच्चीस बरस थी। अगर वह भावावेश में बातें न कर रहा होता तो शायद उसके तौर-तरीके बर्दाश्त भी किए जा सकते थे, लेकिन वह बढ़ा-चढ़ाकर अपनी वाक्‌चातुरी और हास्य का प्रदर्शन कर रहा था। उसने बहुत बढ़िया कपड़े पहन रखे थे। उसके बाल सुनहरी थे और शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं थी। लेकिन हम इस आदमी का ज़िक्र पहले कर चुके हैं। यह वही

मोज़ल्याकोव है, जिससे लोगों को बड़ी उम्मीदें थीं। मारया अलेक्जें-ड्रोव्ना मन ही मन इस नौजवान को नाचीज़ समझती थीं, लेकिन वे हमेशा बड़े उत्साह से उसका स्वागत करती थीं। वह उनकी बेटी ज़ेना से शादी करना चाहता था, उसके अपने ही शब्दों में, 'वह ज़ेना के प्रेम में पागल था।' वह बार-बार ज़ेना की ओर मुंह फेरकर अपनी वाक्-चातुरी और उल्लास से उसकी मुस्कान पाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन ज़ेना उसके प्रति लापरवाही और उदासीनता दिखा रही थी। इस वक्त ज़ेना दूर, प्यानो के पास अन्यमनस्कता से किसी एलबम के पन्ने पलट रही थी। वह उन औरतों में से थी, जिन्हें देखते ही सब लोगों का मन उत्साह और प्रशंसा से भर जाता है। वह असाधारण सुन्दरी थी—लंबा कद, सलोना रंग, काली आँखें, छरहरा बदन, लेकिन शानदार वैभवशाली वक्ष। उसकी बाँहें और कंधे किसी मूर्ति की तरह सुडौल थे, उसके पैर गज़ब के सुकुमार थे, चाल महारानियों की तरह थी। आज उसकी रंगत कुछ पीली नज़र आ रही थी, लेकिन उसके लाल होंठ, जो शायद किसी कलाकार ने तराशे थे और जिनके बीच से उसके छोटे-छोटे दांत मोतियों की लड़ियों की तरह चमकते थे, उन्हें अगर आप एक बार भी देख लें तो तीन रातों तक आपकी नींद उड़ जाए और सपनों में भी इसीका ख्याल आता रहे। उसका चेहरा इस समय कठोर और गम्भीर था, साफ ज़ाहिर था कि उसकी दृष्टि के आगे मोज़ल्याकोव महाशय बुरी तरह घबरा रहे थे। जो भी हो, वह जब भी कनखियों से ज़ेना की तरफ देखते थे तो सकपका जाते थे। ज़ेना की हर अदा [illegible] दर्द-भरी उदासीनता थी। वह सफे[illegible]
थी। सफेद रंग उसपर बहुत खि[illegible]
खिलती थी। वह एक अंगूठी प[illegible]
मढी थी, बालों के रंग से मह[illegible]
की भौंहें नहीं थे। मोज़ल्या[illegible]

किया था कि वे साथ मिलते थे। साथ कुछ ऐसा हुआ था जैसे वही उदासी कन्दील और उदास जगह था नहीं थी। जैसे किसी किस्म की कोई हो। लेकिन अचानक अर्नेस्टाईनजेम्स अचानक उसके होने के लिए तैयार थी, तुम्हारी ठीक-ठीक से अर्नेस्टाईन से वे उसकी देरी को अंतिम दृष्टि से देखनी चाही थी। मालूम होता था वे भी अब से रही हैं।

प्यारा अर्नेस्टाईनजेम्स बहुत बड़ी प्यारा अर्नेस्टाईनजेम्स, मैं बहुत खुश हूँ मेरा सब कभी तो जिन्दगी में कहीं होकर हर आदमी को यह कहा जुड़ा है। तुमसे अपने यहाँ से तो हमें पहले काउण्ट खुश और ऐसा गो को 'कम्फर्टेबल' ही मैं उसका जिक्र नहीं कर रही। तो तो है ही, कितनी खुशी की बात है कि तुम प्यारे काउण्ट की बहन से बात! तुम कल्पना नहीं कर सकोगे कि मुझे इस शानदार बुजुर्ग से कितना प्यार है! नहीं तुम इन बातों को इसलिए नहीं समझ सकोगे! तुम शीशमहल भाग का इन्तजार था नहीं समझ सकता, मैं चाहे तुम्हें कितना ही समझाऊँ। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आने से, यह कहना पहले काउण्ट मेरे लिए क्या चीज थ—क्या है मेरा? ओह, वर्षिता में भूल गई, तब तुम अपनी बीवी के यहाँ पहुँचे थे तुम्हें विश्वास नहीं होगा प्यारे अर्नेस्टाईनजेम्स, मैं काउण्ट की बचपनदोस्त बहन, या बस कुछ थी। वे बच्चे की तरह मेरा बहुत ख्याल रखते थे। हमारा सम्बन्ध निष्कपट, कोमल और उदात्त था। यहाँ तक कि उनकी भतीजी, भाभी, भी था। मैं यह भी नहीं जानती कि इस रिश्ते को किस नाम से पुकारूँ। इसीलिए काउण्ट सिर्फ मेरे घर को इज्जतपूर्वक याद करते हैं। बेचारे शाहजादे! शायद तुम नहीं जानते प्यारे अर्नेस्टाईनजेम्स, तुमने काउण्ट को मेरे पास लाकर उनकी कितनी रक्षा की है। पिछले कुछ बरसों में मैं तुम्हारे दिल से काउण्ट की याद करती रही हूँ। तुम्हें विश्वास नहीं होगा—सचमुच सपनों में मैं काउण्ट नजर आते थे। लोग कहते हैं कि उस भयंकर औरत ने काउण्ट पर जादू कर दिया है, उन्हें तबाह कर दिया है लेकिन आखिरकार तुमने काउण्ट को

मुझे उनकी याद है, मैं उनसे प्रभावित भी हुआ था। लेकिन वे मुझसे मना इसलिए करते क्यों ? मैंने अपना परिचय दिया वे खुशी से फूले नहीं समाए, मुझे गले से लगा लिया और सारा वक्त हंसते रहे और रोते रहे—ईश्वर की कसम, मैंने यह अपनी आंखों से देखा है। आखिर-कार किसी तरह मैंने उन्हें अपनी गाड़ी में बैठाकर मोदोगोर चलने के लिए राजी किया, मैंने कहा कि वे चाहे एक ही दिन के लिए चलें, लेकिन जरूर चलें। वहां वे आराम कर सकेंगे और उनकी तबियत सुधर जाएगी। वे बिना कुछ कहे चलने के लिए तैयार हो गए'''उन्होंने मुझे बताया कि वे पादरी मिसाईल से मिलने स्वेतोवस्कं आश्रम जाते रहे हैं, पादरी मिसाईल की वे इज्जत करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि काउन्ट के एक रिश्तेदार स्तेपानीदा मातवीवृना के बारे में जानते हैं। पिछले बरस इस औरत ने मुझे भाड़ू मारकर दुग्गानोवो से निकाल दिया था—तो इस औरत को खत मिला कि उसका एक रिश्तेदार मास्को में मौत की घड़ियां गिन रहा है, यह रिश्तेदार उसका बाप है, बेटी है या कोई और है यह न मैं जानता, न ही मुझे इसकी परवाह है। शायद उसका बाप और बेटी दोनों मरने के करीब थे या किसी दारासाने में काम करने वाला भाजा या भतीजा होगा जिसे पासंग की तरह इस्तेमाल किया गया होगा'''कहने का मतलब यह है कि स्तेपानीदा मातवीवृना इतनी उद्विग्न हो गई कि वह दस दिन के लिए काउन्ट को छोड़कर राजधानी की शोभा बढ़ाने के लिए चली गई। काउन्ट ने एक दिन इन्तजार की, दो दिन इन्तजार की, बनावटी बालों की टोपियां पहनकर देखीं, तेल-फुलेल लगाया, अपने बाल रंगे, ताश के पत्तों को उलटा-पलटा लेकिन अन्त में उन्होंने देखा कि स्तेपानीदा मातवीवृना के बिना उनका गुजारा नहीं चल सकता। उन्होंने गाड़ी में घोड़े जुतवाए और स्वेतोवस्कं आश्रम की तरफ चल पड़े। एक नौकर ने, जो स्तेपानीदा मातवीवृना से डरता था, काउन्ट को रोकने की कोशिश की लेकिन काउन्ट अपने

बैठने का कह गई। सब कामों से हाथ से बचे थे। एक हफ्तों से कुहनी, पड़े ही बहुत से बाद गई और इस ओर था, जिसमें वे सारी जिन्दगी के हमला की तरह रास्ता काटा था, उनमें जाती, सबक बीजियाँ, जल्दी से फिर गयी। ऐसे जाई इलाज और उन्हें अस्पतालों बारम्बार अलेक्जेंड्रिया के बाद आनन्दी से किस तरह कर जिया, को इस रोगों को लिए है। डाक्टर का कहना है कि उनकी बचाव बावजूद अनिवार्य कार्य अनिवार्य उन्होंने कभी नहीं देखी। लेकिन, इस तरह का पहुँचे, डाक्टर उन्हें अपने जीवन की बात के लिये वे कभी अपने हाथ न जाता नहीं सुनते — बेकार ही गई है। पूरी तरह बेकार हुए बर्तन का न कहे कि उसका दुनिया सुनाने वर्षों बीमारियों से लड़ने आने के लिए वे अपना नहीं इलाज बढ़ाना चाहिए। यही आपकी कहानी है।'

'ऐसा यह आपका किस्सा मशहूर है।' जिसने कहिला इस से कहानी कहता है। लेकिन तुम्हें जोड़ एक और इलाज का बचाव हो! तुम ठीक-ठीक बताओ तुम्हारा डाक्टर से क्या रिश्ता है? देखती हूँ तुम कहीं क्या कहते हो।' आपका अलेक्जेंड्रिया ने पूरी कहानी सुनने के बाद कहा।

'मैं ठीक से नहीं जानता, आपका अलेक्जेंड्रिया कि मेरा डाक्टर से क्या रिश्ता है—शायद वास पुत्र पुत्री का रिश्ता है। फिर भी मैं ठीक से नहीं कह सकता कि मैं उनका क्या लगता हूँ। इसमें कसूर मेरा नहीं, बल्कि सारी सम्भावना मिशनरियों का है, जिन्हें दिन-भर अपने मिशनरियों के साथ रविवारों पर मिलने के सिवा कोई काम नहीं, उन्होंने पिछले साल मेरी बात छाई थी कि मैं दुकानों को बाहर डाक्टर के लिए। वे खुद ही क्यों नहीं चली गई? मैं डाक्टर को बिना किसी खास कारण के ही बचाराम कहता हूँ और वे इस तरह पुकारे जाने पर जवाब देते हैं, बस अभी तक तो हमारा यही रिश्ता है।'

'खैर, मैं तो हमेशा यही कहती कि सिर्फ ईश्वर की प्रेरणा पाकर

शादी कर ली है, लेकिन वह सिर्फ नताल्या दमित्रीव्ना का पति ही तो है। नताल्या दमित्रीव्ना चाहे एक छोड़ पचास गूंथी हुई चोटियां पहन लें, रहेगी तो वह वही नताल्या दमित्रीव्ना ही, उससे ज्यादा कुछ नहीं। तुम खुद भी कुछ हद तक अभिजातवर्ग के प्रतिनिधि हो, क्योंकि अभिजातवर्ग से आए हो। मैं भी अपने को अभिजातवर्ग से बाहर का नहीं समझती। सिर्फ बीमार पक्षी ही अपने घोंसले को गंदा करता है। लेकिन जो भी हो मेरे बिना बताए तुम खुद इन्हीं नतीजों पर पहुंचोगे, और मेरे प्यारे पॉल, मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूं कि तुम अपने शेक्सपियर को भूल जाओगे। मुझे लगता है कि अभी भी तुम ईमानदार नहीं हो, सिर्फ फैशन की नकल कर रहे हो। लेकिन मैं भी किस तरह बातों में लगी हूं, तुम यहीं ठहरो मेरे प्यारे पॉल, मैं ऊपर जाकर देखती हूं कि काउन्ट क्या कर रहे हैं। शायद उन्हें किसी चीज की जरूरत हो, तुम जानते ही हो मेरे यहां के नौकरों को····'

और उन नौकरों का ख्याल आते ही मारया अलेक्जेंड्रोव्ना जल्दी से बाहर चली गई।

'काउन्ट उस कीचड़ अन्ना निकोलाईव्ना के हाथों में नहीं पड़े, इस बात से मारया अलेक्जेंड्रोव्ना बहुत खुश नज़र आती हैं, और अन्ना निकोलाईव्ना सबसे कह चुकी हैं कि वे काउन्ट की रिश्तेदार हैं। मेरा ख्याल है कि वे गुस्से से जली जा रही होंगी,' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने टिप्पणी की, लेकिन किसीने उसकी बात का जवाब नहीं दिया, इसलिए उसने ज़ेना की तरफ देखा। स्थिति भांपते हुए और किसी काम का बहाना बना करके वह बाहर चली गई, लेकिन बाहर दरवाज़े पर कान लगाकर उसने सारी बात सुन ली।

पावेल अलेक्जेंड्रोविच फौरन ज़ेना की तरफ मुड़ा। वह बेहद उत्तेजित था। उसकी आवाज़ कांप रही थी, उसने भीरु याचना के स्वर में पूछा, 'ज़िनेदा अफनास्येवना, तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो ?"

मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ने मदाम ज्यावलोवा से कहा, 'मुझे इस बात से क्या मतलब ? जैसे मैं परवाह करती हूं कि तुम्हारी अन्ना निकोलाईव्ना क्या सोचती है ! मैं तो किसीको उसके रसोईघर में नहीं भेजूंगी। और मुझे सचमुच हैरानी है कि तुम मुझे बेचारी अन्ना निकोलाईव्ना का दुश्मन समझती हो। तुम ही नहीं, सारा शहर यही सोचता है। मैं तुमसे अपील करती हूं पावेल अलेक्ज़ेंड्रोविच, तुम हम दोनों को जानते हो—भला मैं उसकी दुश्मन क्यों होने लगी ? प्रधानता पाने के लिए ? क्यों, लेकिन मुझे प्रधानता नहीं चाहिए, अगर वह पहली जगह लेना चाहती है तो ले ले ! सबसे पहले मैं ही जाकर उसकी प्रधानता पर उसे बधाई दूंगी। इसके अलावा यह सरासर बेइन्साफी है। मैं हमेशा उसका पक्ष लेती हूं, यह मेरा फर्ज है। लोग उसे बदनाम करते हैं। तुम सब किसलिए उसकी बुराई करते हो ? वह जवान है और उसे पहनने-ओढ़ने का शौक है, क्या इसलिए ? मेरी राय में और बुरे काम करने से तो पहनने-ओढ़ने का शौक बेहतर है; मिसाल के लिए नतालिया दमित्रीव्ना जिन चीज़ों की शौकीन है उन्हें ज़बान पर नहीं लाया जा सकता। अन्ना निकोलाईव्ना क्षण-भर घर नहीं बैठ सकती, हर वक्त बाहर रहती है, क्या इसलिए आप लोग उसकी बुराई करते हैं ? हे ईश्वर ! वह पढ़ी-लिखी नहीं है, इसलिए वह किताब लेकर नहीं बैठ सकती और दो मिनट तक किसी और काम में मन नहीं लगा सकती। वह खिड़की में से हर रास्ता गुज़रने वाले के साथ ठिठोली करती है, आंखें मटकाती है। फिर लोग क्यों कहते हैं कि वह सुन्दर है, जबकि सफेद चमड़ी के सिवा उसके पास कुछ नहीं है ? जब वह डान्स करती है तो बड़ी हास्यास्पद मालूम होती है—इतना तो मैं भी मानती हूं। फिर लोग उसे क्या कहते हैं कि पोल्का डान्स बहुत शानदार करती है। वह कितनी अजब है—टोपियां और हैट पहनती है—लेकिन अगर ईश्वर ने उसे अच्छी रुचि नहीं दी और उसे इतना सीधा बनाया है तो इसमें उसका क्या कसूर है ? उससे कोई

आवाज़ में कहा, 'क्या तुम मुझे प्रोत्साहन दे रही हो? क्या तुम्हारे शब्दों में मैं उम्मीद का एक भी कण निशान समझता हूँ, जिनैदा अफ़नास्येव्ना ?'

'मैंने तुम्हें जो बताया है उसे याद रखो और उसमें से जो चाहे नतीजा निकाल लो, यह तुम्हारा काम है। मैंने जो कहा है उससे ज़्यादा एक भी शब्द नहीं कहूँगी। मैंने अभी तुम्हें इन्कार नहीं किया, मैं तो सिर्फ कहती हूँ कि इन्तज़ार करो। लेकिन मैं फिर कहूँगी कि चाहने पर तुम्हें इन्कार करने का मेरा अधिकार ज्यों का त्यों है। मैं एक बात और कहूँगी, पावेल अलेक्जेंड्रोविच कि तुम्हें जवाब देने के लिए जो मियाद दी गई थी, अगर तुम यह सोचकर मियाद से पहले आ गए हो कि तुम किसी टेढ़े ढंग से बाहर के किसी आदमी की मदद पाकर (मिसाल के लिए ममी की मदद पाकर) अपनी मनमानी कर सकते हो तो तुम्हारा ख्याल गलत है। तब तो मैं साफ-साफ तुम्हें इन्कार कर दूँगी—सुना ? बस बहुत हो चुका, अब वक्त से पहले मेहरबानी करके मुझसे एक भी शब्द न कहना।'

यह भाषण कठोर और रूखे स्वर में बिना किसी हिचकिचाहट के दिया गया, जैसे पहले से सब कुछ कंठस्थ कर रखा हो। पॉल महाशय को लगा जैसे उन्हें अच्छी तरह लताड़ा गया हो। इसी वक्त मार्या अलेक्जेंड्रोव्ना लौट आईं और उनके पीछे-पीछे मदाम ज्याबलोवा भी आ गईं।

'मेरा ख्याल है, काउन्ट आने ही वाले हैं, ज़ेना ! नस्तास्या पेत्रोव्ना ! फौरन ताज़ी चाय तैयार करो !'

मार्या अलेक्जेंड्रोव्ना एकदम घबराई हुई थीं।

'अन्ना निकोलाईव्ना ने अन्युश्का को हमारे रसोईघर में सारे समाचार जानने के लिए भेजा है। ओह, अब वे गुस्से से कितना जलेंगी !' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने जल्दी से समावार के पास जाते हुए कहा।

मारया अलैक्सैंद्रोव्ना ने मदाम ज्यावलोवा से कहा, 'मुझे इस बात से क्या मतलब ? जैसे मैं परवाह करती हूं कि तुम्हारी अन्ना निकोलाईव्ना क्या सोचती है ! मैं तो किसीको उसके रसोईघर में नहीं भेजूंगी। और मुझे सचमुच हैरानी है कि तुम मुझे बेचारी अन्ना निकोलाईव्ना का दुश्मन समझती हो। तुम ही नहीं, सारा शहर यही सोचता है। मैं तुमसे अपील करती हूं पावेल अलैक्सैंद्रोविच, तुम हम दोनों को जानते हो—भला मैं उसकी दुश्मन क्यों होने लगी ? प्रधानता पाने के लिए ? क्यों, लेकिन मुझे प्रधानता नहीं चाहिए, अगर वह पहली जगह लेना चाहती है तो ले ले ! सबसे पहले मैं ही जाकर उसकी प्रधानता पर उसे बधाई दूंगी। इसके अलावा यह सरासर बेइन्साफी है। मैं हमेशा उसका पक्ष लेती हूं, यह मेरा फर्ज है। लोग उसे बदनाम करते हैं। तुम सब किसलिए उसकी बुराई करते हो ? वह जवान है और उसे पहनने-ओढ़ने का शौक है, क्या इसलिए ? मेरी राय में और बुरे काम करने से तो पहनने-ओढ़ने का शौक बेहतर है, मिसाल के लिए नतालिया दमित्रीव्ना जिन चीजों की शौकीन है उन्हें जबान पर नहीं लाया जा सकता। अन्ना निकोलाईव्ना क्षण-भर घर नहीं बैठ सकती, हर वक्त बाहर रहती है, क्या इसलिए आप लोग उसकी बुराई करते हैं ? हे ईश्वर ! वह पढ़ी-लिखी नहीं है, इसलिए वह किताब लेकर नहीं बैठ सकती और दो मिनट तक किसी और काम में मन नहीं लगा सकती। वह खिड़की में से हर रास्ता गुजरने वाले के साथ ठिठोली करती है, आंखें मटकाती है। फिर लोग क्यों कहते हैं कि वह सुन्दर है, जबकि सफेद चमड़ी के सिवा उसके पास कुछ नहीं है ? जब वह डान्स करती है तो बड़ी हास्यास्पद मालूम होती है—इतना तो मैं भी मानती हूं। फिर लोग उसे क्यों कहते हैं कि पोल्का डान्स बहुत शानदार करती है। वह कितनी अजब है—टोपियां और हैट पहनती है—लेकिन अगर ईश्वर ने उसे अच्छी रुचि नहीं दी और उसे इतना सीधा बनाया है तो इसमें उसका क्या कसूर है ? उससे को

ऊपर लिपटा हुआ ...

अगर जाकर कहे कि मिठाई के ऊपर लिपटा हुआ ... कागज टांक लेगी। मैं बड़ा अच्छा लगेगा तो वह फौरन वालों म वैसा ही कागज टांक लेगी। वह बकवासिन है—लेकिन यह तो यहां की आम आदत है। इस शहर में कौन बकवास नहीं करता ? वह मूछों वाला सुसीलोव मूर्ख, दोपहर और रात को उससे मिलने जाता है। हे मेरे ईश्वर ! अगर उसका पति रात-भर ताश खेलता रहे तो वह बेचारी आखिर क्या करे ? लेकिन शहर में आपको ऐसे न जाने कितने बुरे लोग मिलेंगे। अब क्या पता कि यह सब झूठी बदनामी ही हो, खैर मैं तो हमेशा उसीकी तरफदारी करूंगी। हे ईश्वर ! काउन्ट आ गए ? वही हैं, वही हैं ! मैं उन्हें हजारों की भीड़ में पहचान सकती हूं। आखिर आपसे मुलाकात हो ही गई मेरे प्रिन्स ! मारया अलेक्जैन्ड्रोव्ना काउन्ट से मिलने के लिए भागी।

अलेक्जेन्द्रोव्ना ने मेहमान का हाथ पकड़कर एक कुर्सी पर बैठाते हुए कहा। 'तशरीफ रखिए काउन्ट, तशरीफ रखिए। हमारी पिछली मुलाकात को पूरे छह बरस बीत गए हैं, और इस बीच आपका एक भी खत नहीं आया। एक शब्द भी नहीं। ओह! आपने मेरे साथ कितना बुरा सलूक किया है! काउन्ट, मैं आपसे सख्त नाराज थी, मेरे प्यारे प्रिन्स! लेकिन चाय—चाय, जल्दी करो नस्तास्या पेत्रोव्ना—चाय लाओ।'

'शुक्रिया—शुक्रिया……माफ कीजिए……' काउन्ट ने तुतलाते हुए कहा। (हम यह बताना भूल गए कि काउन्ट तुतलाते भी थे लेकिन उनकी तुतलाहट बड़ी फैशनेबल मालूम देती थी।) 'मुझे अफसोस है—जरा सोचिए, पिछले साल मैंने यहां आने का पक्का इरादा किया था।' फिर अपने शीशे में से कमरे का निरीक्षण करते हुए काउन्ट बोले, 'लेकिन लोगों ने मुझे यह कहकर डरा दिया कि यहां हैजा फैला हुआ है।'

'नहीं काउन्ट, यहां हैजा तो नहीं फैला था,' मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना बोलीं।

मोजग्ल्याकोव ने अपना महत्त्व जतलाने की खातिर कहा, 'चचाजान, यहां के जानवरों में बीमारी फैली थी।' मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना ने सख्ती से उसकी तरफ देखा।

'हां, शायद जानवरों की ही या ऐसी ही कोई बीमारी रही होगी। इसलिए मैं घर में ही रहा। कहो मेरी प्यारी अन्ना निकोलाईव्ना, तुम्हारे पति मजे में हैं न? क्या अभी वकालत करते हैं?'

'नहीं काउन्ट, मेरे पति डिस्ट्रिक्ट अटर्नी नहीं हैं।' मारया अलेक्जे-न्द्रोव्ना कुछ हकलाकर बोलीं।

'मैं शर्त बद कर कहता हूं कि चचाजान का दिमाग गड़बड़ा गया है और वे आपको अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा समझ रहे हैं,' मूर्ख मोजग्ल्याकोव चिल्लाया, लेकिन मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना का चेहरा उतरा

देखकर उसने अपने ऊपर काबू पा लिया।

'अरे हां, अन्ना निकोलाईव्ना और, और······ (मैं भूल गया हूं)

अरे हां एग्लीशोवा।' काउन्ट ने कहा।

'नहीं काउन्ट, आपको गलतफहमी हुई है,' मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्न

ने खीजभरी मुस्कान के साथ कहा, 'मैं अन्ना निकोलाईव्ना नहीं हूं।

यह कहे बगैर नहीं रह सकती कि मुझे विश्वास नहीं होता कि आप

मुझे पहचाना तक नहीं। ताज्जुब है काउन्ट ! मैं आपकी पुरानी मि

मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना मास्कालीवा हूं, आपको मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्न

की याद नहीं है, काउन्ट।'

'मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना ! ज़रा सोचो तो सही ! और मेरा ख्या

है कि तुम (अरे उसका क्या नाम है)—हां, अन्ना वासीलीव्ना हो

कैसी मज़ेदार बात है ! तो मैं गलत जगह पर आ गया हूं। मेरा ख्या

था कि तुम मुझे सीधा मेरी मित्र अन्ना मातवीव्ना के घर ले आ

हो। वाह खूब, सुन्दर ! लेकिन मेरे साथ ऐसी बातें अक्सर होती हैं !

हमेशा गलत जगह चला जाता हूं, मैं बुरा नहीं मानता, चाहे जो कुछ

हमेशा खुश रहता हूं। तो तुम नस्तास्या वैसीलीव्ना नहीं हो। कै

दिलचस्प बात है !'

'मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना, काउन्ट, मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना ! अ

आपने मेरे साथ कैसा बुरा सलूक किया है ! अपनी सबसे अच्छी मि

को भी भूल गए !'

'अरे हां, मेरी सबसे अच्छी मित्र···'क्या कहा ! क्या कहा ?' का

ने तुतलाकर कहा। उनकी नज़रें ज़ेना पर गड़ी थीं।

'और यह है मेरी बेटी ज़ेना। आप इससे अभी तक वाकिफ

हैं। जब आप सन्—में ... थी, या

काउ

ने अपने शीशे में से ज़ेना की तरफ उत्सुकता से देखते हुए कहा। 'गज़ब की ख़ूबसूरती है !' काउन्ट फुसफुसाए। साफ़ ज़ाहिर था कि ज़ेना की ख़ूबसूरती ने काउन्ट को कत्ल कर डाला था।

'चाय पीएंगे, काउन्ट !' मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ने काउन्ट का ध्यान एक बच्चे की तरफ खींचा जो हाथ में ट्रे लेकर खड़ा था। काउन्ट ने चाय का प्याला उठाकर बच्चे की तरफ देखा, जिसके गाल मोटे और गुलाबी रंग के थे।

'आह, और यह तुम्हारा बेटा है ? कैसा प्यारा नन्हा-सा बच्चा है। मेरा ख्याल है कि यह बहुत तमीज़दार लड़का है।'

मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ने जल्दी से काउन्ट को टोककर कहा, 'लेकिन काउन्ट, मैंने आपकी भयकर दुर्घटना की खबर सुनी थी। सच, डर के मारे मेरा बुरा हाल हुआ⋯कहीं आपको चोट तो नहीं लगी ? आपको इस तरह की बातों के प्रति लापरवाही नहीं दिखानी चाहिए।'

'उसीने मुझे बाहर फेंका था। कोचवान ने मुझे फेंका था।' काउन्ट ने असाधारण उत्तेजना दिखाते हुए कहा। 'मुझे लगा जैसे दुनिया खत्म होने वाली है या इसी तरह की कोई चीज़ होने वाली है, और मैं मानता हू कि मुझे डर लग रहा था⋯ईश्वर मुझे बचाए, डर के मारे मेरा बुरा हाल हो गया था। मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी, बिल्कुल नहीं ! और सारा कसूर मेरे कोचवान फ्योकिल का था। मैं पूरी तरह तुमपर भरोसा करता हू, मेरे दोस्त—इस मामले की तहकीकात करो और इस सिलसिले में जो चाहो करो, मुझे पूरा यकीन है कि उसने मुझे खत्म करने की कोशिश की थी।'

'अच्छी बात है चचाजान, मैं जो भी कर सकूगा, ज़रूर करूगा। लेकिन देखिए चचाजान ! इस बार उस बेचारे को क्यों न माफी दी जाए ? आपकी क्या राय है ?' पावेल अलेक्ज़ेंड्रोविच बोला।

'हरगिज़ नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि उसने मेरी हत्या करने की

कोशिश की थी। वह और तेरेन्ती, जिसे मैं घर छोड़ आया
ज़रा सोचो—उसके दिमाग़ में भी नए विचार समा गये हैं, जान
उसमें एक तरह की निहिलिज़्म' समाई है। या यूं कहा जाए कि
मानों में कम्युनिस्ट है। अब उससे मिलने में मुझे बहुत डर लगत
'यह एकदम सच है काउन्ट !' मारया अर्लेवइन्द्रोव्ना बोल
कल्पना नहीं कर सकते कि मुझे इन निकम्मे लोगों की वजह से
तकलीफ़ उठानी पड़ती है। ज़रा सोचिए—मुझे इन्हीं दिनों
नौकरों को नौकरी से बर्खास्त करना पड़ा है, और मुझे कहना
कि नये नौकर इतने बेवकूफ़ हैं कि दिन-रात मुझे सताते रहते
कल्पना नहीं कर सकते काउन्ट, ये लोग इतने बेवकूफ़ हैं !'
'ज़रूर ! ज़रूर ! लेकिन मैं कहूंगा कि मुझे बेवकूफ़ नौकर
है,' काउन्ट ने कहा, जो सब लोग बूढ़े लोगों की तरह इस बात से
लोग उनकी अनर्गल बातों को आज्ञाकारी भाव से ध्यानपूर्वक
हैं 'कम से कम एक अर्दली को तो ईमानदार और बेवकूफ़
शोभा देता है, लेकिन सिर्फ़ कुछ ही लोग। इससे उनके चेहरों
गंभीर भाव छा जाता है और वे देखने में अच्छे लगते हैं। यू
कि वे ज़्यादा शिष्ट दिखाई देते हैं, और मैं एक अर्दली से सब
शिष्टता की ही अपेक्षा रखता हूं। मेरे पास तेरेन्ती नाम का ए
है। तुम्हें तेरेन्ती की याद है न दोस्त ?—ज्योंही मेरी नज़रें उस
मैंने उसकी किस्मत की भविष्यवाणी कर दी पहली बार ही—
के पोर्टर बनोगे !'''गज़ब का बेवकूफ़ आदमी था ! चेहरे पर
भाव ! लेकिन कितना गंभीर और दर्शनीय ! उसके गले के टेंटु
गुलाबी था, उसमें कितनी ताज़गी थी। और उसके गले में सफ़े
टाई बांध दीजिए, उसे वर्दी पहनाकर खड़ा कीजिए तो बड़ा

उनकी तरह लगातार टकटकी लगाकर देखता रहता हूं। ऐसा मालूम होता है कि वह किसी दार्शनिक विचार में डूबा है, पूरा 'कांट'[1] दिखाई देता है—या यह कि मोटा ताजा सुअर मालूम होता है। जोकर के लिए यह एकदम जरूरी है।'

मारया अलेक्सान्द्रोव्ना मारे खुशी के तालियां बजाए बगैर न रह सकी। पावेल अलेक्सान्द्रोविच ने भी खुले दिल से हंसी में योग दिया। चचा की बातों से उसे गुदगुदी हो रही थी। नतास्या पेत्रोव्ना को भी हंसी आ रही थी, यहां तक कि ज़ेना भी मुस्करा रही थी।

'आपमें कितना मजाक और उल्लास है, आप कितनी चटपटी बातें करते हैं, काउन्ट !' मारया अलेक्सान्द्रोव्ना बोली, 'सूक्ष्म से सूक्ष्म और व्यंग्यभरी प्रवृत्तियों को भांपने की आपमें अद्भुत प्रतिभा है। इसके बावजूद आप पूरे पांच बरस तक सोसाइटी छोड़कर चले गए। आप जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति ! आपको तो लेखक होना चाहिए काउन्ट ! आप फोनविजीन, ग्रिबोयदोव, गोगोल बन सकते थे...'

'क्यों नहीं, क्यों नहीं', संसार के सबसे अधिक आत्मविश्वासी काउन्ट ने कहा। 'मेरा ख्याल है कि मैं लेखक बन सकता था। पुराने वक्तों में मैं बेहद दिलचस्प बातें किया करता था। यहां तक कि एक कॉमिडी के लिए मैंने कुछ दृश्य भी लिखे थे, उसमें कुछ शेर तो सचमुच तारीफ के काबिल थे, लेकिन, कॉमिडी कभी खेली नहीं गई वह।'

'काश ! मैं आपकी रचनाओं को पढ़ सकती ? ऐसी ही चीज की तो हमें जरूरत है, है न ज़ेना ? हम लोग देश के कामों के वास्ते चंदा इकट्ठा करने के लिए नाटक करना चाहते हैं, जख्मियों की मदद के लिए काउन्ट ...अगर हमें आपकी यह कॉमिडी मिल जाती...!'

'क्यों नहीं—मैं इसे दुबारा भी लिख सकता हूं लेकिन मुझे सब कुछ भूल गया है, सिर्फ मुझे उसके दो या तीन श्लेष याद हैं...(यह कहकर

१. प्रसिद्ध जर्मन फिलासफर

मैं बेचैनी से तड़प रही हूं।'

'क्या करता हूं? कुछ मिलाकर मैं बहुत व्यस्त रहता हूं। कभी मैं आराम करता हूं, और कभी सैर करने के लिए जाता हूं और हर दिन मैं कल्पनाएं किया करता हूं।'

'आपकी कल्पनाशक्ति बड़ी तेज होगी मेहरबान!'

'बड़ी तेज है मेरे अज़ीज़! कई बार तो अपनी कल्पनाओं पर मुझे खुद ताज्जुब होता है। जब मैं कंडुयेव में था···अच्छा, क्या तुम कभी कंडुयेव के उप-गवर्नर नहीं थे?'

'मैं? मेहरबान! ईश्वर के लिए मुझपर रहम कीजिए!' पॉवेल अलेक्जेंड्रोविच बोला।

'जरा सोचो तो, मेरे दोस्त! मैं तुम्हें अभी तक उप-गवर्नर ही समझता आ रहा था और मुझे ताज्जुब हो रहा था कि उप-गवर्नर इतना बदल कैसे गए? जानते हो, उनका चेहरा बेहद शालीन और प्रतिभाशाली था, वे बड़े काबिल आदमी थे, हर मौके पर कविता लिखा करते थे, वे कुछ-कुछ···उनके चेहरे का खाका ईंट के बादशाह से मिलता-जुलता था···'

'काउन्ट! काउन्ट!' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना बीच में टोककर बोलीं, 'मैं साफ कहती हूं कि आप अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। आपने पांच साल तक अपने-आपको एकान्त में बन्द रखा, न किसीसे मिले-जुले, न किसीकी बात सुनी। आप बर्बाद हो गए हैं काउण्ट! आप अपने मुरीदों से पूछकर देखिए, वे यही कहेंगे कि आपने अपने-आपको बर्बाद कर लिया है।'

'क्या सचमुच?' काउन्ट बोले।

'मैं आपको यकीन दिलाती हूं। मैं आपसे आपकी एक मित्र और बहन की हैसियत से बात कर रही हूं। मैं आपको इसलिए बता रही हूं क्योंकि आप मुझे अच्छे लगते हैं और इसलिए भी क्योंकि अतीत की स्मृतियां मेरे लिए पवित्र हैं। छल-कपट से मुझे भला क्या फायदा हो

से ढ़क रखे हुए थे, दीवारों पर कपड़े लटके थे और धुले हुए कपड़ों की गठरियां रखी थीं। वह पंजों के बल बन्द दरवाजे के पास चली गई और सांस रोककर छेद में से झांकने लगी और कान लगाकर बातें सुनने लगी। यह दरवाजा और दो दरवाजों की तरह उस कमरे में खुलता था जिसमें ज़ेना और उसकी मां बैठी थीं—इस दरवाजे में हमेशा ताला लगा रहता था।

मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना पेत्रोव्ना को एक मक्कार लेकिन वरदिमाग औरत समझती थी। नस्तास्या पेत्रोव्ना छिपकर उनकी बातें सुन सकती है, यह ख्याल कई बार उनके दिमाग में आया तो था लेकिन इस वक्त वे इतनी उत्तेजित थी और अपने ख्यालों में इतनी खोई हुई थीं कि वे सावधानी बरतना भूल गईं। वे आरामकुर्सी पर बैठी अर्थपूर्ण दृष्टि से ज़ेना की तरफ देख रही थी। ज़ेना ने इस दृष्टि को महसूस किया और फौरन आशंकित हो गई।

'ज़ेना ?'

ज़ेना ने अपना पीला चेहरा उधर घुमाया और अपनी काली संजीदा आंखें ऊपर उठाईं।

'मैं तुमसे एक बहुत ज्यादा जरूरी बात करना चाहती हूं ज़ेना !'

ज़ेना अपनी मां के बिलकुल सामने आ गई। बांहें बांधकर वह इन्तजार करने लगी। उसके चेहरे पर खीझ और नफरत थी जिसे वह छिपाने की कोशिश कर रही थी।

'मैं तुमसे पूछना चाहती हू ज़ेना, आज उस मोज़ग्ल्याकोव के बारे में तुमने क्या सोचा ?"

'उसके बारे में मेरी राय तो तुम्हें बहुत दिनों से मालूम है,' ज़ेना ने हिचकिचाहट के साथ जवाब दिया।

'हां मेरी बच्ची, लेकिन मालूम होता है कि पिछले कुछ दिनों से उसका आग्रह कुछ ज्यादा बढ़ गया है और वह तुम्हारे पीछे पड़ा रहता

कसम खाकर कहती हूं कि मेरे मन में उसके लिए ममता स्नेह कभी नहीं था। कल्पर सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ही मुझे बेचारगी भेजी है, अब ईश्वर इस समय हमारी मदद करे—कितना अच्छा हो अगर तुमने कोई वचन न दिया हो। तुमने आज उसे कोई पक्की बात तो नहीं कही जेना ?'

'इस प्रकार की क्या जरूरत है अब दो शब्दों में तुम सारी बात कह सकती हो ?' जेना ने चिढ़कर कहा।

'प्रसाद जेना ? अपनी मां के लिए तुम ऐसा शब्द इस्तेमाल कर सकती हो ? लेकिन मैं क्या कहने जा रही थी ? तुमने तो बहुत दिनों से अपनी मां की बातों पर विश्वास करना छोड़ दिया है। तुम मुझे अपनी मां की बजाय अपना दुश्मन समझती हो।'

'उससे क्या हुआ मां ! क्या अब हम दोनों सड़कों पर झगड़ेंगी ? जैसे हम एक-दूसरे को नहीं समझतीं ! मेरा ख्याल है कि समझने का वक्त अब आया है।'

'तुम मेरी बेइज्ज़ती करती हो बच्ची, तुम्हें विश्वास नहीं कि तुम्हारी जिन्दगी बसाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं।'

जेना ने नफरत और गुस्से से भरी निगाह मां पर डाली।

'मेरा ख्याल है कि मेरी जिन्दगी बसाने के लिए तुम काउन्ट से मेरी शादी करना चाहती हो, क्यों ?' जेना ने एक अजब मुस्कराहट के साथ कहा।

'मैंने इस बारे में तुमसे एक भी लफ्ज़ नहीं कहा, लेकिन चूंकि तुमने यह ज़िक्र शुरू किया है, तो अगर तुम काउन्ट से शादी कर भी लो तो यह तुम्हारा पागलपन नहीं होगा, बल्कि तुम्हें सुख ही मिलेगा।'

'और मैं इसे एकदम बेहूदी बात समझती हूं !' जेना ने आवेश से कहा, 'वाहियात—मैं कहती हूं ! और मां, मैं यह भी समझती हूं कि तुममें ज़रूरत से ज़्यादा कविता की प्रेरणा है, तुम पूरी कवयित्री हो।'

'मैं तुमसे सिर्फ यही पूछती हूं कि तुम्हें इसमें कौन-सी बेहूदगी न
आती है।'

जेना ने बेरुखी से अपना पैर फर्श पर पटकते हुए कहा, 'ईश्वर
लिए !...मैंने कौन-सा पाप किया है, जो मेरी किस्मत में ऐसा लि
है ? चूंकि तुम खुद कुछ नहीं समझतीं, इसलिए मैं तुम्हें समझाऊं
बाकी बेहूदगियों को छोड़ दो—बूढ़े के दिमाग की कमजोरी का फाय
उठाकर उससे शादी करना, एक मजाहिद से, उसका पैसा हथियाने के
लिए—और फिर रोज, हर दम उसकी मौत की इच्छा करना, मैं
ख्याल में बेहूदगी ही नहीं, बल्कि कमीनापन है, इतना कमीनापन है कि
ऐसे कामों के लिए मैं हरगिज तुम्हें बधाई नहीं दे सकती मां।'

एक मिनट के लिए खामोशी छाई रही।

सहसा मारया अलैक्जैंड्रोवना ने पूछा, 'जेना ! क्या तुम भूल गई हो,
दो बरस पहले क्या हुआ था ?'

जेना चौंक पड़ी।

'मां ! तुमने वचन दिया था कि इस बात को याद कभी नहीं
दिलाओगी।' जेना ने सख्ती से कहा।

'और अब मेरी बच्ची, मैं मिन्नत करती हूं कि जो वचन मैंने आज
तक नहीं तोड़ा, उसे सिर्फ एक बार तोड़ने की इजाजत दी जाए, जेना !
वक्त आ गया है कि हम दोनों बैठकर साफ-साफ बातें करें। दो साल की
खामोशी बड़ी भयंकर रही है, अब इस तरह गुजारा नहीं चल सकता।
मैं घुटने टेककर तुमसे बात करने की इजाजत मांगने के लिए तैयार हूं।
ओह जेना, तुम्हारी मां घुटनों के बल तुम्हारे आगे विनती कर रही है।
और मैं तुम्हें वचन देती हूं, एक दुःखी, प्रेममयी मां वचन देती है कि
भविष्य में कभी, चाहे कैसी परिस्थितियां हों, अपनी जान बचाने के लिए
भी मैं इस प्रसंग में एक शब्द नहीं बोलूंगी। यह आखिरी बार है और
इस वक्त इसकी चर्चा करना एकदम जरूरी है।'

"मैं अपनी बात जारी रखती हूं, वेरा। छोटे शहर के स्कूल के टीचर का, जो अभी लड़का ही था, तुम्हारे प्रति प्यार—मैं इतनी बात को तो कभी नहीं समझ सकी। मुझे तुम्हारी अक्ल, तुम्हारी पर्स-नल पर भरोसा है और सबके ऊपर तुम्हारी भावुकता। इस टीचर की बात क्या थी? जो देखा तुम ही किसी किस्म का शक करने को तैयार नहीं थीं। लेकिन अचानक तुमने आकर मुझसे कहा कि तुम उसी से शादी करना चाहती हो। आह, वेरा, मेरे कलेजे में जैसे किसी ने छुरा भोंक दिया। मैं चीखी, चिल्लाई और बेहोश हो गई। लेकिन तुम्हें सब बातें याद हैं। यह स्वाभाविक ही था कि मैं तुम्हारे ऊपर अपने अधिकार इस्तेमाल करना ठीक समझा, जिस अधिकार को तुमने स्वी-कार किया था। जरा सोचो तो सही—एक लड़का, जिसका बाप क्लर्क है, जिसे महीने में बारह रूबल तनख्वाह मिलती है, रोबर्ट कार्टर ने जिसपर गजब करके एक कागजी-सी बड़ी कविता पढ़ ली है, जिसे उस कम्बख्त डिफथीरिया की बातें करने के सिवा कुछ नहीं आता, क्या ऐसा लड़का तुम्हारा पति बन सकता था? किरोवा मारकामोवा का पति? यह सब फ्लोरिजन और उसके साथियों के लिए तो सब ठीक है, माफ करना जेना, लेकिन इस घटना की याद आते ही मुझे गुस्सा आ जाता है। मैंने उस लड़के को नापसन्द कर दिया, लेकिन दुनिया की कोई ताकत तुम्हें नहीं रोक सकी। तुम्हारे सिर पर गिर्द मुर्गों की तरह आंख मटकाते रहे, उनकी समझ में यह तक नहीं आया कि मैं उन्हें क्या कह रही हूं। तुमने उस लड़के के साथ अपना ताल्लुक जारी रखा, यहां तक कि तुम उससे मिलती भी रहीं और सबसे बुरी बात तो यह है कि तुमने उसके साथ पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया। शहर में अफवाह फैलनी शुरू हो गई। लोग बड़े अपमानपूर्ण इशारों से मुझे यह बात जतलाने लगे—खुले आम इसकी चर्चा होने लगी, और लोगों को खुशी भी हुई। अचानक मेरी भविष्यवाणी सच निकली; तुम दोनों का किसी बात पर झगड़ा हो

तुम [illegible] करके अपनी [illegible] रही हो [illegible] हो । तुम तो नहीं गई, इसको नहीं क्योंकि वह भी कहीं [illegible] देख रही [illegible] बाद [illegible] तुम [illegible] को [illegible] नहीं [illegible] । यह [illegible] अब [illegible] कर रहा है । दोनों का प्यार [illegible] है और तुम —तुम [illegible] देती हो—अब [illegible] नहीं बताती, क्योंकि तुम उसके दिल को [illegible] नहीं पहु[illegible] चाहती । क्योंकि [illegible] भी ऐसी होती है, इसलिए तुम्हें [illegible] उसके कभी [illegible], [illegible] का प्यार नहीं दिया । मुझे [illegible] है, अब तो पता चला कि [illegible] तुम्हें बहुत है तो [illegible] मासूमी को, लोगों का [illegible] के लिए बेटा और [illegible] ने [illegible] में [illegible] भी की । तुम उसके दिल को चोट नहीं पहुंचा[illegible] चाहती । मेरी बच्ची, मैंने तुम्हारे मन की बात बूझ ली है या नहीं ? ईश्वर जानता है, मैंने अपने दर्दिल को कैसे [illegible] आंसुओं से [illegible] है ।....'

'बस, इतना ही काफी है मां !' जेना ने बीच में टोककर तिक्त स्वर में कहा, 'तुम्हारे दर्दिल की किसे परवाह है ? क्या तुम मक्कारी और व्याख्यान के बगैर नहीं रह सकती ?' जेना ने नफरत से कहा।

'तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है जेना ! मेरी तरफ दुश्मन की तरह मत देखो मेरी बच्ची ! इन दो सालों में मेरी आंखें सूखी नहीं रही हैं, लेकिन मैंने अपने आंसुओं को तुमसे छिपाए रखा और मैं कसम खाकर कहती हूं कि इस बीच मैं खुद भी बहुत बदल गई हूं । तुम्हारी भावनाओं को तो मैं बहुत पहले से समझती थी, लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूं कि तुम्हें कितना दुख है, इसका एहसास मुझे अभी हुआ है । क्या इस प्यार को सिर्फ रोमांस समझने में मैंने कोई गलती की? यह सब उस कमबख्त शेक्सपियर की करतूत है जो हर जगह, जहां उसकी जरूरत न हो, अपनी टांग अड़ाया करता है । कौन मां मुझे चौकन्ना रहने के लिए, कदम

[illegible]। तुम्हें हमेशा के लिए एक वर्ष में [illegible]—
यह तुम्हारे लिए [illegible] जरूरी है? यहाँ किसी
की बात में तुम्हारा [illegible] नहीं किया जाता। यहाँ तुम्हारा कोई हिस्सा
नहीं। यहाँ तुम्हारी इतनी बदनामी हुई है और यहाँ की [illegible] कोई
तुम्हारी [illegible] से बनती है। तुम आदमी को वक्त के मौसम के लिए
[illegible]
[illegible] है। यहाँ की नहीं [illegible]
[illegible] है

'लेकिन बात करो यार, तुम तो इस तरह बात कर रही हो जैसे तुम मेरी शादी हो चुकी हो या कानून में सामने शादी का इकरार हो चुके हो।'

'तुम चिन्ता न करो मेरी प्यारी। मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ। लेकिन मुझे अपनी बात कहने दो। मैंने तुम्हारे आगे पहली दलील दी है, अब सुनो दूसरी दलील। मैं जानती हूँ मेरी बच्ची कि [illegible] से शादी करना तुम्हें कितना बुरा लगेगा।'

'यह बताने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं कि मैं उससे हरगिज शादी नहीं करूँगी। यह मैं खुद जानती हूँ।' बेला ने सांस में जवाब दिया, उसकी आंखों से चिनगारियां छूट रही थीं।

'काश, तुम जानती कि मुझे तुम्हारी नफरत का पता है! ईश्वर की वेदी के सामने ऐसे व्यक्ति से प्यार करने का वचन देना, जिससे कभी प्यार नहीं किया जा सकता, बड़ी भयंकर बात है! उस आदमी से शादी करना, जिसके लिए मन में कभी आदर की भावना न हो सके! और वह तुमसे तुम्हारे प्यार की मांग करता है, इसीलिए तुमसे शादी करना चाहता है। जिस तरह वह तुम्हारी तरफ देखता है, उससे मैं सब कुछ भांप सकती हूँ। शादी करके हर वक्त प्यार का अभिनय करना कितना भयंकर होता है! मुझे खुद पच्चीस बरसों में इस बात का तजुर्बा हो

के लिए मुझे दोष देती हो और बात भी अगर ऐसी ही होती तो शायद वे अभी भी तुम्हारे दिल में उस बूढ़े के लिए दया है और उसकी दया है कि उसके और भी कुछ रुपये नहीं बचा सकी (मेरा मतलब है कि तेरी ही बात है) तो बड़ा मौका, कानून से शादी करके तुम उसे जितना बर्बाद करोगी, उसे किसी खुशी होगी। अगर उसके पास भी अक्ल होती तो वह समझ जाता कि कानून से ऐसी बचाव करना और हास्यास्पद बात है। वह समझ जाता कि तुमने उसके बचाने के लिए, बहुत ही बड़ी शादी की है। और वह यह भी समझ जाता—मेरे कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि कानून के बाहर के बाद तुम भी किसी शादी कर सकती हो।'

'तुम्हें शब्दों में—कानून से शादी करके उसे खुश करूं और उसके मरने की इन्तजार की तरह जाति में जिसे प्यार करती हूं, उससे शादी कर सकूं। तुम्हारी नसीहत भी खूब है! तुम मुझे प्रलोभन देना चाहते हो, यह सुझाव देकर—मैं तुम्हारे इरादे समझ गई। हां, मैं तुम्हारी बात को समझती हूं। तुम प्रतिकूल स्थिति में भी अपनी भेंट का प्रदर्शन किए बगैर नहीं रह सकते। तुमने साफ-साफ, सीधे ढंग से क्यों नहीं कहा—देखो, देखो यह नीचता तो है, लेकिन है फायदे की चीज; तुम्हें इसके लिए राजी हो जाना चाहिए।—कम से कम उस बात में ज्यादा ईमानदारी होगी।'

'लेकिन उस दृष्टिकोण से इस मामले को क्यों देखा जाए मेरी बच्ची, धोखाधड़ी, मक्कारी और लालच के दृष्टिकोण से देखने की क्या जरूरत है? लेकिन मैं दुनिया की सारी पवित्रता की दुहाई देती हूं, इस प्रस्ताव में नीचता और धोखा आखिर है कहां? जरा शीशे में अपनी सूरत देखो—तुम इतनी खूबसूरत हो कि कोई अपनी सारी सल्तनत तुमपर कुर्बान कर सकता है! और अचानक तुम जैसी खूबसूरत लड़की भला अपने जीवन के बेहतरीन साल एक बूढ़े की खातिर कुर्बान कर देगी?

करो । ऐसे काम मजबूरी से ही किए जाते हैं । अस्पताल के मरीजों के जख्मः पर पट्टी बांधना हमें बुरा लगता है, दूर की बीमारियों के अस्पताल की हवा में सांस लेने में भी ग्लानि होती है । लेकिन ईसा के फरिश्ते यह काम करते हैं और इस काम के लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हैं । तुम्हारे घायल हृदय के लिए मरहम मिल गई, यह एक पवित्र कर्म है— या तुम्हारे जख्मों को भरने का रास्ता निकल आया ! इसमें शर्म और ओछापन कहां है ? तुम्हें मुझपर यकीन नहीं है ! तुम्हारा ख्याल है कि मैं फर्ज और नेकी की बातें करके तुम्हारे साथ कपट कर रही हूं ! तुम नहीं समझ सकती कि मुझ जैसी अहंकारी सोसाइटी-लेडी के पास भी दिल है, भावनाएं और सिद्धान्त हैं ! खैर, मैं तुम्हें यकीन करने के लिए नहीं कहूंगी ! मैं तुम्हें यह भी नहीं कहती कि तुम अपनी मां की बेइज्जती मत करो ! मैं तो सिर्फ यह चाहती हूं कि तुम यह स्वीकार करो कि तुम्हारी मां की बात फायदे की है और उसीमें तुम्हारी मुक्ति है । यह कल्पना करने की कोशिश करो कि मैं नहीं बल्कि कोई और बोल रहा है । अपनी आंखें बन्द करके एक ओर हट जाओ, कल्पना करो कि कोई अदृश्य शक्ति तुमसे बात कर रही है । तुम्हें सबसे ज्यादा ग्लानि इससे हो रही है कि यह सब पैसे की खातिर किया जा रहा है, और यह एक किस्म की खरीद-फरोख्त है । अच्छी बात है, अगर तुम्हें पैसे से इतनी नफरत है तो पैसे को ठुकरा देना । सिर्फ अपने गुजारे के लिए पैसा रखके बाकी गरीबों में बांट देना । मिसाल के लिए उस बदकिस्मत की मदद कर सकती हो जो मृत्यु-शय्या पर पड़ा है ।'

'वह किसीकी मदद नहीं लेगा ।' जेना ने धीमे स्वर में, जैसे अपने से ही बात करते हुए कहा ।

'वह नहीं लेगा, लेकिन उसकी मां तो लेगी,' मारया अलेक्सांद्रोव्ना ने विजेता के स्वर में कहा, 'वह छिपकर मदद लेगी ताकि उसे पता न चले । छह महीने पहले उसकी मदद करने के लिए तुमने अपने इयररिंग

पैदा नहीं किया है जो अपना सुई [illegible] है [illegible] [illegible]
[illegible] किसी [illegible] की जिन्दगी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जिन्दगी [illegible] लिए [illegible]
[illegible]
कर होगी। वह सुई ही सारी मेहनत का [illegible] हुआ था [illegible]
इस बारे में तुम्हारे अन्देशे और [illegible] के बारे पर बोलना [illegible]
खुशी होने के लिए [illegible] करने की कोशिश करोगी। अगर वह
हो गया, और तुमने उसके लिए न भी कोई कम भी कुछ उसे बना
लोगी ही ? उसकी जिन्दगी और आजादी। वह महफूज हो चुका है
और फिर तुम उसे दुबारी क्यों न करो ? शायद जिस्म कई
कुछ जिस्मानी, वह पहले से बेहतर हो जाए और अगर वह तुम्हारे दो
बन जाए तो तुम विधवा होने के बाद उससे शादी भी कर सकती हो
तुम पति और आजाद होओगी, उसे [illegible] के बाद तुम
सामाजिक प्रतिष्ठा भी दिला सकती हो, उसे कोई पेशा अपनाने में मद
द सकती हो। उस वक्त तुम्हारा उससे शादी करना ठीक होगा, लेकिन
इस वक्त यह नामुमकिन है। इस वक्त अगर तुम यह पागलपन कर
बैठी तो क्या नतीजा निकलेगा ? सिवा बदनाम, गरीबी, नन्हे बच्चों के
नाक उमेठने, (उस आदमी के पेशे में तो यह होगा ही) एकमात्र बैठकर
शेक्सपियर पढ़ने के सिवा मोहल्ले की जिन्दगी से बचे रहने में तुम्हें
क्या मिलेगा और अन्त में जल्द ही उसकी मौत हो जाएगी। लेकिन
अगर तुम उसकी जिन्दगी लौटा सकीं, तो यह जिन्दगी अच्छे कामों में
इस्तेमाल होगी। अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह तुम्हारी पूजा

करने लगेगा। उसे अपने बुरे काम पर सख्त अफसोस है जो उसके दिल को कचोट रहा है। उसे माफ करके और उसे नई जिन्दगी देकर तुम उसे नई उम्मीद दोगी, इससे उसे आत्मिक शान्ति मिलेगी। वह किसी सरकारी दफ्तर में काम कर सकेगा, उसे तरक्की और ऊंचा ओहदा मिलेगा।

'मान लो अगर वह तन्दुरुस्त न हो सका, तब भी कम से कम वह सुख से तो मरेगा, तुम्हारी गोद में उसे आत्मिक शान्ति मिलेगी—क्योंकि उस वक्त तुम उसके पास रहोगी—उसे यह विश्वास होगा कि तुम उसे प्यार करती हो और तुमने उसे माफ कर दिया है। मेंहदी की झाड़ियों और नींबुओं के पेड़ों तले, सुन्दर नीले आकाश तले ! ओह जेना, यह सारी बातें तुम्हारे बस में हैं ! सब परिस्थितियां तुम्हारे हक में हैं—और काउन्ट से शादी करके तुम ये सारी चीजें हासिल कर सकती हो।'

मारया अलैक्जेन्ड्रोवना ने अपनी बात खत्म कर दी। इसके बाद एक लम्बी खामोशी छा गई। जेना के हृदय में भयंकर आन्दोलन मच रहा था।

हम जेना की भावनाओं की यहां चर्चा नहीं करेंगे, क्योंकि हम उन भावनाओं का सही अनुमान नहीं लगा सकते। लेकिन जाहिर तो यही होता था कि मारया अलैक्जेन्ड्रोवना ने जेना के दिल का रास्ता पा लिया था। उस समय उन्हें अपनी बेटी के दिल की हालत का ठीक से पता नहीं था, और हर संभव रास्ते की कल्पना करने के बाद वे अब समझ गई थीं कि उन्होंने सही रास्ता पा लिया है। उन्होंने जेना के दिल के सबसे ज्यादा दुखते घावों को अपने खुरदरे हाथों से टटोला था और वे अपनी आदत के मुताबिक अपने उदात्त विचारों का प्रदर्शन किए बगैर नहीं रह सकी थीं। यह स्वाभाविक ही था कि जेना पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। मारया अलैक्जेन्ड्रोवना ने मन ही मन कहा, 'अगर

यह मुमकिन नहीं बनाती तो कोई हर्ज नहीं। मैं अगर उन्हें इस मामले पर फिर से सोचने के लिए राजी कर लूं तो यही बहुत है।' सबसे बड़ी बात यह है कि जिस बात को साफ़-साफ़ नहीं कहा जा सकता उसके बारे में सूक्ष्म संकेतों से काम लिया जाए। इस तरह से वे अपने उद्देश्य में सफल हो गईं। जो असर वे चाहती थीं, वह पैदा हो गया। जेना उत्सुक भाव से माँ की बातें सुन रही थी। उसके गाल जल रहे थे और वह ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रही थी।

'सुनो माँ !' जेना ने दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा। उसके गालों का पीलापन साफ़ बता रहा था कि उस निश्चय की उसे कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है, 'सुनो माँ !'

लेकिन इसी वक्त हाल में शोर सुनाई दिया। कोई कर्कश स्वर में मारया अलेक्सेंद्रोव्ना के बारे में पूछताछ कर रहा था। जेना ने फौरन अपने को रोक लिया। मारया अलेक्सेंद्रोव्ना अपनी जगह से उछलकर खड़ी हो गईं।

'हे मेरे ईश्वर! शैतान, उस बदवासी कर्नल की कम्बी बीवी को यहाँ ले आया है ! पन्द्रह दिन पहले मैंने उसे इस घर से करीब-करीब निकाल दिया था,' मारया अलेक्सेंद्रोव्ना परेशान हो गईं, 'लेकिन···लेकिन अब मुझे उसका स्वागत करना पड़ेगा। करना चाहिए ! वह शायद कोई खबर लेकर आई है, वरना यहाँ आने की उसकी हिम्मत न पड़ती। यह बड़ी ज़रूरी बात है जेना। मुझे जल्द मालूम होना चाहिए। मौजूदा हालत में मैं किसी हथकंडे से नफ़रत नहीं कर सकती।'

फिर वे आगंतुक स्त्री की तरफ़ बढ़ीं। 'तुम कितनी अच्छी हो जो मुझसे मिलने चली आईं। आखिर तुम्हें मेरा ख्याल कैसे आया, सोफ़िया पेत्रोव्ना ? तुम्हारे अचानक आने से मुझे कितनी खुशी हुई है !'

जेना कमरे से भाग गई।

६

कर्नल की बीवी सोफिया पेत्रोव्ना फारपुखोला सिर्फ नैतिक अर्थों में बदशामिन बच्ची थी। शारीरिक दृष्टि से वह एक चिड़िया से ज्यादा मिलती थी। वह पचास बरस की, नाटे कद की औरत थी। उसके सारे चेहरे पर पीले रंग के दाग थे, उसका छोटा, सूखा शरीर चिड़ियों की पतली लेकिन मजबूत टांगों पर टिका था। कर्नल की बीवी ने गहरे की रेशमी पोशाक पहन रखी थी, जो हर वक्त सरसराती रहती थी, क्योंकि कर्नल की बीवी क्षणभर के लिए भी निश्चल नहीं बैठती थी। बड़ी दुश्मनी साधने वाली और लोगों की बदनामी करते फिरने वाली औरत थी। उसका पति कर्नल है, इस बात को वह कभी नहीं भूलती थी। अक्सर उसका अपने रिटायर्ड कर्नल पति से झगड़ा होता और वह पति का मुंह भी नोच लेती थी। इसके अलावा वह वोद्का लबालब भरे चार गिलास सुबह पीती थी और करीब इतने ही शाम वक्त। उसे अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा से सख्त नफरत थी क्योंकि अन्ना निकोलाईव्ना ने पिछले हफ्ते उसे अपने घर से निकाल दिया था। उसे नतालिया दमित्रीव्ना पास्तुदीना से भी नफरत थी, जिसे उसने अपने घर से निकाल दिया था, क्योंकि नतालिया दमित्रीव्ना ने अन्ना निकोलाईव्ना का पक्ष लिया था।

कर्नल की बीवी चहकी, 'मैं सिर्फ एक मिनट के लिए यहां आई हूं, मार्द डियर। मुझे बिल्कुल बैठना नहीं चाहिए। मैं सिर्फ तुम्हें बताने के लिए आई हूं कि यहां कैसे चमत्कार हो रहे हैं! सारा शहर काउन्ट के पीछे पागल हो गया है! हमारे शहर के चालाक लोग—समझ रही हो न—काउन्ट को फांसने की कोशिश में उसके पीछे भाग रहे हैं, उसपर झपट्टा मार रहे हैं, उसे शैम्पेन पिलाई जा रही है, तुम्हें यकीन नहीं होगा! तुमने काउन्ट को अपने यहां से कैसे जाने दिया? जानती हो

इस वक्त वह नतालिया दमित्रीव्ना के यहां है ?'

'नतालिया दमित्रीव्ना के यहां ?' मारया अलैक्सेंद्रोव्ना उत्तेजना में कुर्सी से उछलकर खड़ी हो गई। 'वाह ! वे तो कह रहे थे कि गवर्नर के यहां जा रहे हैं वहां से शायद एक मिनट के लिए अन्ना निकोलाईव्ना के घर जाएंगे।'

'एक मिनट के लिए ? क्यों ? जरा जाकर उसे पकड़ने की कोशिश तो करो ! गवर्नर कहीं बाहर गए हुए थे, इसलिए काउन्ट अन्ना निकोलाईव्ना के यहां चले गए और वहां खाना खाने का वादा कर आए। उधर नतालिया जो उनसे चिपकी हुई है, उन्हें घसीटकर अपने यहां खाना खाने के लिए ले गई। देख लिया अपने काउन्ट को !'

'और मोज़ग्ल्याकोव ? उसने तो वादा किया था कि···'

'तुम और तुम्हारा मोज़ग्ल्याकोव ! तुम्हारा हीरा ! वाह, वही तो काउन्ट को वहां लेकर गया था। ख्याल रखना—अगर लोग काउन्ट को जुए की मेज पर ले गए तो वे फिर हार जाएंगे, जैसा पिछले साल हुआ था ! लोग काउन्ट को जरूर खेलने के लिए ले आएंगे और उन्हें नंगा करके छोड़ेंगे। और वह नतालिया ! लोगों में न जाने कैसी-कैसी बातें फैला रही है ! चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि तुमने काउन्ट को··· फांसने की कोशिश की है···क्योंकि तुम·· समझ गई न ? नतालिया ने यह बात खुद काउन्ट से कही। काउन्ट की समझ में एक भी शब्द नहीं आता, वह पानी में डूबे बिल्ली के बच्चे की तरह हर बात 'अरे हां, अरे हां' करते रहते हैं। उसे देखतीं तो पता चलता, जरा सोचो तो सही, वह अपनी सोन्का को काउन्ट के सामने ले आई ! पन्द्रह बरस की होकर भी ऊंची स्कर्ट पहनती है—बिल्कुल घुटनों से ऊपर ! फिर उसने उस यतीम छोकरी माश्का को भी बुलवा भेजा। उसने भी ऊंची स्कर्ट पहन रखी थी—घुटनों से ऊपर ! मैंने अपने शीशे में से देखा था···उन्होंने लाल रंग की टोपियां पहनी थीं, जिनपर पंख लगे थे—इसका मतलब

मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आया—फिर उसने काउन्ट के सामने प्यानो की धुन पर दोनों छोकरियों से एक फ्रेंच-नियन डास करवाया। तुम तो काउन्ट की कमजोरी से अच्छी तरह वाकिफ हो। उनका दिल विघल गया। वह लगातार कह रहे थे, 'कैसी सुडौल हैं !' 'कैसी सुडौल हैं !' उन्होंने अपने घोडे में से छोकरियों की तरफ देखा, और उन दोनों बच्चियों ने नाचते-नाचते अपना बुरा हाल कर लिया। उनके चेहरे लाल सुर्ख थे, वे जोर से टाँगें फेंक रही थीं। निरी उछल-कूद थी। छि ! इसको डास कहते हैं ? मैंने खुद मदाम जार्नो के बोर्डिंग स्कूल में इनाम बटने के जलसे में एक शॉल डान्स किया था। उसका बड़ा शानदार असर हुआ था। सैनेट के सदस्यों ने तालियां बजाई थीं। काउन्टों की बेटियां उस स्कूल में पढ़ती थीं। लेकिन यह लड़कियां कान-कान[1] से ज्यादा कुछ नहीं जानतीं। मैं तो सचमुच शर्म से पानी-पानी हो रही थी। मैं वहां मुश्किल से बैठ पाई।'

'लेकिन'''क्या तुम भी नतालिया दमित्रीवृना के यहां थीं ? मेरा ख्याल था'''

'क्योंकि उसने पिछले हफ्ते मेरी बेइज्जती की थी, इसलिए? मैं हरेक को साफ-साफ इस बारे में बता देती हूं। माई डियर, मैं तो सिर्फ काउन्ट को देखना चाहती थी, चाहे दरवाजे के छेद में से ही मुझे झांकना पड़ता। नहीं तो मैं काउन्ट को और कहां देख सकती थी ! मैं सिर्फ काउन्ट की वजह से ही वहां गई थी, वरना हरगिज न जाती। जरा सोचो तो सही, मेरे सिवा उसने सबको चॉकलेट दिया और सारे वक्त मुझसे एक शब्द भी नहीं बोली। उसने जान-बूझकर, मुझे जलाने के लिए ऐसा किया। मुटल्ली कहीं की ! मैं उसे मजा चखाऊंगी। अच्छा गुडबाई, मुझे जाने की जल्दी करनी चाहिए। अभी अकुलीना पानफीलोव्ना को पकड़कर

---

१. फ्रेंच नृत्य—फ्रेंच चित्रकार लात्रे ने पेरिस के वेश्यालयों में जाकर कॉ-कॉ नृत्य के चित्र बनाए थे।

भी यह बात बतानी है। लेकिन तुम काउन्ट को हाथ से गया समझो! वे अब यहां नहीं आएंगे। तुम जानती हो कि बे कितने मुनक्कड़ हैं, और अन्ना निकोलाईव्ना जरूर उन्हें अपने घर घसीटकर ले जाएगी। सबको डर है कि कहीं···तुम मेरा मतलब समझ गई हो; मेरा मतलब है कि ज़ेना···'

'कैसी भयकर बात है ?'

'मैं दावे से कहती हू। सारा शहर इसी बात की चर्चा कर रहा है। अन्ना निकोलाईव्ना ने फैसला किया है कि वह काउन्ट को खाने तक रोके रहेगी और फिर हमेशा के लिए उन्हे वहीं रखेगी। वह तुम्हें जलाने के लिए यह सब कर रही है। मैंने दीवार के छेद में से उसके आगन में झांककर देखा था—वहां खाने तैयार किए जा रहे थे, छुरियों की खनखनाहट हो रही थी—शैम्पेन मंगवाई जा रही थी। जल्दी करो, रास्ते मे ही काउन्ट को पकड़ लो। आखिर उन्होंने सबसे पहले तुम्हारे यहां खाना खाने का वादा किया था। वह तुम्हारे मेहमान हैं, उसके नहीं। देखना कहीं वह साजिश करने वाली गन्दी औरत तुम्हें मात न दे जाए। मैं उसे अपनी जूती के तले के बराबर भी नही समझती, उसका पति चाहे अटर्नी है ! मैं भी तो एक कर्नल की बीवी हू ! मदाम जर्नी के बोर्डिंग स्कूल मे मैंने तालीम पाई है—ओह, गुडबाई डियर, मेरी स्लेज खड़ी इन्तज़ार कर रही है, वरना मैं तुम्हारी स्लेज मे जाती···'

चलता-फिरता अखबार अदृश्य हो गया। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना का मारे उत्तेजना के बुरा हाल था। लेकिन कर्नल की बीवी की सलाह बड़ी ठीक और व्यावहारिक थी। वक्त बहुत थोड़ा था, देर नहीं करनी चाहिए। लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत अभी तक ज्यों की त्यों थी। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ज़ेना के कमरे मे भागी गई।

ज़ेना दोनों बाहें बांधे, सिर झुकाए कमरे मे चहलकदमी कर रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह उत्तेजित थी। उसकी

आंखों में आंसू छलछला आए थे, लेकिन जिस नज़र से उसने अपनी मां को देखा, उसमें दृढ़ निश्चय था। जल्दी से अपने आंसुओं को दबाकर, मां के कुछ कहने से पहले ही जेना व्यंग-भरी मुस्कान के साथ बोली :

'मां, अभी तुमने मुझे एक लम्बा-चौड़ा व्याख्यान दिया था, ज़रूरत से ज़्यादा लम्बा। लेकिन तुम मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकीं। मैं बच्ची नहीं हूं। कमीनेपन और स्वार्थसिद्धि के लिए संन्यासिनी बनने का, और ऊंचे उद्देश्यों का ढोंग रचना जेसुएटवाद होगा, मैं अपने-आपको इस धोखे में नहीं आने दूंगी···कभी नहीं···सुना ? मैं चाहती हूं कि तुम अच्छी तरह इस बात को समझ लो।'

'लेकिन मेरी प्यारी बच्ची !' मारया अलेक्सान्द्रोव्ना बोलीं। क्षणभर के लिए उनका साहस ठंडा पड़ गया था।

'चुप रहो मां ! धीरज से मेरी सारी बात सुनो ! यह अच्छी तरह जानते हुए कि यह सब धोखाधड़ी और नीचता है, तुम्हारा प्रस्ताव मुझे बिना शर्त के मंज़ूर है। बिना शर्त के, मैं कहती हूं, और मैं काउन्ट से शादी करने को तैयार हूं और तुम्हारी सारी कोशिशों का समर्थन करने के लिए तैयार हूं। मैं ऐसा क्यों कर रही हूं, यह जानना तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है। मैंने यह फ़ैसला किया है, यही जानना तुम्हारे लिए काफ़ी है। मैंने सब बातों का फ़ैसला कर लिया है—मैं काउन्ट के जूते उठाऊंगी, मैं उनकी नौकरानी की तरह रहूंगी, अपने कमीनेपन का हर्जाना भरने के लिए, मैं उनकी खुशी के लिए नाचूंगी। मैं उन्हें खुश करने के लिए हर तरीके का इस्तेमाल करूंगी, ताकि उन्हें मुझसे शादी करने का अफ़सोस न हो। लेकिन इस फ़ैसले के बदले में मैं चाहती हूं कि तुम मुझे साफ़-साफ़ बताओ—तुम इस मामले को कैसे तय करना चाहती हो। तुम्हारी ज़िद से मालूम होता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई न कोई निश्चित स्कीम ज़रूर है। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं—अगर तुम्हा

घबरा गई थी कि वे जो कुछ कर रही हैं वह [illegible] और ईश्वर की नहीं [illegible] थे जेना को वह सब कुछ [illegible], वे अपनी बेटी के [illegible] के लिए ईश्वर थीं। जेना की देखभाल और [illegible] के [illegible] रही थीं। [illegible] कि उनकी बेटी को [illegible] के [illegible] ईश्वर है—वह [illegible] थी—उनकी अपनी [illegible] के कारण नहीं।

'मेरी जेना ! मेरी ! आखिर तुम [illegible] हो !'

इतने वर्षों से और कुछ न कह सकी और कांपती हुई अपनी बेटी को गले लगाने के लिए बढ़ी।

'हे ईश्वर ! मैंने तुम्हें गले लगाने के लिए तो नहीं कहा था !' जेना धीरज खोकर घृणापूर्ण स्वर में बोली, 'मुझे तुम्हारे इस हर्षोन्माद की ज़रूरत नहीं है। मैं सिर्फ अपने सवाल का जवाब चाहती हूं।'

'लेकिन जेना, मैं तुमसे प्यार करती हूं, तुम्हारी आराधना करती हूं और तुम मुझसे नफरत करती हो···आखिर तुम्हारी खुशी के लिए ही तो मैं यह सब कर रही हूं।'

और उनकी आंखों से मोटे आंसू टपकने लगे। मारथा अर्नहे-ड्रोना अपने ढंग से सचमुच जेना को प्यार करती थीं, अब सफलता और उत्तेजना से वे और भी ज़्यादा भावुक हो उठी थीं। जेना जानती थी कि अपनी तमाम संकीर्णताओं के बावजूद भी उसकी मां उसे चाहती है, जेना को यह प्यार बोझ-सा महसूस होता था। सचमुच अगर उसकी मां उससे नफरत करती तो अच्छा होता।

रही हूँ और मुझे [illegible] नहीं है ? [illegible]
[illegible] है। मैं तुम्हें [illegible] के लिए [illegible]
को तैयार कर लिया है लेकिन [illegible] हुई और
[illegible]
[illegible] और मैं [illegible] के लिए [illegible]
[illegible] के लिए [illegible]
तैयार [illegible] और [illegible] लेकिन [illegible]
जानती हूँ, आखिर मैं यहीं होता।

'लेकिन इसमें कोई कल्पना है, मेरी बच्ची ?' [illegible] ने धीरे स्वर से ऐतराज किया, 'आखिर यह सच्चाई की ताली के सिवा और कुछ नहीं, सब साफ बहाना करना चाहते हैं। सिर्फ इसी दृष्टिकोण से सारे मामले को देखो तो सब बातें बिल्कुल उचित मालूम होंगी।'

'ओह मां, ईश्वर के लिए मेरे सामने हाथ मत रखो ! मैं हर चीज के लिए राजी हूँ—हर चीज के लिए। इससे ज्यादा तुम क्या चाहते हो ? अगर मैं चोरों को उनके सही नाम से पुकारूं, तो तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। यही तो मेरी एकमात्र भावना है।' उसके होंठों पर एक वक्र मुस्कान छा गई।

'अच्छा, अच्छा मेरी प्यारी ! विचारों में मतभेद होते हुए भी हम एक-दूसरे की इज्जत कर सकती हैं। लेकिन अगर तुम्हें डर है कि इस मामले में अप्रिय तरीकों से काम लिया जाएगा, तो वह फिक्र तुम मुझपर छोड़ो। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि तुमपर कीचड़ का एक भी छींटा नहीं पड़ेगा। क्या मैं तुम्हारी स्थिति खराब करना चाहूंगी ? सिर्फ मुझपर भरोसा रखो, सब बातें बड़े शानदार और शिष्ट ढंग से होंगी। रत्ती-भर बदनामी नहीं होगी, और मान लो अगर जरा-सी ऐसी बदनामी हुई भी, जिसे रोका नहीं जा सकता (इन बातों का क्या भरोसा?) तो

इस वक्त तक हम यहां से दूर पहुंच चुके होंगे। हम यहां नहीं रहेंगे— दूर पहुंच जाएंगे। लोग बेशक क्या फायदा चिल्लाते रहें! इमारी [illegible] से! वह सिर्फ उनकी ईर्ष्या होगी। क्या वे इस काबिल हैं कि उनकी वजह से परेशान हुआ जाए? मुझे तुम पर ताज्जुब होता है। जेना— मुझसे नाराज मत होना। वाह! तुम जैसी क्रांतिकारी लड़की इन लोगों से डरेगी!'

'ओह मां, मुझे लोगों से कतई डर नहीं लगता! तुम मेरी बात बिल्कुल नहीं समझती।' जेना खीझकर बोली।

'बस, बस, डार्लिंग, गुस्सा मत करो! मेरे कहने का सिर्फ यही मत-लब था कि ये लोग भी आए दिन इस तरह की गन्दी हरकतें करते ही रहते हैं। और इस तरह की बात तुम सारी जिन्दगी में बस एक बार ही करोगी। ...लेकिन मैं भी कितनी बेवकूफ हूं, फिजूल की बातें किए जा रही हूं। इस बात से जरा भी नुकसान नहीं होगा, बल्कि यह चीज बिल्कुल [illegible] है। मैं तुम्हारे आगे यह साबित कर दूंगी। मैं फिर कहती हूं कि हर चीज दृष्टिकोण पर निर्भर करती है...'

'बस करो मां, बहुत सबूत दे चुकीं!' जेना ने गुस्से में फर्श पर पैर पटकते हुए कहा।

'अच्छा डार्लिंग मैं आगे से ऐसी बात नहीं कहूंगी, लेकिन मेरी जबान......'

इसके बाद कुछ देर तक खामोशी छाई रही। मारया अलेक्सांद्रोव्ना आतुर दृष्टि से जेना की आंखों में झांककर देखने लगी, जिस तरह एक नन्हा पिल्ला यह जानते हुए कि वह कसूरवार है, अपनी मालकिन की आंखों में झांकता है।

जेना ने पूछा, 'मैं कल्पना नहीं कर सकती कि तुम इस मामले को कैसे तय करोगी। मुझे यकीन है कि बिना बदनामी के तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आएगा। मैं लोगों की राय को बिल्कुल तुच्छ समझती हूं लेकिन तुम

करार के ही उन्हें मात दे दूंगी। सिर्फ एक ही आदमी से डरना पड़ता है, वह है मोइस्याकोव।'

'मोइस्याकोव?' जेना ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में दुहराया।

'हां, मोइस्याकोव। लेकिन तुम फ़िक्र न करो जेना। मैं इसे जाकर कहूंगी कि मैं उसे ऐसे बिन्दु पर पहुंचा दूंगी जहां वह अपने आप ही हमारी मदद करेगा! तुम अभी तक मुझे नहीं जानती जेना! तुम नहीं जानती कि काम करने वक्त मैं कैसी हो जाती हूं। ओह जेना, मेरी जालिम! ज्योंही मैंने काउन्ट के आने की खबर सुनी, मेरे विचारों में जैसे आग-सी लग गई। सहसा मुझे एक नई रोशनी दिखाई दी। क्या कभी किसी ने सोचा था कि काउन्ट हमारे पास आएंगे। ऐसा मौका हजार सालों में भी नहीं आएगा जेना! मेरी प्यारी! तुम्हारी बेइज्जती एक बूढ़े और अपाहिज आदमी से शादी करने में नहीं, बल्कि एक ऐसे आदमी से शादी करने में है, जिसे तुम बर्दाश्त नहीं कर सकतीं, और सचमुच तुम्हें जिसकी बीवी बनना पड़ेगा। काउन्ट से शादी करके तुम उसकी सचमुच की बीवी नहीं बनोगी। यह शादी थोड़े ही होगी। यह तो परिवार में ही मामूली-सा हेरफेर होगा। सारा फायदा उनका ही रहेगा—

सोचो तो सही, अचानक उन्हें इतना बहुमूल्य सुख नसीब हो जाएगा। तू जेना, आज तुम कितनी प्यारी दिखाई दे रही हो! तुम मामूली न्दरी नहीं हो, सुन्दरियों में भी सुन्दरी हो। अगर मैं पुरुष होती तो म्हारे कहने पर सारी सल्तनत तुम्हारे कदमों में ला रखती। सब के व कितने गधे हैं? इस नन्हे हाथ को कौन नहीं चूमना चाहेगा?' और ारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने भावावेश में आकर अपनी बेटी का हाथ चूम लया। 'यह मेरे ही शरीर का टुकड़ा है, मेरा अपना रक्त-मांस! उस वेवकूफ को तुमसे शादी करनी ही पड़ेगी, चाहे जबरदस्ती ही क्यों न करनी पड़े। और फिर हम दोनों मजे में जिन्दगी गुजारेंगे, मेरी नन्ही-मुन्नी बिटिया! सुख मिलने पर तुम अपनी मां को दुत्कार तो नहीं दोगी न! हम दोनों में चाहे कितना ही झगड़ा हुआ हो लेकिन तुम्हें मुझसे बड़ा दोस्त कोई नहीं मिला। आखिरकार—'

'मां, तुमने अपना इरादा पक्का कर लिया है, इसलिए—अब तुम्हें कुछ करना चाहिए। तुम यहां फिजूल में अपना वक्त बर्बाद कर रही हो।' जेना ने अधीरता से कहा।

'वक्त हो गया है जेना! मैं भी कितनी बातूनी औरत हूं।' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना चिल्लाई, 'लोग काउन्ट को हमेशा के लिए अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। मैं फौरन गाड़ी में बैठकर चल दूंगी। मैं वहां जाकर पहले मोजग्ल्याकोव को बुलाऊंगी और फिर—काउन्ट को वहां से ले आऊंगी—अगर जरूरत पड़ी तो जबर्दस्ती भी करूंगी। गुडबाई जेना, गुडबाई डार्लिंग, परेशान मत होना, मन में किसी बात का सन्देह न आने देना, सबसे बड़ी बात यह है कि दुखी मत होना। सब ठीक हो जाएगा। एकदम शानदार! सबसे बड़ी बात है दृष्टिकोण!···गुड-बाई, गुडबाई।'

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने जेना के शरीर पर क्रास का चिह्न बनाया और भागती हुई कमरे से बाहर चली गई, क्षण-भर के लिए उन्होंने

पीछे से अपनी [illegible] और [illegible] के सुखी थी।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं ! कुछ लोग मुझे पसन्द नहीं है [illegible] । [illegible] [illegible] काम तो कैसे ही हो गया । लेकिन फिर भी [illegible] [illegible] है। क्या बकवास है ! ऐसा ! ऐसा ! आखिर [illegible] [illegible] तो उसके दिमाग का कुछ बातों का असर तो पड़ता ही है। [illegible] सब बाद दिखाए, मैंने ठीक अन्दर को छू लिया। लेकिन [illegible] प्यारी दिखाई दे रही है ! कितनी प्यारी ! अगर मैं इतनी खूबसूरत होती तो अपनी बहनों के मुकाबिले अपने भविष्य को [illegible] अच्छा देखो, क्या होता है ...जब वह काउन्टेस बन जाएगी और दुनियादारी सीख लेगी तब पीटर्सबर्ग की कोई जगह नहीं छूटेगी। [illegible] तक उसने क्या देखा है ? [illegible] और यह [illegible]... यह काउन्टेस के बन में कितनी शानदार लगेगी ! मुझे उसका अहंकार बहुत अच्छा लगता है, वह कितनी साहसी और उदासीन है ! वह सचमुच महारानी मालूम होती है। भला उसने पहले अपना फायदा क्यों नहीं देखा ? यह कैसे हुआ ? लेकिन......उसने अब देख लिया है... बाकी सब ठीक हो जाएगा। आखिर मैं तो उसकी तरफ रहूँगी ही। अन्त में वह सब बातों पर मेरे साथ सहमत हो जाएगी और मेरे बगैर कुछ नहीं कर सकेगी। मैं खुद भी काउन्टेस बन जाऊँगी और पीटर्सबर्ग में भी लोग मुझे जान जाएंगे। अलविदा मनहूस कस्बे ! काउन्ट मर जाएगा, वह लड़का भी मर जाएगा, फिर मैं उसकी शादी किसी शाही खानदान के आदमी से कर दूंगी। मुझे डर सिर्फ इसी बात का है कि कहीं मैंने जेना पर जरूरत से ज्यादा भरोसा न किया हो। क्या मैंने बहुत ज्यादा खुले ढंग से बात की

७

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने अपने भीतर के ईमान को कभी की छुट्टी दे दी थी। उन्होंने एक शानदार और दुस्साहसपूर्ण स्कीम बनाई थी: अपनी बेटी की शादी एक अमीर, अर्धविक्षिप्त काउन्ट से करना, शादी इतनी जल्दी हो कि किसी को पहले से पता न चले, अपने मेहमान की दुर्बल बुद्धि और लाचारी का फायदा उठाना—मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के दुश्मनों के शब्दों में 'रात को चोर की तरह छिपकर काम करना'। ये सारी बातें दुस्साहसपूर्ण होने के साथ गुस्ताखी-भरी भी थीं। स्कीम बड़ी शानदार थी, लेकिन असफल होने पर इसमें भयंकर बदनामी का खतरा भी था। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को यह बात मालूम थी, लेकिन वे परेशान नहीं थीं। 'तुम नहीं जानती, मैं कितनी बार बाल-बाल बच चुकी हूं,' उन्होंने जेना को बताया था। दरअसल वे सच ही कह रही थीं, वरना वे शहर की वीरांगना न कहलातीं।

इन सब बातों में लुटेरेपन की गंध आती थी, लेकिन मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को इसकी भी फिक्र न थी। इस मामले में तो वे इस अकाट्य सत्य से चिपकी हुई थीं, 'एक बार अगर उनकी शादी हो गई तो कोई उस शादी को तोड़ नहीं सकता।' इस सीधे-सादे वाक्य ने, जिसमें अनेक फायदे थे, मारया अलैक्जैंड्रोव्ना की कल्पना को मुग्ध कर

लिया था। उनके खून में रोमांच हो रहा था और उनका सारा शरीर कांप रहा था। वे पागलों की तरह आवेश में थीं, और मुश्किल से अपने-आपको संभाल पा रही थीं। चूंकि उनमें असाधारण सूझबूझ और कल्पना थी, उन्होंने पहले से ही सारी कार्रवाई का नक्शा तैयार कर लिया था। यह नक्शा अभी कच्चा था, सिर्फ उसकी धुंधली रूपरेखा ही उनकी आंखों के आगे चमक रही थी। अभी अप्रत्याशित परिस्थितियों और छोटी-छोटी चीजों का सामना करना था, लेकिन मारया अलेक्जेंड्रोव्ना को अपने ऊपर पूरा भरोसा था। वे असफलता के भय से परेशान नहीं हो रही थीं। ओह, बिलकुल नहीं! वे जल्द से जल्द युद्ध के मैदान में कूदना चाहती थीं। देरी और रुकावटों की कल्पना से उनका मन अधीरता, एक कातिल अधीरता से जल रहा था। चूंकि हमने रुकावटों का जिक्र किया है, हम पाठकों से अपने विचार का विस्तृत विवरण देने की इजाजत चाहते हैं। मारया अलेक्जेंड्रोव्ना जानती थी कि सबसे भयंकर रुकावटें मोर्दासोव के नागरिक, विशेषकर कुलीन वर्ग की महिलाएं डालेंगी। वे तजुर्बे से जानती थीं कि मोर्दासोव की महिलाओं को उनसे कितनी सख्त नफरत है! मिसाल के लिए उन्हें पूरी तरह मालूम था कि शहर के सब लोगों को उनके इरादों का पता चल गया है, हालांकि अभी तक किसीने इस बात का जिक्र एक-दूसरे से नहीं किया था। उनका यह कटु अनुभव था कि उनके घर की हर बात, चाहे वह कितनी ही गुप्त रखी जाती हो, शाम तक हर दुकान में, हर बाजारू औरत के पास पहुंच जाती थी। अभी तक तो मारया अलेक्जेंड्रोव्ना को हमेशा अनिष्ट की आशंका ही हुई थी लेकिन इन आशंकाओं ने कभी उन्हें धोखा नहीं दिया। इस बार भी उन्हें धोखा नहीं मिला। दरअसल ये बातें हुई थीं, जिनके बारे में वे निश्चित रूप से कुछ नहीं जानती थीं। दोपहर के करीब, यानी काउन्ट के मोर्दासोव में आने के तीन घंटे बाद ही शहर में अजब किस्म की अफवाहें फैलने लगीं। ये अफवाहें किसने फैलाईं यह

कोई नहीं जानता, लेकिन वे एकाएक ही फैलने लगीं। लोगों ने ए
दूसरे को यकीन दिलाया कि मारया अलेक्सांद्रोव्ना ने पहले से ही का
की शादी अपनी तेईस बरस की लड़की ज़ेना से करने का फैसला
लिया था, कि उनके पास शादी के लिए दहेज नहीं है, कि मोज़ग्ल्याको
का पत्ता काट दिया गया है, सारा मामला पक्का हो गया है और दस्त
नामे पर दस्तखत हो चुके हैं। इस तरह की अफवाहें कैसे फैलीं ? क
ऐसा तो नहीं कि सब लोग मारया अलेक्सांद्रोव्ना को इतनी अच्छी त
समझते थे कि उनके गुप्त से गुप्त विचारों और आकांक्षाओं का प
भी उन्हें फौरन चल जाता था ? यह अफवाह एकदम गलत है—क्यों
एक घंटे मे ऐसे मामले भला कैसे तय हो सकते हैं ?—ऐसी अफवा
का साफ झूठ होना स्वत-सिद्ध था, क्योंकि किसीको अभी तक इ
अफवाहों का मूल-स्रोत नहीं मालूम था—इन तमाम बातों के बावजू
भी मोर्दासोव के लोगों के विचार टस से मस नहीं हुए। अफवाहें फैल
रहीं और असाधारण रूप से जड़ें पकड़ती गईं। सबसे मज़ेदार बात
यह है कि यह अफवाह ऐन उसी वक्त फैलनी शुरू हुई जिस वक्त मार
अलेक्सांद्रोव्ना ने ज़ेना से इस विषय मे बातचीत शुरू की थी। छो
शहरों के लोगों का सहज ज्ञान ऐसा होता है ! कई बार तो छोटे शहरों
खबरें गढ़ने वालो का सहज ज्ञान चमत्कार की सीमा तक जा पहुँचत
है—इसका कारण जानना मुश्किल नहीं। यह ज्ञान एक-दूसरे के अत्यं
अतरग, सम्पूर्ण और लबे अध्ययन पर आधारित होता है। छोटे शह
का हर आदमी जैसे शीशे की पारदर्शी दीवारो के घर मे रहता है, औ
वह अन्य सम्मानित नागरिको से कुछ भी छिपा सके, इसकी सभावन
बिलकुल नहीं होती। इन शहरों मे लोग आपको पूरी तरह से जानते है
और आपके बारे मे कई ऐसी बातें भी जानते हैं जो स्वय आपको नही
मालूम होतीं। छोटे शहर का हर आदमी मनोवैज्ञानिक होता है जो
इन्सान के दिल के हर रहस्य को सहज ज्ञान से ही जान लेता है। इसी-

लिए सच पूछिए तो छोटे शहरों में जब मैं मनोवैज्ञानिक और ज्योतिषियों की बजाय, बहुत अधिक सख्या मे गधो को देखता हू तो मुझे ताज्जुब होता है। लेकिन हम बहकने लगे हैं—यह एक असगत विचार है। यह खबर बिजली की गर्ज और तूफान की तरह सारे शहर में फैल गई। काउन्ट से शादी करना सब लोगों को इतनी फायदे की, इतनी अक्लमंदी की बात मालूम हुई कि किसीका ध्यान इस बात की विलक्षणता की ओर गया ही नहीं। एक और बात ज़िक्र के काबिल है। किसी अज्ञात कारण से सब लोग मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना से भी ज़्यादा ज़ेना से नफरत करते थे। शायद कुछ हद तक ज़ेना की खूबसूरती इसका कारण रही हो। जो भी हो, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना उन्हींमें से एक थी—सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे। अगर वह शहर से चली जाती तो शायद लोग उनके बगैर ऊब जाते। मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के बारे में प्रतिदिन नई कहानिया सुनने में आती थी, जिससे मोर्दासोव के समाज की ज़िन्दादिली बनी रहती थी। उनके बगैर वहा की ज़िन्दगी नीरस हो जाती। लेकिन इसके विपरीत ज़ेना इस तरह पेश आती थी, जैसे वह मोर्दासोव की बजाय बादलों में रह रही हो। लगता था जैसे वह वहा की नहीं है और बाकी लोगो से ऊंची है, शायद अनजाने में वह लोगो से ऐसी गुस्ताखी से पेश आती थी, जिसे लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। और अचानक वही ज़ेना, जिसकी इतनी बदनामी हुई थी, वही गुस्ताख ज़ेना अब करोड़ों की मालिक, एक काउन्टेस बनने वाली थी—और अभिजात-वर्ग में शामिल होने वाली थी, एक या दो साल में वह विधवा हो जाएगी और किसी ग्रैंड ड्यूक से यहां तक कि किसी जनरल से शादी कर लेगी। क्या पता वह किसी गवर्नर से शादी कर ले? (सयोगवश मोर्दासोव का गवर्नर विधुर था और स्त्रीजाति के प्रति उसके मन में पक्षपात की भावना काफी थी) फिर वह इलाके की सबसे प्रमुख महिला बन जाएगी—यह कल्पना करना ही लोगों के लिए अप्रिय था। इसलिए

कोई नहीं जानता, लेकिन ये एकाएक ही फैलने लगीं। लोगों ने एक-दूसरे को यकीन दिलाया कि मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने पहले से ही प्रिंस की शादी अपनी तेईस बरस की लड़की जेना से करने का फैसला कर लिया था, कि उनके पास शादी के लिए दहेज नहीं है, कि मोजग्ल्याकोव का पत्ता काट दिया गया है, सारा मामला पक्का हो गया है और इकरारनामे पर दस्तखत हो चुके हैं। इस तरह की अफवाहें कैसे फैलीं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि सब लोग मारया अलैक्जेंड्रोव्ना को इतनी अच्छी तरह समझते थे कि उनके गुप्त से गुप्त विचारों और आकांक्षाओं का पता भी उन्हें फौरन चल जाता था ? यह अफवाह एकदम गलत है—क्योंकि एक घंटे में ऐसे मामले भला कैसे तय हो सकते हैं ?—ऐसी अफवाहों का साफ झूठ होना स्वत-सिद्ध था, क्योंकि किसीको अभी तक इन अफवाहों का मूल-स्रोत नहीं मालूम था—इन तमाम बातों के बावजूद भी मोर्दासोव के लोगों के विचार टस से मस नहीं हुए। अफवाहें फैलती रहीं और असाधारण रूप से जड़ें पकड़ती गईं। सबसे मजेदार बात तो यह है कि *यह अफवाह ऐन उसी वक्त फैलनी शुरू हुई जिस वक्त मारया* अलैक्जेंड्रोव्ना ने जेना से इस विषय में बातचीत शुरू की थी। छोटे शहरों के लोगों का सहज ज्ञान ऐसा होता है ! कई बार तो छोटे शहरों के खबरें गढ़ने वालों का सहज ज्ञान चमत्कार की सीमा तक जा पहुंचता है—इसका कारण जानना मुश्किल नहीं। यह ज्ञान एक-दूसरे के अत्यंत अंतरंग, सम्पूर्ण और लंबे अध्ययन पर आधारित होता है। छोटे शहर का हर आदमी जैसे शीशे की पारदर्शी दीवारों के घर में रहता है, और वह अन्य सम्मानित नागरिकों से कुछ भी छिपा सके, इसकी संभावना बिलकुल नहीं होती। इन शहरों में लोग आपको पूरी तरह से जानते हैं और आपके बारे में कई ऐसी बातें भी जानते हैं जो स्वयं आपको नहीं मालूम होतीं। छोटे शहर का हर आदमी मनोवैज्ञानिक होता है जो इन्सान के दिल के हर रहस्य को सहज ज्ञान से ही जान लेता है। इसी-

और फौरन पनप भी गया। ठीक समय आने पर हम इस नये विचार के बारे में बताना नहीं भूलेंगे। इस वक्त हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि हमारी हीरोइन की गाडी मोर्दासोव की सड़को पर तेजी से भाग रही थी—काउन्ट को वापस लाने के लिए वे जरूरत पड़ने पर युद्ध करने के लिए भी तयार थीं। इस समय वे क्रुद्ध और उत्तेजित थीं। काउन्ट उन्हें कहा मिलेंगे और वे काउन्ट को कैसे वापस लाएगी, यह अभी उन्हें मालूम नही था, लेकिन वे यह निश्चित रूप से जानती थीं, कि अपने इरादों से एक इच भी पीछे हटने की बजाय वे सारे मोर्दासोव को पाताल भेजना ज्यादा पसन्द करेंगी।

पहले कदम मे उन्हे शानदार सफलता मिली। वे काउन्ट को लोगों के घरों से बाहर पकड़ने में कामयाब हो गई और किसी तरह अपने साथ खाने पर ले आई। अगर यह पूछा जाए कि वे कैसे अन्ना निकोलाईव्ना को नीचा दिखा आईं, जबकि सारे तुरप के पत्ते तो उनके दुश्मनों के हाथ में थे, तो मैं यह जरूर कहूगा कि मैं ऐसे सवाल को मारया अलेक्जेंड्रोव्ना का अपमान समझता हू। वे अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा पर विजय प्राप्त कर लेंगी, भला इस बात में किसीको शक हो सकता है? काउन्ट उनकी बैरन के यहा जा ही रहे थे कि मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने जाकर उन्हें गिरफ्तार करके अपनी गाडी में पटक दिया। मोजग्ल्याकोव ने बहुत दलीलें दी, क्योंकि उसे बदनामी का डर था, लेकिन मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने एक न सुनी। खतरे के मौके पर मारया अलेक्जेंड्रोव्ना को कभी बदनामी से डर नही लगता था, क्योंकि उनका सिद्धान्त था कि सफलता पाने के लिए किसी भी साधन का इस्तेमाल किया ज सकता है—इसीलिए मारया अलेक्जेंड्रोव्ना अपने दुश्मनों से ऊर्च उठ जाती थीं। कहना न होगा कि काउन्ट ने इस बात का विशेष विरो नहीं किया और अपनी आदत के मुताबिक जल्द ही सब कुछ भूल गा और बेहद खुश नजर आने लगे। खाने के दौरान काउन्ट लगातार चहकत

मारग्रेट ब्रैकेनरिज बहुत परेशान थीं। और उन्हीं के सामने बैठा था मारग्रेट का चेहरा और उसके लाल हुई आंखों को देखकर ऐसा लगता था उड़ी थी। इसके साथ ही एक और दिक्कत भी थी। मारग्रेट को बेहद गुस्सा होना चाहिए था, लेकिन वह मोन्टमोरेंसी साहब के सुरे की तरह सामाजिकता से बैठा था, जैसे उस ने उनके इरादे का विरोध कर दिया हो। उसकी मौजूदगी में मारग्रेट अपनी शिकायत अपनी बात आखिर कैसे शुरू कर सकती थी? वे परेशानी से उठ खड़ी हुईं। अब आप जरा उनके ताज्जुब और उनकी सुखद घबराहट की कल्पना कीजिए, जब उस सोफा के उठते ही, मोन्टमोरेंसी उनके पास आया और अचानक उसने क्षमा-याचना करते हुए फौरन बाहर जाने की इजाजत मांगी।

'तुम कहाँ जा रहे हो ?' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने बकरत से ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हुए कहा।

'देखिए मारया अलेक्जेंड्रोव्ना, मुझे न जाने क्या हो गया है, मैं नहीं जानता कि आपको कैसे बताऊं···ईश्वर के नाम पर आप मुझे सलाह दें,' मोजग्ल्याकोव बोला। वह घबराया-सा दिखाई दे रहा था।

'क्यों ? क्या बात है ?'

'आज मैं अपने धर्मपिता बोरोदुयेव से मिला था। आप उस व्यापारी को जानती हैं न ! बूढ़ा मुझसे सख्त नाराज़ है। उसका कहना है कि मैं घमंडी हो गया हूं। मैं मोर्दासोव तीन बार आ चुका हूं, लेकिन उससे एक बार भी नहीं मिला। उसने कहा—आज मेरे यहां चाय पीने आना। ठीक चार बज गए हैं और वह पुराने ढंग से सोकर उठने के बाद चार और पांच बजे के बीच चाय पीता है। मैं क्या करूं ? मैं जानता हूं कि आपको छोड़कर जाना शिष्टाचार के विरुद्ध है, लेकिन ज़रा सोचिए—उसने मेरे स्वर्गीय पिता को आत्महत्या करने से बचा लिया था, जब उन्होंने सारे सरकारी पैसों को जुए में बर्बाद कर डाला था। इसीलिए उसे मेरा धर्मपिता बनने के लिए कहा गया था। अगर जेना के साथ मेरी शादी हो गई तो मेरे पास सिर्फ डेढ़ सौ भूमिदास रह जाएंगे। और उसके पास लोगों का कहना है कि दस लाख रूबल हैं—शायद इससे भी कहीं ज्यादा, और उसका कोई बालबच्चा नहीं है। अगर मैं उसकी नज़रों में अच्छा बना रहा तो वह अपनी वसीयत में मेरे लिए एक लाख रूबल छोड़ जाएगा और आप जानती हैं कि वह सत्तर बरस का है।'

'हे ईश्वर, तो फिर तुम क्या सोच रहे हो ? देर किसलिए कर रहे हो ?' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ज़ोर से बोलीं। वे अपनी खुशी को छिपा नहीं पा रही थीं। 'फौरन जाओ ! ऐसी बातों में भी भला कोई खिलवाड़ किया करता है ? अच्छा, तो इसीलिए खाने के वक्त तुम इतने गुमसुम थे, मैंने फौरन तुम्हारी हालत भांप ली थी ! जाओ, माई डियर,

अंधेरे कोने में ले गई जहां से उसने सुबह झाड़कर चांदी के तार से बुनी थी।

'लेकिन यह सब क्या हो रहा है, नस्तास्या पेत्रोव्ना ? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।'

'तुम जरा झुककर सुनोगे तो सब कुछ समझ में आ जाएगा। कमिडी अभी शुरू होने ही वाली है।'

'कौनसी कमिडी ?'

'शि ! इतनी जोर से मत बोलो ! कमिडी यही है कि तुम्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। आज जब तुम काउन्ट के साथ चले गए थे, तब मार्या अलेक्जान्द्रोव्ना पूरे एक घंटे तक जेना को समझाती रही कि उसे काउन्ट से शादी कर लेनी चाहिए। उनका कहना था कि काउन्ट को फुसलाने से ज्यादा आसान काम कोई नहीं है। काश, तुम उनकी बातें सुन सकते—मेरा तो जी मिचलाने लगा था। मैंने यहीं खड़े होकर सारी बातें सुनी थीं। जेना राजी हो गई थी। काश तुम सुन सकते, वे दोनो मिलकर किस तरह तुम्हे गालियां दे रही थीं ! वे तुम्हें बेवकूफ समझती हैं, और जेना ने तो साफ-साफ कह दिया था कि चाहे कुछ हो वह तुमसे शादी नहीं करेगी। और मैं कितनी बेवकूफ थी ! मैं गले में लाल रंग का रूमाल बांधने जा रही थी, सुनो ! सुनो तो सही !'

'लेकिन यह तो नीचतम विश्वासघात होगा', पावेल अलेक्जेंड्रोविच मूर्खों की तरह नस्तास्या पेत्रोव्ना का मुंह ताकते हुए फुसफुसाया।

'तुम सुनो तो सही, तुम्हें अभी और शानदार बातें सुनने को मिलेंगी।'

'किधर से सुनूं ?'

'जरा नीचे झुक जाओ—उस छोटे छेद की तरफ।'

'लेकिन नस्तास्या पेत्रोव्ना, मैं छिपकर किसीकी बातें नहीं सुन सकता !'

'यह सोचने के लिए अब बहुत देर हो चुकी है ! अब तुम्हें अपना अहंकार ताक पर रखना पड़ेगा। मेरे प्यारे ! चूंकि तुम यहां आ ही गए हो, तो सुन लो।'

'ओह, लेकिन—'

'अगर तुम छिपकर बात नहीं सुन सकते तब, अगर कोई तुम्हें उल्लू बनाए तो तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। बहुत खूब ! कोई तुम्हारी मदद करने की कोशिश करे तो तुम बनने लगते हो। मुझे कोई परवाह नहीं, बिलकुल मैं अपने लिए नहीं कह रही''' मैं तो शाम तक यहां से जा चुकी होऊंगी !'

पावेल अलेक्जेंड्रोविच ने किसी तरह अपने दिल को पक्का किया और छेद में से झांकने लगा। उसका दिल जोर से धड़क रहा था और उसकी कनपटियां फड़क रही थीं। वह क्या कर रहा था, इसकी उसे कोई होश नहीं थी !

८

'अच्छा, तो काउन्ट, नतालिया दमित्रीव्ना के यहां खूब मजे में वक्त कटा न !' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने भावी युद्धक्षेत्र की ओर एक व्यग्र दृष्टि डालते हुए कहा। वे अधिक से अधिक मासूम ढंग से वार्तालाप शुरू करना चाहती थीं। उनका हृदय आशंका और उत्तेजना से धड़क रहा था।

खाने के बाद काउन्ट को फौरन ड्राइंगरूम में धकेला गया, जिसमें सुबह उनका स्वागत हुआ था। मारया अलेक्जेंड्रोव्ना के यहां सभी दावतें और गंभीर आयोजन इसी कमरे में किए जाते थे। उन्हें इस कमरे पर

बड़ा शौकीन था। वह विशाल शरीर के साथ हुए [illegible] सुन्दर [illegible] हुई नहीं थी और उसके [illegible] पहचाना [illegible] लेकिन वह [illegible] भी [illegible], [illegible] मारया अलेक्सेईवना अच्छी तरह जानती थी कि काउण्ट [illegible] शामिल [illegible] ही [illegible], [illegible] कि उसका सिर [illegible] रहा था, और उसके [illegible] जाती थी। इसी [illegible] के बाद [illegible] था। [illegible] की [illegible] उसका हृदय [illegible] और [illegible] के [illegible] उन्होंने मुझे [illegible] की [illegible] देखते हुए कहा।

'बड़ी दिलचस्प है, बड़ी शानदार औरत है नतालिया दमित्रीवना' काउण्ट धीमी आवाज़ में बोले।

मारया अलेक्सेईवना की आँखों से चिनगारियाँ छूटने लगीं, 'अच्छा काउण्ट! अगर तुम्हारी नतालिया दमित्रीवना इतनी शानदार औरत है तो, मैं फिर आपसे क्या कहूँ, जानती हूँ! आप यहाँ की औरतों को नहीं जानते, बिल्कुल नहीं जानते! वह नतालिया सच्चरित्रा और उदात्त भावनाओं का पालन करती है, वह एक हास्यास्पद चीज़ है, सिर्फ उसने अपने ऊपर एक सुनहरी मुलम्मा चढ़ा रखा है। इस मुलम्मे को हटा दीजिए तो आपको फूलों के नीचे असली नर्क दिखाई देगा, बदनामियों का रास्ता, जिसमें अगर आप चले गए तो आपको खा जाएगा, आपकी एक भी हड्डी बाकी नहीं बचेगी।'

'नहीं तो। क्या सच? तुमने तो मुझे आश्चर्य में डाल दिया!'

लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि यह सच है! आह, मेरे प्रिय! सुनो जेना, अपने कर्तव्य से लाचार होकर मुझे काउण्ट को नतालिया की बदनामी का किस्सा सुनाना पड़ेगा—पिछले हफ्ते की बात याद है न? काउण्ट—वही नतालिया दमित्रीवना, गुणों की खान बिन-

पर आप इतने लट्टू हैं, ओह मेरे प्यारे काउन्ट ! मैं कसम खाती हूं कि मैं किसीकी निन्दा नहीं करती, लेकिन मैं आपको यह किस्सा जरूर सुनाऊंगी, चाहे आपको इसे सुनकर हंसी ही क्यों न आए। मैं आपको खुर्दबीन के जरिए यहां के लोगों का असली रूप दिखाना चाहती हूं। पन्द्रह दिन हुए यही नतालिया दमित्रीवना मुझसे मिलने आई थी। कॉफी लाई गई। मुझे न जाने किस काम से कमरे से बाहर जाना पड़ा। मुझे अच्छी तरह याद है, चांदी की चीनीदानी ऊपर तक चीनी से भरी थी। जब मैं लौटकर आई तो क्या देखती हूं—चीनीदानी के बिलकुल पेंदे में चीनी के सिर्फ तीन टुकड़े बच गए थे ! कमरे में नतालिया दमित्रीवना के सिवा और कोई आदमी नहीं था। क्यों आपकी क्या राय है ? उसकी पत्थर की बनी एक हवेली है और बेशुमार धन-दौलत है। यह घटना बड़ी हास्यास्पद और क्षुद्र है, लेकिन आप इस मिसाल से समझ जाएंगे कि हमारे यहां के शिष्ट समाज के तौर-तरीके क्या हैं।'

'क्या सच ?' काउन्ट ने सच्ची हैरत से पूछा। 'लेकिन इतना लालच ! तुम्हारे कहने का मतलब है कि वह सारी चीनी अकेली ही खा गई ?'

'ऐसी है आपकी शानदार औरत, काउन्ट ! कहिए इस घटना के बारे में आपकी क्या राय है ? मेरा ख्याल है कि अगर मैं ऐसा घृणित काम करने की बात सोच भी सकती तो फौरन वहीं मर जाती।'

'हां, हां'''लेकिन तुम जानती हो, फिर भी वह एक सुन्दरी है।'

'नतालिया दमित्रीवना ? वह देखने में बिलकुल टब मालूम देती है। ओह काउन्ट, काउन्ट ! आप इस तरह की बात कह रहे हैं ! मुझे आपसे ज्यादा विवेक की उम्मीद थी।'

'हां, हां—है तो टब'''लेकिन उसका शरीर कितना सुडौल है और वह नन्ही लड़की जो नाच रही थी, उसके शरीर की बनावट भी'''

'सोनिया ? अरे वह तो निरी बच्ची है काउन्ट ! वह अभी चौदह

बरग भी है।'

'हां'''हां, लेकिन उसमें कितनी फुर्ती है और उसका शरीर'''उभर रहा है। कितनी प्यारी है ! और दूसरी लड़की जो उसके साथ दब रही थी—उसका शरीर भी'''

'ओह, शायद आप उस बदनसीब यतीम लड़की की बात कर रहे हैं। वह अक्सर उनके यहां रहती है !'

'यतीम ! हां थी तो मैली-कुचैली हालत में—कम से कम उसे अपने हाथ तो धो लेने चाहिए थे लेकिन'''उसमें गजब का आकर्षण था।'

यह कहकर काउन्ट ने अपने शीशे में से उत्सुकतापूर्वक ज़ेना को देखा और खुशी से जैसे पिघलकर बुदबुदाए, 'कैसी खूबसूरत है !'

'ज़ेना हमें प्यानो पर कुछ सुनाओ'''या, नहीं गाओ। काउन्ट, आपने ज़ेना का गाना नहीं सुना ! आप उसे संगीतकार कह सकते हैं। एकदम संगीतकार !' और जब ज़ेना उठकर इठलाती हुई, थिरकती चाल से प्यानो की तरफ चली गई तो बेचारा काउन्ट फौरन पस्त हो गया। मारया अलक्ज़ेंड्रोव्ना ने धीमी आवाज़ में कहा, 'काश, आप जान सकते यह कितनी अच्छी बेटी है ! उसमें प्यार करने की कितनी क्षमता है ! मुझसे उसका कितना प्यार है, आह, उसकी भावनाएं, उसका दिल।'

'हां, हां, भावनाएं'''जानती हो सारी ज़िन्दगी में मैंने सिर्फ एक ही औरत देखी है जो इतनी खूबसूरत थी।' काउन्ट ने क्लान्त स्वर में कहा, 'वह थी स्वर्गीय काउन्टेस नेनस्काया। उसे मरे तीस बरस हो गए हैं। वह बड़ी शानदार औरत थी, उसकी खूबसूरती का बयान नहीं किया जा सकता—बाद में उसने अपने रसोइए से शादी कर ली थी।'

'रसोइए से, काउन्ट ?'

'हां, हां अपने रसोइए से—विदेश में, वह फ्रेंच था। काउन्टेस ने उसे भी काउन्ट बनवा दिया था। वह बड़ा दर्शनीय पुरुष था, और बहुत

पढ़ा-लिखा भी था, उसकी छोटी-छोटी मूछें थीं।'

'और'''और क्या उनकी आपस में पट गई थी, काउन्ट ?'

'हां, हां, आपस में खूब पटती थी। दरअसल शादी के जल्द बाद ही वे एक-दूसरे से अलग हो गए थे। उसके पति ने उसे लूट लिया था और उसे छोड़कर चला गया था। मेरा ख्याल है कि किसी चटनी के बारे में उनका झगड़ा हुआ था'''

'मैं क्या बजाऊं, मां ?' ज़ेना ने पूछा।

'ज़ेना, तुम कुछ गाकर सुनाओ ! आप नहीं जानते, ज़ेना कितना अच्छा गाती है। आप संगीत के शौकीन हैं काउन्ट ?'

'हां, हां, चार्मिंग ! चार्मिंग ! मुझे संगीत से प्यार है। जब मैं विदेश में था तो मैं बीटोवन को भी जानता था।'

'बीटोवन ! ज़रा सोचो तो सही ज़ेना, काउन्ट बीटोवन से परिचित थे। ओह काउन्ट, क्या आप सचमुच बीटोवन को जानते थे ?' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना आनन्द से विभोर हो गई।

'हां, हां ! हम दोनों बड़े अतरंग मित्र थे ! उसकी नाक पर हमेशा नसवार लगी रहती थी ! वह बड़ा विलक्षण आदमी था।'

'कौन, बीटोवन ?'

'हां, हां, बीटोवन। शायद वह आदमी बीटोवन नहीं, बल्कि कोई दूसरा जर्मन था। विदेशों में बहुत से जर्मन रहते हैं, लेकिन मेरा ख्याल है, मैं फिर भूल गया हूं—'

'मैं कौन-सा गीत गाऊं मां ?' ज़ेना ने पूछा।

'ओह ज़ेना ! वह वीररस वाला गीत सुनाओ। किले की महिला, कप्तान और उसके गायक कवि का गीत। ओह काउन्ट ! मुझे वीररस से कितना प्रेम है ! वे किले ! मध्ययुग की वह जिन्दगी ! गायक, हरकारे, दंगल !'''मैं तुम्हारा साथ दूंगी। ज़ेना। इधर आइए काउन्ट, और नज़दीक'''ओह वे किले, ओह, ओह !'

'हां, हां···ठीक। मुझे भी ठीक अच्छे लगते हैं, काउन्ट उन्ह
मुस्कुराए। उन्होंने अपनी अगमी आंखें ज़ेना पर गड़ा दीं, 'ओह!
ईश्वर, यह गीत ! मैं यह गीत जानता हूं। मैंने बहुत दिन हुए इसे
सुना था। इससे मुझे एक बात याद आ गई—हे ईश्वर !'

ज़ेना के गाने का काउन्ट पर क्या असर हुआ, इसका ज़िक्र
नहीं करूंगा। ज़ेना ने एक पुराना फ्रेंच बैलेड गाया जो कभी बहुत
प्रिय था। ज़ेना बहुत सुन्दर गाती थी। उसकी साफ़, शक्तिशाली
मन्द्र स्वर की आवाज़ सीधे दिल में चुभती थी। ज़ेना का सुन्दर
चेहरा, आखें, अलौकिक पतली उंगलियां जिनसे वह प्यानो बजा रही
थी, उसके काले सघन, चमकीले केश, उत्तेजित वक्ष, उसके सुन्दर आ-
कार भरे, उदात्त शरीर ने बेचारे बूढ़े पर जादू फेर दिया। जब
गाती रही बूढ़े की नज़रें उसपर गड़ी रहीं और भावावेश से उसका द
रुध गया। उसका बूढ़ा दिल जिसमे शैम्पेन से, संगीत से, और नव जाग-
रित स्मृतियों से गर्मी आ गई थी, (कौन इन्सान ऐसा है जिसकी
स्मृतियां न हो ?) और उनका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, बरसों से
उन्हें ऐसी धड़कन महसूस नहीं हुई थी···वह ज़ेना के चरणों में गिरने के
लिए बेताब हो रहे थे—जब ज़ेना का गाना खत्म हुआ तो काउन्ट की
आखों में आसू आ गए थे।

'ओ, मेरी प्यारी बच्ची !' कहकर काउन्ट ने ज़ेना की उंगलियों
को चूम लिया। 'ओह, मेरी जादूगरनी, अब मुझे गुज़रा ज़माना याद
आ गया, ओह, मेरी प्यारी बच्ची !'

भावावेश के कारण काउन्ट अपना वाक्य पूरा न कर सके।

मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना को लगा कि उनका मौका आ गया है। वे
गम्भीर स्वर में बोलीं—'आप अपने को तबाह क्यों कर रहे हैं काउन्ट !
इतनी भावुकता, ज़िन्दादिली और आध्यात्मिक वैभव के होते हुए भी
आपने अपने-आपको एकान्त में क्यों दफ़ना दिया है। अपने दोस्तों से,

ानों से कतराना ! लेकिन यह एक अक्षम्य अपराध है। ज़रा सोचिए
उन्ट, जिन्दगी को सही नज़र से देखिए। अपने अतीत की स्मृतियाँ
फिर से याद कीजिए—अपने सुनहरी यौवन की स्मृतियों को, उन
ुहरी निश्चिन्त दिनों की स्मृतियों को—उन्हें फिर से ताज़ा कीजिए।
र से समाज में, इन्सानों के बीच रहना शुरू कीजिए! विदेश जाइए,
ली में, स्पेन में। स्पेन में काउन्ट ! आपको एक अभिभावक की ज़रूरत
, एक ऐसे दिल की जो आपसे प्यार कर सके, आपकी इज़्ज़त कर सके,
ापसे हमदर्दी कर सके। लेकिन आपके अनेक मित्र तो हैं। उन्हें
ुलाइए, वे भागे-भागे आएँगे। झुंड के झुंड ! मैं खुद सबसे पहले सब
ुछ छोड़कर आपकी पुकार पर दौड़ी आऊँगी। मुझे अपनी मित्रता की
ाद है काउन्ट। मैं अपने पति को छोड़कर आपका अनुसरण करूँगी…
अगर मैं जवान होती और अपनी बेटी की तरह खूबसूरत होती तो मैं
आपकी साथिन, मित्र और अगर आप चाहते तो आपकी पत्नी भी बन
जाती।'

'मुझे यकीन है कि अपनी जवानी के दिनों में तुम भी बड़ी खूबसूरत रही होगी।' काउन्ट ने अपनी नाक साफ करते हुए कहा, उनकी आँखों में आँसू आ गए थे।

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने एक उदास स्वर में उत्तर दिया, 'हम अपने बच्चों में ज़िन्दा रहते हैं, काउन्ट, मेरा भी एक संरक्षक फरिश्ता है—वह है मेरी बेटी, जो मेरे विचारों, मेरे दिल और मेरी ज़िन्दगी की दोस्त है काउन्ट ! वह अभी तक शादी के सात प्रस्तावों को ठुकरा चुकी है, वह मुझसे अलग नहीं होना चाहती।'

'अच्छा तो जब तुम मेरे साथ विदेश चलोगी तो वह भी तुम्हारे साथ चलेगी ? तब तो मैं ज़रूर विदेश जाऊँगा, ज़रूर ! और अगर मैं इतना खुशकिस्मत होता कि यह उम्मीद कर सकता—लेकिन वह बड़ी प्यारी, प्यारी बच्ची है, ओह मेरी प्यारी बच्ची !' काउन्ट फिर उसकी

उगलियां घूमने लगा। बेचारे बूढ़े काउन्ट ज़ेना के आगे घुटनों के बल गिरने के लिए भी तैयार थे।

'ओह काउन्ट! आप पूछ रहे हैं कि आप उम्मीद कर सकते हैं या नहीं ?' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना मे बार्-बानुर्ग का नया विस्फोट हुआ। 'आप भी कितने अजब हैं काउन्ट! आप सचमुच अपने को इस योग्य नहीं समझते कि महिलाएं आपपर आकर्षित हों ? जवान होने से ही कोई आदमी सुन्दर नहीं हो जाता। याद रखिए कि आप हमारे अभिजातवर्ग के अवशेष हैं। आप सबसे अधिक परिष्कृत, सुसंस्कृत भावनाओं और शिष्ट आचरण के प्रतिनिधि हैं। क्या मोरिया बूढ़े मेज़ेप्पा से प्यार नहीं करती थी? मुझे याद है मैंने सम्राट् लुई के दरबार के सुयोग्य मार्क्विस लोज़ियन के बारे मे पढ़ा था···कौन से लुई के, यह मैं भूल गई हूं··· खैर लेज़ियन ने बुढ़ापे मे राजदरबार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का दिल जीता था। और आपसे किसने कहा कि आप बूढ़े हैं ? आपको यह किसने सिखाया ? भला आप जैसे लोग भी कभी बूढ़े होते हैं ? आपमें कितनी भावुकता, विवेक, ज़िन्दादिली, हाज़िरजवाबी, और शिष्टाचार है। आप तो किसी चश्मे के पास एक खूबसूरत जवान बीवी को लेकर चले जाएं, मिसाल के लिए, जो मेरी ज़ेना जैसी हो—मेरा मतलब ऐन ज़ेना ही नहीं है, मैं तो सिर्फ मिसाल दे रही हूं—फिर आप देखेंगे कि आपकी सेहत पर कितना शानदार असर होता है। आप अभिजातवर्ग के स्मृति-चिह्न और वह सुन्दरियों मे सुन्दरी। आप विजेना की तरह उसका हाथ पकड़कर चलेंगे, वह शानदार लोगों के सामने गाएगी, आप अपने चुटकुले सुनाएंगे और सब लोग आपको देखने के लिए टूट पड़ेंगे। यूरोप भर मे आपकी ही चर्चा होगी, क्योंकि सारे अखबारों मे आप ही का ज़िक्र रहेगा···आह, काउन्ट, प्यारे काउन्ट! और आप पूछते हैं कि क्या आप इतने खुशकिस्मत हैं कि···।'

-हां। अखबारों मे लेख छपते हैं।' काउन्ट बुड़बुड़ाए।

उन्हें मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना की अनर्गल बातें पूरी तरह समझ में नहीं आई थी, और वह पहले से ज्यादा भावुक हो उठे थे, 'लेकिन'''मेरी बच्ची अगर तुम थक नहीं गईं तो वह गीत फिर सुनाओ।'

'ओह काउन्ट इसे और भी कई गीत आते हैं, इस गीत से कहीं अच्छे। आपको लिरोन्देल की याद है काउन्ट ! शायद आपने इस गीत को कहीं सुना होगा।'

'मुझे याद है, या यूं कहूं कि मुझे भूल गया है। नहीं, नहीं, मैं वही गीत सुनना चाहता हूं जो इसने अभी गाया था। मैं लिरोन्देल नहीं चाहता, मुझे वही गीत चाहिए।' काउन्ट ने बच्चों की तरह मिन्नत की।

ज़ेना ने फिर वही गीत गाया। काउन्ट अपने ऊपर संयम न रख सके, वे ज़ेना के कदमों पर गिर पड़े और रोने लगे।

'ओ किले की कप्तान !' काउन्ट ने आवेश और बुढ़ापे से कांपती हुई आवाज़ में कहा, 'ओ मेरी किले की कप्तान ! मेरी प्यारी बच्ची ! तुमने मुझे बहुत पुरानी बातों की याद दिलाई है। मेरी किस्मत उम्मीद से कहीं ज्यादा बिगड़ गई। मैं वाईकाउन्टेस के साथ मिलकर गीत गाया करता था। यही गीत—और अब, अब मैं नहीं जानता—'

इन शब्दों के साथ ही काउन्ट हांफने लगे और उनका गला रुंध गया।

साफ ज़ाहिर था कि काउन्ट की ज़बान बेकाबू हो रही थी। उनके कुछ शब्दों को तो समझ सकना भी असंभव था। सिर्फ इतनी ही बात साफ थी, कि काउन्ट तीव्र भावावेश में थे। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने फौरन आग पर तेल छिड़क दिया।

'काउन्ट, अब मुझे डर है कि आप मेरी ज़ेना से प्यार करने लगेंगे,' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना को वह क्षण अत्यन्त गम्भीर मालूम हुआ।

काउन्ट का जवाब मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना की बड़ी से बड़ी उम्मीदों से भी कहीं ज्यादा आशाजनक था।

आपको मुस्कराने के लिए बाध्य भी कर लिया। काउन्ट ने आदर भाव से जेना का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसपर चुम्बनों की वर्षा कर दी।

'अभी तो मेरी ज़िन्दगी शुरू हुई है !' काउन्ट ने भावावेश से रुंधे गले से कहा।

मारया अलेक्ज़ैन्ड्रोव्ना गम्भीरतापूर्वक बोली, 'जेना, इस आदमी की तरफ देखो ! इनसे ज़्यादा शालीन और नेक आदमी मैंने कभी नहीं देखा। ये तो जैसे मध्ययुग के नाईट हैं। लेकिन काउन्ट, अफसोस तो यह है कि जेना यह बात जानती है'''ओह आप यहां क्यों आए? मैं आपको अपना खज़ाना, अपना फरिश्ता सौंप रही हूं, इसकी अच्छी तरह देख-भाल कीजिएगा काउन्ट ! एक मां आपसे मिन्नत कर रही है ! क्या संसार की कोई मां मुझे मेरे दुःख पर दोष देगी?'

'बस करो मां, इतना ही काफी है !' जेना आहिस्ता से बोली।

'आप जेना की रक्षा करेंगे न काउन्ट ! अगर कोई आदमी मेरी जेना के सामने गुस्ताखी दिखाएगा या उसकी बदनामी करके उसे चोट पहुंचाएगा तो आपकी तलवार की चमक से उसकी आंखें चौंधिया जाएंगी न?'

'बस करो मां, क्या तुम चाहती हो कि मैं'''

'हां हां, चौंधियाना,' काउन्ट बड़बड़ाया, 'अभी तो मेरी ज़िन्दगी शुरू हुई है—मैं चाहता हूं यह शादी अभी हो जाए, इसी क्षण ! मैं किसी-को दुखानोवो भेजना चाहता हूं। वहां मेरे पास हीरे रखे हैं, मैं उन हीरों को जेना के कदमों में बिछाना चाहता हूं।'

'कैसा उत्साह है ! प्रेम का इतना आवेश ! इतनी सहृदयता !' मारया अलेक्ज़ैन्ड्रोव्ना बोली, 'काउन्ट, आपने सोसाइटी से दूर रहकर भला अपने को क्यों बर्बाद होने दिया ? मैं बार-बार यही बात कहूंगी। मैं गुस्से से पागल हो जाती हूं जब मुझे उस नारकीय'''

'मैं क्या करता ? मैं इतना डर गया था।' काउन्ट रिरियाए, 'वे लोग मुझे पागलखाने में भेजना चाहते थे। मैं बहुत डर गया था।'

'पागलखाने में ? राक्षस कहीं के ! हैवान ! कितना कमीनापन है ! मैंने भी यह बात सुनी थी काउन्ट। वाह, वे खुद ही पागल होंगे। उन्होंने किसलिए ऐसा किया ? किसलिए ?'

'यह तो मैं खुद भी नहीं जानता।' बूढ़े काउन्ट ने कुर्सी में धसते हुए कहा। उन्हें इतनी कमजोरी महसूस हो रही थी। 'मुझे याद है, मैं किसी द-दावत में गया था, वहां मैंने एक क-कहानी सुनाई, उन्हें वह पसन्द न-नहीं आई, इसलिए इतना गुलगपाड़ा मचा।'

'बस इतनी-सी ही बात थी ?'

'नहीं बाद में मैंने काउन्ट प्योत्र, द-देमेन्तिव के साथ ताश खेली और छह प्वाइंट हार गया। मेरे पास द-दो बादशाह और तीन बेगमें थीं···शायद तीन बेगमें और दो बादशाह थे ? नहीं, एक बादशाह था··· वे-बेगमें बाद में आईं।'

'बस इतनी-सी बात पर ? यह तो मामूली बात है ! कैसी हैवानियत है ! आप रो रहे हैं काउन्ट ! लेकिन आगे से यह बात नहीं होगी ! मैं आपके साथ रहूंगी काउन्ट ! मैं ज़ेना से अलग नहीं होऊंगी, और हम देखेंगे कौन एक भी शब्द कहने का साहस करता है ? जानते हैं कि आपकी शादी से उन लोगों को कितना आघात पहुंचेगा। उनमें घबराहट फैल जाएगी। वे देख लेंगे कि आप अभी भी···मेरे कहने का मतलब है कि उन्हें मालूम हो जाएगा कि ज़ेना जैसी खूबसूरत लड़की किसी पागल से शादी नहीं करेगी। अब आप गर्व से अपना सिर ऊपर उठा सकते हैं, आप उनकी आंखों में आंखें डालकर देखेंगे—'

'हां, हां, मैं उनकी आंखों में आंखें डालकर देखूंगा।' काउन्ट आंखें बंद करके बुड़बुड़ाए।

'हाय, काउन्ट का बुरा हाल हो रहा है ! अब उनसे कोई बात

न... इसी वक्त दरवाजा खुला और मोजग्ल्याकोव कमरे में घुस आया।

९

मोजग्ल्याकोव ने सारी बातें सुन ली थीं।

वह कमरे में घुसने की बजाय अपने-आपको रोककर खड़ा हुआ था। गुस्से और आवेग से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। ज़ीना शांत भाव से उसकी तरफ देखने लगी।

'अच्छा तो यह होगा, क्यों?' मोजग्ल्याकोव हाँफकर बोला, 'आखिरकार, तुम जैसी हो, उसी रूप में मैंने तुम्हें देख लिया!'

'मैं जैसी हूं?' ज़ीना ने इस तरह आंखें फाड़कर देखा जैसे किसी पागल को देख रही हो। सहसा उसकी आंखों में से चिनगारियां छूटने लगीं।

'मुझसे इस तरह बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी!' ज़ीना ने आगे बढ़ते हुए पूछा।

'मैंने सब कुछ सुन लिया है!' मोजग्ल्याकोव ने गंभीर स्वर में कहा, लेकिन वह अपने-आप एक कदम पीछे हट गया।

'तुमने सुन लीं? क्या तुम छिपकर सारी बातें सुन रहे थे?' ज़ीना ने उसकी तरफ तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली।

'हां, छिपकर सुन रहा था! हां, मैंने यह कमीनापन जरूर किया, लेकिन कम से कम मुझे यह मालूम हो गया कि तुम दुनिया की सबसे ज्यादा—तुम कैसी औरत हो; इसके लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है।'

पन्द्रह मिनट पहले काउन्ट बैठे थे, इशारा करते हुए कहा, 'बैठ जाओ'
मोजग्ल्याकोव ने चकित स्वर में कहा, 'लेकिन मारया अलैक्जैंड्रोव्ना आप मेरी तरफ इस तरह देख रही हैं जैसे आप बिलकुल निर्दोष हों। मैंने आपको चोट पहुंचाई हो। वाह, यह नामुमकिन है। आपने सहजे में बात की! इस सहजे को बर्दाश्त करना इन्सान के धीरज बाहर की बात है, क्या आप इस बात को नहीं जानतीं?

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने जवाब दिया, 'मेरे दोस्त, मुझे अब अपना दोस्त कहने की इजाजत दो, क्योंकि तुम्हें मुझसे बेहतर कोई दोस्त नहीं मिलेगा। मेरे दोस्त! तुम दुःखी हो, तुम्हें दर्द हो रहा तुम्हारे हृदय की सबसे कोमल भावनाओं को ठेस पहुंची है, इसलिए तुम इस तरह बात कर रहे हो। मुझे इस बात से कोई ताज्जुब नहीं हुआ, लेकिन मैं तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखाऊंगी, क्योंकि कुछ हद तक मैं तुम्हारी नजरों में अपने को कसूरवार समझती हूं। बैठ जाओ, फिर हम बातें करेंगे।'

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना मन्द दुःख-भरी आवाज में बोल रही थीं, उनके चेहरे पर मानसिक यातना के चिह्न थे। मोजग्ल्याकोव चकित भाव से उनके पास रखी आरामकुर्सी पर बैठ गया।

'क्या तुमने छिपकर सारी बातें सुनी हैं?' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने भर्त्सना-भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा।

'हां सुनी हैं। अगर मैं ऐसा न करता तो मेरी सख्त बेवकूफी होती। कम से कम मुझे यह तो पता चल गया कि तुम मेरे खिलाफ कैसी साजिशें कर रही हो।' मोजग्ल्याकोव ने गुस्ताखी से जवाब दिया। गुस्से से उसमें साहस और आत्मविश्वास आ गया था।

'जरा सोचो तो सही तुम—तुम अपने लालन-पालन, अपने सिद्धांतों के बावजूद भी इतनी कमीनी हरकत कर सके। हे ईश्वर!'

मोजग्ल्याकोव उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया, 'लेकिन मारया

की इस पुस्तक [illegible] के और [illegible] के अध्ययन से जुड़ी हुई है। उसके [illegible] में भी दोष है। मैं उसे [illegible] किए हुए हूँ [illegible], जो शायद एक ही काम और [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], आदर्श और सुन्दरता [illegible] एक ईसाई का [illegible] है। जीवन के अन्तिम दिनों में उस [illegible] जीवन, मन और आत्मा में किये [illegible] की बजाय उसके जीवन में [illegible] विश्वास और प्रेम का संचार होगा, उसके जीवन की सफलता उन्हें स्वर्ग की तरह सुन्दर मालूम होगी। मैं पूछती हूँ क्या यह स्वार्थ है? क्या यह ईसाई सन्यासियों जैसा पवित्र काम नहीं है?'

'अच्छा तो आपने सिर्फ काउन्ट की खातिर... सिर्फ ईसाई सन्यासिन की हैसियत से यह काम किया, क्यों?' [illegible] ने ताना मारा।

'मैं जानती हूं, तुम्हारे दिल में यह सवाल उठना कितना स्वाभाविक है। तुम्हारे दिल की बात भांपना मुश्किल नहीं है। शायद तुम्हारा ख्याल है कि काउन्ट की भलाई के साथ ही साथ इस स्कीम में मैंने जेजुएटों की तरह व्यक्तिगत स्वार्थ के दृष्टिकोण से भी सोचा था। मान लो अगर ऐसा ही हो तो ! हो सकता है, ये विचार मेरे मन में आए हों लेकिन वे खुद-बखुद ही आए थे। उसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं था। मैं जानती हू कि इतने खुले ढग से सब कुछ कबूल करते देखकर तुम्हें हैरानी हो रही है, लेकिन मैं तुमसे सिर्फ एक ही बात कहूंगी पावेल अलैक्जैंड्रो-विच, ज़ेना को इस झगड़े मे मत घसीटो ! वह तो कपोती की तरह पवित्र और मासूम है—वह हिसाब-किताब नहीं करती, वह तो सिर्फ प्यार करना जानती है। मेरी प्यारी बच्ची ! अगर कोई हिसाब-किताब करने वाला है तो वह मैं कहू। लेकिन पहले जरा सख्ती से अपने अन्त-रात्मा को टटोलो और मुझे बताओ, इन परिस्थितियो मे अगर मेरी जगह कोई और होता तो क्या हिसाब-किताब न करता ? ऊंचे से ऊंचे विचारो में भी, उन मामलों में भी जिनमें हमारा व्यक्तिगत स्वार्थ नही होता, हम अपनी भलाई देखते हैं, लेकिन जानबूझकर नहीं। अधिकाश लोग यह सोचकर अपने को धोखा देते हैं कि वे सिर्फ परोपकार की भावना से प्रेरित होकर यह काम कर रहे हैं। मैं अपने-आपको धोखा नहीं दे सकती। मैं मानती हूं कि अपने नेक उद्देश्यों के बावजूद भी मैंने हिसाब-किताब किया। लेकिन ज़रा सोचकर देखो—क्या मैं अपनी खातिर हिसाब-किताब करती हूं ? मुझे किसी चीज की जरूरत नही है, पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच, मैं अपनी जिन्दगी काट चुकी हू। मैंने अपनी प्यारी बच्ची की खातिर ऐसे नीच किस्म के हिसाब-किताब किए हैं—इन परिस्थितियो मे भला कौन मा मुझे दोष दे सकती है ?'

मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना की आखों में आसू छलछला आए। इन स्पष्ट घोषणाओं को सुनकर पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच असहाय और

धार्मिक भाव से काम चलाते जाना। आखिरकार वह कोमल दिल की तक नहीं कि कोई सा... अन्तर और भी दलिल तो नहीं दृष्टि है मारया अलेक्सेन्द्रोव्ना ! लेकिन, लेकिन आपने मुझे बताया कहा लिया था। और आपने मुझे बहाना भी दिया था—अब जरा बैठे इस पर गौर कीजिए। मैं बिल्कुल बेवकूफ बन गया हूं !'

'लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि मैंने तुम्हारा ध्यान नहीं रखा, मेरे प्यारे दोस्त ! बल्कि इस सारे हिसाब-किताब में तुम्हारा ही फायदा था कि इसी वजह से मैं यह सब कर रही।'

'मेरा फायदा ? यह कैसे ?' मोजग्ल्याकोव भ्रमित हो गया।

'हे ईश्वर ! क्या तुम सचमुच इतने भोले और अदूरदर्शी हो ?' मारया अलेक्सेन्द्रोव्ना ने अपनी आंखें छत तक उठाते हुए कहा, 'ओह, बच्चे, अज्ञानी ! शेक्सपियर की पुस्तकों में अपने-आपको दफनाने का यही नतीजा होता है, हम औरों के विचारों पर पलते हैं और कल्पना करते हैं कि हम जिन्दा हैं। मेरे अच्छे पावेल अलेक्सेन्द्रोविच, तुम पूछते हो कि इसमें तुम्हारा क्या फायदा है ? सफाई करने के लिए मुझे जरा निजी बातों का हवाला देने दो—जैसा तुमसे प्यार करती है इसमें शक की कोई गुंजायश नहीं। लेकिन मैंने देखा है कि तुम्हें चाहते हुए भी वह तुम्हारी भावनाओं पर अविश्वास करती है। मैंने देखा है कि कई बार, जैसे जान-बूझकर वह अपनी भावनाओं के प्रदर्शन पर संयम लगाकर तुमसे कठोरता बरतती है—यह ज्यादा सोचने और अविश्वास करने का फल है। तुमने भी यह बात देखी होगी, पावेल अलेक्सेन्द्रोविच।'

'हां देखी है, आज ही···लेकिन इन सब बातों से आखिर आप किस बात की भूमिका बांधना चाहती हैं ? मारया अलेक्सेन्द्रोव्ना ?'

'देखा, तुमने भी इस बात पर गौर किया है न ! तो मेरा ख्याल गलत नहीं था ! तुम्हारी नेकनीयती के प्रति भी उसके मन में अविश्वास है। मैं एक मां हूं—मैं अपनी बच्ची के दिल के रहस्यों को तो समझ

सकती हूं ! जरा कल्पना करने की कोशिश करो, अगर मैं उसे डांटती-
फटकारती, गालियां बकती हुई कमरे में घुसती, जिससे वह चिढ़ जाती
उसके दिल को चोट पहुंचती, उसका अपमान होता—और वह कितनी
पवित्र, खूबसूरत और स्वाभिमानी है—तो उसके मन में तुम्हारी बुराइयों
के बारे में जो शक है उसे मैं अनजाने में ही और भी पक्का कर देती
…'जरा सोचने की कोशिश करो, अगर तुम इस खबर को हलीमी से
दुःख और शोक के आंसुओं से, लेकिन आत्मा की उदात्त भावना से
सुनते तो…'

'हुह !'

'मुझे बीच में मत टोको, पावेल अलेक्जेंन्ड्रोविच ! मैं तुम्हारे मन
पर सारी तस्वीर जैसी है वैसी ज्यों की त्यों अंकित कर देना चाहती हूं
मान लो, अगर तुम उसके पास आकर कहते, 'जिनेदा, मैं तुम्हें अपने
प्राणों से भी अधिक चाहता हूं, लेकिन कुछ पारिवारिक कारण हम दोनों
को अलग किए हुए हैं। मैं इन कारणों को समझता हूं। वे तुम्हारी खुशी
के लिए हैं और मैं उनका विरोध करने का साहस नहीं रखता। जिनेदा
मैंने तुम्हें माफ कर दिया, अगर तुम सुखी रह सकती हो तो सुखी रहो'
और यह कहकर अगर तुम उसकी तरफ देखते, एक घायल हिरन की
दृष्टि से—तुम मेरा मतलब समझ गए होंगे—इन शब्दों की कल्पना
करो और सोचो। इन शब्दों का उसके दिल पर क्या असर पड़ता।'

'अच्छा, मारया अलेक्जेंन्ड्रोव्ना, मान लिया। मैं आपका मतलब
समझ गया—लेकिन अगर मैं यह शब्द कहता तो भी मुझे वहां से गर्दन
पकड़कर निकाल ही दिया जाता न !'

'नहीं, नहीं, मेरे दोस्त ! मुझे बीच में मत टोको ! मैं तुम्हें सारी
स्थिति, उसके सारे नतीजे भी समझाना चाहती हूं, ताकि तुम देख सको
कि स्थिति कितनी शानदार है। जरा कल्पना करने की कोशिश करो
कि बरसों बाद वेना से ऊंची सोसाइटी में तुम्हारी मुलाकात होती

तुम उसे किसी बालरूम में लिये हो जहाँ कि सारे बड़े रईसों के जगमगा रहे हैं, शानदार बाजा बज रहा है, कमरे में बड़ी तादाद और शानदार पोशाकें हैं, इस वातावरण के वातावरण में तुम बड़े, उदास किसी सभा के कोने खड़े हो, तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है तुम किसी गहरी सोच में डूबे हो (लेकिन तुम ऐसी जगह गये हो, यह तो मुझे देखा जा सकता है), जैसा इशारा कर रही है, तुम्हारी नजरें उस की खूबसूरती में उसका पीछा कर रही हैं। तुम्हारे आसपास दुनिया के नगीने की मनोहर रंग-बिरंगियां फैल रही हैं, अभी मोमबत्ती के सुनहरे प्रकाश- लेकिन सिर्फ तुम्हारा चेहरा पीला है, तुम्हारे मन में प्यार की आग सुलग रही है। तुम्हारा क्या ख्याल है, उस वक्त जेना क्या सोचेगी! किन नजरों से वह तुम्हें देखेगी ? वह सोचेगी—इस आदमी ने, जिसने मेरी खातिर सब कुछ कुर्बान कर दिया है, मेरी खातिर जिसका दिल टूट गया है, क्या मैं उसपर शक कर सकती हूं ? ···और यह स्वाभाविक ही है कि उसके दिल में भी सोया हुआ प्यार अपनी पूरी ताकत से फिर उमड़ आएगा !'

मारया अर्नेस्तोव्ना सांस लेने के लिए रुक गई। मोमबत्तियां फिर इतनी जोर से हिला कि उसके बोझ से कुर्सी चरमरा उठी। मारया अलेक्सेयेव्ना ने अपनी बात जारी रखी—

'काउन्ट की सेहत सुधारने के लिए जेना विदेश जाएगी, इटली, स्पेन—स्पेन जहां मेंहदी के पेड़ हैं, नीबुओं के कुञ्ज हैं, नीला आकाश है, गुआदालक्वीवीर है—प्यार का देश स्पेन जहां रहकर प्यार न करना नामुमकिन है। जहां गुलाब ही गुलाब है, जहां की हवा तक में चुम्बन बसे हैं। तुम भी जेना के पीछे-पीछे वहां जाओगे, तुम अपनी कामकाजी, रिश्तेदारी सब कुछ छोड़कर वहां जाओगे ! वहां तुम्हारे प्यार की ज्वाला दुर्दमनीय रूप से भड़क उठेगी। प्यार, यौवन, स्पेन, ओह ईश्वर! निश्चय ही तुम्हारा प्यार पवित्र और अकलुषित होगा, लेकिन तुम

दोनों आकुल दृष्टि से एक-दूसरे की आंखों में आंखें डालकर देखोगे। तुम मेरा मतलब समझ गए न, मेरे दोस्त ! इसमें शक नहीं कि कुछ ऐसे कमीने चालाक राक्षस भी होंगे जो कहेंगे कि तुम सिर्फ अपने एक बीमार बूढ़े रिश्तेदार की वजह से ही विदेश नहीं आए हो। मैंने जान-बूझकर तुम्हारे प्यार को पवित्र कहा है, क्योंकि ऐसे लोग निश्चित रूप से तुम्हारे प्यार के दूसरे अर्थ लगाएंगे। लेकिन मैं एक मां हूं, पावेल अलेक्जेंड्रोविच, तुम्हें मुझसे गलत काम करने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। निश्चय ही काउन्ट इस हालत में नहीं होंगे कि तुम दोनों पर निगरानी रख सकें, लेकिन उससे क्या होता है? क्या यह भी कमीने किस्म की बदनामी का कोई आधार है ? आखिरकार काउन्ट अपने भाग्य को सराहते हुए इस संसार से चले जाएंगे। मुझे यह बताओ कि तब ज़ेना अगर तुमसे नहीं तो फिर किससे शादी करेगी ? तुम काउन्ट के इतने दूर के रिश्तेदार हो कि ज़ेना से तुम्हारी शादी में किसीको ऐतराज़ नहीं होगा। वह जवान, धनी और सम्मानित काउन्टेस होगी ! शादी के लिए वह वक्त कैसा शानदार रहेगा ! ऐसा वक्त जबकि फैशनेबल सोसाइटी का हर रईस ज़ेना से शादी करने में गर्व का अनुभव करेगा। उसके प्रभाव के ज़रिए ऊंचे से ऊंचे वर्ग में तुम्हारी पूछ होगी और तुम्हें फौरन कोई महत्त्वपूर्ण ओहदा मिल जाएगा और तुम्हारी तरक्की होगी। इस वक्त तुम्हारे पास सिर्फ डेढ़ सौ भूमिदास हैं, लेकिन तब तुम धनी हो जाओगे। काउन्ट अपनी जायदाद में तुम्हारे लिए भी कुछ न कुछ छोड़ जाएंगे, इसकी ज़िम्मेदारी मुझपर छोड़ो, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ज़ेना को तुम्हारी भावनाओं में विश्वास हो जाएगा और तुम सहसा उसकी नज़रों में नेकी और आत्मत्याग के प्रतीक बन जाओगे। और तुम पूछते हो कि इसमें तुम्हारा क्या फायदा है ? वाह, तुम अन्धे हो ! अगर तुम इस फायदे को नहीं देख सकते, तो तुमसे सिर्फ कुछ ही कदम दूर रह गया है और चिल्ला-चिल्लाकर कह

रहा है : लो मैं हूं, तुम्हारा फायदा ! पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच, ओह पा अलैक्जैन्ड्रोविच !'

'मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना !' मोज़ग्ल्याकोव बेहद द्रवित हो ग या, 'अब मेरी समझ में सारी बात आ गई है ! मैं निरा पशु हूं, उस घृणित पशु !'

उछलकर उसने अपने बाल नोच लिए।

'तुमने अविवेक से काम लिया है—बहुत ज्यादा !' मारया अलैक ज़ैन्ड्रोव्ना ने टिप्पणी जोड़ी।

'मैं गधा हूं, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना !' मोजग्ल्याकोव निराशा चिल्लाया, 'अब सारा खेल खत्म हो गया है, सिर्फ इस वजह से क्यों मैं उसके प्यार में पागल था !'

'शायद सारा खेल खत्म नहीं हुआ है,' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने धीरे से कहा, जैसे वह कुछ सोच रही हो।

'ओह, काश यह मुमकिन होता ! मेरी मदद कीजिए ! मुझ बताइए मैं क्या करूं ! मुझे बचाइए !'

और मोजग्ल्याकोव रोने लगा।

मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर दयालु स्वर में कहा, 'मेरे दोस्त, तुम अपने प्यार की तीव्रता से उत्तेजित थे, इसी लिए तुमने ऐसा व्यवहार किया; तुम क्या कर रहे थे, इसका आभास तक तुम्हें नहीं था। जेना को भी यह समझाया जा सकता है !'

'मैं उसके प्यार में पागल हूं, उसकी खातिर मैं सब कुछ कुर्बान कर सकता हूं !' मोजग्ल्याकोव चिल्लाया।

'बेफिक्र रहो, उसकी नजरों में मैं तुम्हें ठीक सही साबित कर दूंगी !...'

'ओह मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना !'

'हां, मैं इस बात का जिम्मा लेती हूं ! मैं तुम्हें उसके पास ले

लूगी। तुम उनके सामने वही बातें कहना जो मैंने तुम्हें समझाई हैं।'

'ओह, आप कितनी दयालु हैं, मारया अलेक्जेन्ड्रोव्ना! लेकिन—या यह फौरन इसी वक्त नहीं हो सकता!'

'ईश्वर बचाए! तुम कितने अनुभवहीन हो, मेरे दोस्त! वह इतनी स्वाभिमानी है! वह समझेगी उसका और भी अपमान किया जा रहा है! उसके दिल को चोट पहुंचेगी। कल मैं सब कुछ समाल लूंगी। इस वक्त यहा से चले जाओ—उस व्यापारी के यहा अगर तुम्हे पसन्द हो तो—आज शाम को लौट आना, वैसे मैं सोचती हू कि तुम्हारा आज लौटना उचित नहीं होगा।'

'मैं जाता हू! जाता हू! हे ईश्वर! आपने मुझे मेरी जिन्दगी लौटा दी! लेकिन एक सवाल और है—मान लीजिए कि काउन्ट इतनी जल्दी न मरे तो!'

'हे ईश्वर, तुम कितने सीधे हो, मेरे प्यारे दोस्त! वाह, हमे ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे काउन्ट को चिरायु करें, इस नेक, वीर, शरीफ और प्यारे आदमी की लम्बी उम्र के लिए हमे पूरे दिल से ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। सबसे पहले मैं दिन-रात आंखो मे आंसू भर-कर यह प्रार्थना किया करूंगी, अपनी बेटी की खुशी के लिए! लेकिन अफसोस की बात है कि काउन्ट की सेहत बहुत खराब मालूम होती है और अब उन्हें राजधानी मे जाना पड़ेगा, जेना को सोसाइटी मे ले जाने के लिए। मुझे डर है, आह! मुझे डर है कि कहीं इसीमे उनका दम न निकल जाए! लेकिन—प्यारे दोस्त, हम उनकी लम्बी उम्र के लिए प्रार्थना करते रहेंगे—बाकी तो ईश्वर के हाथो मे है। तुम जाना ही चाहते हो? ईश्वर तुम्हारा भला करे, मेरे अज़ीज़! उम्मीद रखो, दुःख सहन करो और बहादुर बनो, सबसे बडी बात तो यह है कि बहादुर बनो! तुम्हारी नेकी के प्रति मेरे मन में कभी भी सन्देह नहीं हुआ।'

मारया अलेक्जेन्ड्रोव्ना ने हार्दिकता से उसका हाथ दबाया, और

वह पंजों के बल कमरे से बाहर चला गया।

[illegible] दरवाजा बंद होने की आवाज हुई। अब कॉर्डेलो ने अपने [illegible] मारथा अर्वेवंडोव्ना से जितना जल्द हो सका।

दरवाजा खुला और झेन्या अंदर दाखिल हुई। इस बार उसका चेहरा दूधिया सा सफेद हो गया था। उसकी आंखें चमक रही थीं।

मां, जल्दी इस किस्से को खत्म करो, वरना मैं और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकूंगी। यह सारी बात इतनी कमीनी और तुच्छ है कि ऐसा मन करता है भाग जाने को करता है। मुझे बताओ नहीं ! मुझे बताओ नहीं ! मैं सब जान गई हूं, सब सुन लिया, इन सारी बातों से मैं डर गई हूं।'

'झेन्या ! क्या बात है मेरी प्यारी बच्ची ? क्या तुम—दिलेर सब कुछ सुनती रही हो ?' मारथा अर्वेवंडोव्ना ने एक बिल्कुल अकर्मण्डी दृष्टि झेन्या पर डालते हुए पूछा।

'हां, मैंने सब कुछ सुना है। शायद तुम उस बेवकूफ की तरह मुझे भी लालच देना चाहोगी ! सुनो ! मैं कसम खाकर कहती हूं कि अगर तुम मुझे इसी तरह सताती रहीं और इस नीचतापूर्ण कमिटी में हर किस्म के कमीने रोल खेलने पर मजबूर करती रहीं तो मैं इन सारी स्कीम को एक ही बार में खत्म कर दूंगी। तुम्हारे लिए इतना ही काफी है कि मैं अपनी मौत के लिए तैयार हो गई हूं ······मुझे कुछ अपना पता नहीं था। इस सडांद से मेरा दम घुटा जा रहा है······'

झेना जोर से दरवाजा बन्द करके कमरे से बाहर चली गई।

मारथा अर्वेवंडोव्ना ने उसके पीछे एक स्थिर दृष्टि डाली और कुछ क्षणों के लिए किसी गहरी सोच में डूब गई।

सहसा वे सचेत होकर बोलीं, 'मुझे जल्दी करनी चाहिए ! असली खतरा तो झेना से ही है, बहुत बड़ा जोखिम, और कहीं वे सारे बहरी हमपर टूट पड़ें ! अगर उन्होंने सारे शहर में यह खबर फैला दी—तो

न्होंने निश्चय ही फंसा दी है—तो सारा खेल खत्म हो जाएगा। ज़ेना ; यह बदनामी बर्दाश्त नहीं होगी और वह पीछे हट जाएगी। काउन्ट ने हर कीमत पर और फौरन ही देहात में पहुंचा देना चाहिए। पहले ों खुद वहां जाकर अपने अहमक घरवाले को यहां पकड़ लाती हूं। अाखिर वह किसी न किसी काम तो आएगा ही, मेरे लौटने तक काउन्ट की नींद पूरी हो चुकी होगी और हम यहां से चल देंगे।'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने घंटी बजाई।

'गाड़ी तैयार है?'

'गाड़ी तो बहुत देर से तैयार खड़ी है', अर्दली ने जवाब दिया।

गाड़ी तो उसी वक्त से तैयार थी जब मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना काउन्ट को सहारा देकर ऊपर ले गई थी।

वे बाहर आने की पोशाक पहनकर तैयार हो गईं और ज़ेना को अपने निश्चय की रूपरेखा बताने के लिए और कुछ आदेश देने के लिए वे उसके कमरे में गईं। लेकिन ज़ेना ने बात तक न सुनी। वह अपने पलंग पर तकियों में चेहरा छिपाकर लेटी थी, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे और वह अपने सफेद हाथों से अपने खूबसूरत लंबे बालों को नोच रही थी। उसकी बाहें कुहनियों तक नंगी थीं। वह रह-रहकर कांप रही थी, जैसे उसे बहुत ठंड लग रही हो। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने बोलना शुरू किया, लेकिन ज़ेना ने अपना सिर तक ऊपर नहीं उठाया।

कुछ देर ज़ेना के सिरहाने खड़े रहने के बाद मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अप्रतिभ होकर वहां से चली गईं। शायद वे समय की कमी सरगर्मी से पूरा करना चाहती थीं। गाड़ी में बैठकर उन्होंने कोचवान से घोड़ों को तेज़ भगाने के लिए कहा।

वे मन ही मन सोच रही थीं, 'ज़ेना ने सब कुछ सुन लिया, यह बहुत बुरा हुआ। जिन शब्दों से मैंने ज़ेना को समझाया था, ऐन वही शब्द मैंने मोज़ग्ल्याकोव के सामने भी इस्तेमाल किए थे। वह स्वाभिमानी लड़की

[illegible]

[illegible]

१०

गाड़ी बढ़ी जा रही थी। हम पहले ही कह चुके हैं कि सुबह के वक्त जब मारता अर्केदेईवोव्ना शहर की गलियों में काउन्ट का पीछा कर रही थी, तो उसके मन में बड़ा शानदार विचार उठा था। हमने पाठकों से वादा किया था कि उचित समय आने पर हम इस विचार का जिक्र करेंगे। लेकिन पाठकों को पहले से ही सब कुछ मालूम हो चुका है। मारता अर्केदेईवोव्ना ने सोचा था कि वे काउन्ट को पकड़कर अन्त में अपने गांव में ले आएंगी यहां अजनबी फालर्डिय निश्चिन्त होकर जिन्दगी काट रहे थे। हम यह छिपाने की कोशिश नहीं करेंगे कि मारता अर्केदेईवोव्ना के मन में एक अजब-सी चिन्ता छाई थी। सचमुच के शूरवीरों के मन में भी ऐसी बेचैनी छा जाती है, खास तौर पर उन क्षण जब वे अपनी सफलता की मंजिल के निकट पहुंच जाते हैं। मारता अर्केदेईवोव्ना ने अपनी सहज वृत्ति से फौरन भांप लिया कि अब मोर्दो-

सोच में रहना उनके लिए खतरनाक होगा। वे मन ही मन दलील दे रही थीं, 'बस मैं एक बार देहात में पहुंच जाऊं, फिर चाहे सारा शहर सिर के बल खड़ा हो जाए, मेरी बला से—'

लेकिन देहात में भी ज्यादा देर रुकने का वक्त नहीं था। इस बीच कुछ भी हो सकता था, हालांकि हमारी वीरांगना के दुश्मनों द्वारा फैलाई गई इस अफवाह में हमें बिलकुल यकीन नहीं कि उन्हें इस वक्त पुलिस के हस्तक्षेप का डर था। संक्षेप में, हम कहेंगे कि वे जान गई थीं कि ज़ेना और काउन्ट की शादी जल्द से जल्द हो जानी चाहिए। गांव का पादरी उनके घर में आकर शादी की रस्म करवा सकता है। शादी परसों और अगर जल्दी ज़रूरत पड़ी तो कल भी हो सकती है। इससे पहले भी सिर्फ दो घंटों का नोटिस देकर शादियां हो चुकी हैं, काउन्ट को आसानी से समझाया जा सकता है कि शालीनता का तकाज़ा है कि बिना धूमधाम और जश्न के शादी की रस्म अदा की जाए। शादी का यह तरीका ज्यादा फैशनेबल और सही है। अगर ज़रूरत पड़ी तो सारे मामले को रोमांटिक दृष्टिकोण से पेश किया जा सकता है जिससे काउन्ट के मन के कोमलतम तार झंकृत हो उठें। अगर कोई तरकीब कारगर नहीं हुई तो काउन्ट को शराब पिलाकर मदहोश किया जा सकता है और फिर चाहे जो कुछ हो, ज़ेना काउन्टेस बन जाएगी। मान लो कि पीटर्सबर्ग या मास्को में, जहां काउन्ट के रिश्तेदार हैं, इस किस्से की चर्चा हुई तो—मारया अलेक्जैंड्रोव्ना ने यह कहकर अपने-आपको तसल्ली दी कि अव्वल तो वहां तक खबर पहुंचेगी ही नहीं होगी, दूसरे यह कि ऊंची सोसाइटी में कोई भी काम बिना बदनामी के नहीं हो पाता, खास तौर पर ब्याह-शादी। 'गोले क्रिस्तो' और 'मेमोयर्ज़ डू दियाबल' की घटनाओं की तरह इस किस्से की भी ऊंची सोसाइटी में चर्चा होगी, और यह एकदम निराली और चमत्कारपूर्ण बात होगी। मारया अलेक्जैंड्रोव्ना को यह भरोसा भी था कि ज़ेना के सोसाइटी में दाखिल होने की देर है कि अपनी

[illegible] को [illegible] से वह [illegible] का [illegible] कर देगी और [illegible]
[illegible] की [illegible] और [illegible] करने का [illegible] भी [illegible]
[illegible] का [illegible] लिए [illegible] के बारे नहीं दिया [illegible]
[illegible] [illegible] है। [illegible] के [illegible]
[illegible] अजनबी [illegible] को ले के [illegible] रही है,
क्योंकि इन [illegible] की [illegible] के लिए अजनबी [illegible] है
[illegible] [illegible] थी। डाक्टर से अगर कहा जाता कि है
अजनबी [illegible] के लिये [illegible] के [illegible] भी कर दें,
लेकिन अगर अजनबी [illegible] डाक्टर को बनाने के लिए नि-
[illegible] कर दें तो बात दूसरी हो जाएगी। और फिर अगर हाई और
[illegible] बड़े बूढ़े और [illegible] कहेंगे कि वे डाक्टर के बारे में
खबर सुनकर उससे मिलने आए हैं, तो इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा,
डाक्टर के अहंकार की भी तुष्टि होगी। इससे [illegible] और [illegible]
निमन्त्रण को ठुकराना डाक्टर के लिए मुश्किल होगा। आखिरकार
गाड़ी ने सफर का आखिरी मील भी तय कर लिया और कोचवान
पोलोन ने लकड़ी की बनी एक-मंजली इमारत के लम्बे पोर्च के आगे
पहुंचकर घोड़ों को रोका। मकान टूटी-फूटी हालत में था और बहुत
पुराना होने के कारण मटमैला-सा हो गया था। उसमें खिड़कियों की
लम्बी कतार थी और चारों तरफ पुराने नींबू के पेड़ थे। यही मारया
अलैक्सेयेव्ना का देहात का मकान था, जिसमें आकर वे गर्मियां
गुजारती थीं। खिड़कियों से रोशनी नजर आ रही थी।

'कहां है वह अहमक !' मारया अलैक्सेयेव्ना ने तूफान की तरह
घर में दाखिल होते हुए कहा, 'यह तौलिया यहां किस लिए पड़ा है?
कहां! वह अपना बदन पोंछ रहा था! फिर हम्माम में गया था?
और हमेशा की तरह चाय गटक रहा है? मेरी तरफ इस तरह आंखें
फाड़कर क्यों देख रहे हो, बेवकूफ! इसके बाल क्यों नहीं काटे गए?

रका ! ग्रिश्का ! ग्रिश्का ! तुमने मालिक के बाल क्यों नहीं काटे, था कि मैंने तुम्हें पिछले हफ्ते कहा था ?'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने तय किया था कि वह अफानासी मातविच अधिक शिष्टतापूर्वक पेश आएगी, लेकिन यह देखकर कि अफानासी मातविच अभी नहाकर आया था और मज़े से चाय की चुस्कियां ले रहा था, वे अपने गुस्से पर काबू न पा सकीं। बाह, वे खुद इतनी भगदड़ और परेशानी में हैं और वह निकम्मा अफानासी मातविच, जिसे लोक-व्यवहार का कोई ज्ञान नहीं, मज़े में बैठा है। इस अन्तर को देखकर वह गुस्से से आगबबूला हो उठीं। उधर वह अहमक या हम शिष्ट भाषा में कहें कि जिस व्यक्ति को यह पदवी दी गई थी, समावार के पास बैठा था। उसका मुंह आश्चर्य से खुला रह गया था और आंखें मूर्खतापूर्ण भय से बाहर निकली हुई थीं। वह अपनी पत्नी की तरफ इस तरह आंखें फाड़कर देख रहा था, जैसे उन्हें देखते ही उसके पैरों तले जमीन खिसक गई हो। फूहड़ ग्रिश्का दरवाजे में ऊंघ रहा था और इस सारे दृश्य को आंखें झपकाकर देख रहा था।

ग्रिश्का ने भर्राई आवाज़ में जवाब दिया, 'मैं इनके बाल काटना चाहता था, लेकिन इन्होंने बाल कटवाने से इन्कार कर दिया। मैं कैंची लेकर इनके पास गया। मैंने कहा . मालकिन किसी भी वक्त यहां आ सकती हैं, तब हम दोनों की शामत आएगी, हम क्या करेंगे ? ये कहने लगे : इतवार तक रुक जाओ तब तक बाल कुछ लम्बे हो जाएंगे।'

'क्या कहा ? लम्बे बाल ? तो तुम्हारा ख्याल था कि मेरी अनुपस्थिति में तुम बाल बढ़ा लोगे ! न जाने इसके बाद तुम कौन-सी करतूत पर तुले हो ! और तुम्हारा ख्याल है कि लम्बे बाल तुम्हारे जैसे अहमकों के सिर पर अच्छे लगेंगे ! हे ईश्वर, कैसी मुसीबत है ! यह बदबू कैसी आ रही है ? मैं तुमसे पूछ रही हूं—राक्षस, यह बदबू कैसी है ?' पत्नी ने बेचारे अफानासी मातविच के नज़दीक बढ़ते हुए पूछा, जिसके होश-

इसका मतलब स्पष्ट ही है न।

'मानी [illegible] माई — डियर,' यह के करवट बदल के अपनी कुर्सी से उठ [illegible] और उसका [illegible] दृष्टि से अपने वाक्य को पूरा किया।

"मैं कितनी बार तुम्हें समझाने की कोशिश की है कि मैं तुम्हें [illegible] नहीं हूं, तब समझो ! [illegible] और ! एक समय ऐसा था, जिसकी वजह तुम्हारे पैरों तले के साथ नहीं [illegible] उसी [illegible] से है, इस बात से तुम्हें कुछ शर्म नहीं आती ?'

'लेकिन मारया अलेक्सेईव्ना, तुम मेरी व्याख्या क्यों [illegible] यह—वाहियात लोगों का तरीका है !' अफनासी अर्काद्येविच ने [illegible] हुए कहा और अपने कानों को बचाने के लिए दोनों हाथ ऊपर [illegible] लिए।

'छि, तुम्हारी सूरत कितनी गन्दी है ! बकरी के कुत्ते ! [illegible] पानी ! आजकल व्याहता पत्नियों को कह क्या कौन करता है ? ऐसे बेवकूफी-भरा अवाज मैंने कभी नहीं सुना ! जरा सोचो तो, अभी [illegible] हटी में अगर कोई इस कमीने पुलिस शब्द का इस्तेमाल करे ! और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मुझे याद दिलाओ कि मैं तुम्हारी पत्नी हूं, जब कि मैं हमेशा इस बात को भूलने की कोशिश करती हूं। तुम अपने हाथों से अपना चेहरा किस लिए ढाप रहे हो ? जरा इन कानों के बालों को तो देखो ! पानी चू रहा है ! ये तो तीन घण्टे तक नहीं सूख सकते ! मैं इसे अपने साथ कैसे ले जा सकूंगी ? लोगों के सामने कैसे ले जाऊंगी ? हाय, अब मैं क्या करूं ?'

मारया अलेक्सेईव्ना गुस्से में हाथ मलती हुई कमरे में चक्कर काटने लगीं। यह कोई ऐसी बड़ी आफत नहीं थी, लेकिन मारया अलेक्सेईव्ना अपनी अत्याचारी और निरंकुश प्रवृत्ति पर काबू नहीं पा सकती थीं। वे हमेशा अफनासी माटविच पर अपना गुस्सा उंडेलना चाहती थीं, क्योंकि अत्याचार करने की प्रवृत्ति एक ऐसी आदत है जो

मन में कभी तृप्त न होने वाली भूख जगा देती है। इसके अलावा सब जानते हैं कि एक खास श्रेणी की सुसंस्कृत महिलाएं एकान्त में किस तरह व्यवहार करती हैं, मैं इसी तरह की एक मिसाल पाठकों के सामने रखना चाहता था। अफानासी मातविच भयभीत होकर अपनी पत्नी की हर गतिविधि को देख रहा था और उसके पसीने छूट रहे थे।

'ग्रिश्का ! अपने मालिक को फौरन कपड़े पहनाओ ! कोट, पतलून, सफेद टाई, वास्कट—जल्दी करो ! इनका हेयर-ब्रश कहां है ?'

'लेकिन मैं अभी नहाकर आया हूं माई डियर ! अगर मैं बाहर गया तो मुझे सर्दी लग जाएगी !'

'नौनसेन्स ?'

'लेकिन मेरे बाल गीले हैं।'

'हम उन्हें जल्द सुखा देंगे ! ग्रिश्का, ब्रश लाकर इनके बालों पर फेरो—जब तक सूख न जाए जोर से ! और जोर से ! शाबाश, इस तरह !'

मालकिन द्वारा प्रोत्साहन पाकर स्वामिभक्त और उत्साही ग्रिश्का ने मालिक को दोनों कंधों से पकड़ लिया और सोफे पर धकेलकर जोर से ब्रश फेरने लगा। अफानासी मातविच सिहर उठा और उसकी आंखों में आंसू आ गए।

'इधर आओ ! इन्हें उठाओ ग्रिश्का ! पोमेड किधर है ? सिर ऊपर उठाओ, निकम्मे आदमी ! सिर ऊपर उठाओ ! ओक !'

और मारया अलेक्जेंद्रोवना अपने हाथों से पति के मोटे उलझे हुए बालों में बेरहमी से पोमेड मलने लगीं—अफानासी मातविच सोच रहा था कि बालों को कटवा देना कहीं बेहतर था। हांफते-फुफकारते हुए अफानासी मातविच ने धैर्यपूर्वक यह ऑप्रेशन बर्दाश्त कर लिया।

'तुम चिमगादड़ की तरह मेरा खून पीते हो गदे आदमी ! नीचे झुको !' उसकी पत्नी बोली।

'तुम्हारा मतलब मैं [illegible] हूँ, माई डियर ?' पति ने पूछी [illegible]
मुस्कराकर पूछ रहा।

बकवास ! उसका भी नहीं समझते ! अब हमेशा के लिए [illegible]
तुम इन्हें कभी पहचाना करोगी !'

दूसरी कोठरी में एक आरामकुर्सी पर बैठ गई और देखने [illegible]
अफनासी मातविच को किस तरह करके परमानन्द आ रहे हैं। [illegible]
होश आ गया था और अब टाई बांधने की बारी आई तो उन्हें
किस तरह बांधनी चाहिए इसपर अन्तिम राय देने का [illegible]
कोट पहनने के बाद उनका मिजाज खुश हो गया और वह बड़े [illegible]
के शीशे में अपनी सूरत देखने लगा।

'मुझे कहां ले जा रही हो, मारफा अर्खेबैड्रोवना ?' पति ने [illegible]
स्वर में पूछा।

मारफा अर्खेबैड्रोवना को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

'जरा सुनो तो सही ! अरे ओ ममी[1] ! तुम्हारी इतनी हिम्मत [illegible]
मुझसे पूछो, मैं तुम्हें कहां ले जा रही हूं ?'

'लेकिन माई डियर—मैं जानना चाहता हूं।'

'खामोश ! तुमने फिर मुझे माई डियर कहा, खास तौर पर [illegible]
हम बाहर जा रहे हैं ! तुम्हें पूरा महीना चाय नहीं मिलेगी।'

भयभीत पति खामोश हो गया।

'ऊंह, तुम्हारे पास एक भी तमगा नहीं है, क्यों ?' मारफा अर्खे[illegible]
ड्रोवना ने तिरस्कारपूर्वक पति के काले कोट को देखते हुए कहा।

यह अफानासी मातविच की बर्दाश्त से बाहर की बात थी।

'बड़ा अफसर तमगे देता है माई डियर ! और मैं मुझीक[2] नहीं [illegible]
काउंसिलर हूं !' ओजस्वी क्रोध के आवेश में पति बोला।

'क्या ? क्या ? तो तुम्हें बहस करना भी आ गया है, क्यों ? तुम [illegible]

१. मसाला लगाकर सुरक्षित रखी गई लाश २. रूसी किसान।

फौरन व्यंग्यभरी मुस्कराहट से जवाब देना। जानते हो व्यंग्यभरी मुस्कराहट का क्या अर्थ होता है ?'

'तीक्ष्ण बुद्धि—है न !'

'अहमक, मैं तुम्हे तीक्ष्ण बुद्धि का मतलब समझाती हूं ! भला तुमसे भी किसीको तीक्ष्ण बुद्धि की उम्मीद हो सकती है ! इसका अर्थ है व्यंग्यभरी मुस्कराहट, समझ गए—तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट।'

'आह।'

'ओह बेवकूफ आदमी ! यह जरूर मेरी बेइज्जती करवाएगा !' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना अपने-आपसे फुसफुसाई, 'यह आदमी मेरा खून पीने पर तुला हुआ है। अब मैं सोचती हू कि इसे साथ नही लाना चाहिए था।'

इस तरह सोचती, कुढ़ती और बिगड़ती हुई मारया अलैक्जैंड्रोव्ना गाडी की खिडकी से बाहर देख रही थी और कोचवान को और भी तेजी से गाड़ी चलाने का आदेश दे रही थी। घोड़े तेजी से भाग रहे थे, लेकिन मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को रफ्तार धीमी मालूम होती थी। अफानासी मातविच खामोश एक कोने में बैठे हुए मन ही मन अपना सबक याद कर रहा था। आखिरकार गाडी शहर की सड़कों मे दाखिल हुई और आकर मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के घर के आगे खड़ी हो गई। लेकिन हमारी हीरोइन अभी गाड़ी से उतरी भी नहीं थी जब उन्हें दो घोड़ों वाली एक बन्द स्लेज गाडी दिखाई दी। यह वही गाड़ी थी, जिसमें अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा अक्सर बाहर जाती थीं। गाड़ी मे दो सीटें थी और इस वक्त वहां दो महिलाएं बैठी थीं, एक तो अन्ना निकोलाईव्ना खुद थी, दूसरी नतालिया दमित्रीव्ना थी जो हाल ही में उसकी पक्की सहेली और शिष्या बन गई थी। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना का दिल डूबने लगा, लेकिन अभी वे कुछ कहने भी न पाई थी कि एक दूसरी बंद स्लेज गाड़ी आ गई। उल्लासपूर्ण आवाजें सुनाई दीं।

'मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ! और अफानासी मातविच भी। आप

यहां ? कहां से आ रहे हैं ? कैसी अच्छी बात है। हम लोग तो पूरी शाम गुजारने यहां आए हैं। आपको देखकर कितना ताज्जुब हुआ।'

सारी औरतें पोर्च की सीढ़ियों पर चिड़ियों की तरह चहकती हुई चढ गईं। मारया अलेक्जेंड्रोव्ना अपनी आंखों और कानों पर विश्वास नहीं कर सकीं।

'इनका सत्यानाश हो ! इसके पीछे जरूर कोई साजिश है। मुझे इसका पता लगाना चाहिए। तुम मुझे मात नहीं दे सकतीं, बच्चियो ! देखो, मैं क्या करती हूं !'

११

जाहिरा तौर पर मोज़ग्ल्याकोव मारया अलेक्जेंड्रोव्ना के यहां से सान्त्वना और प्रेरणा लेकर लौटा था। उसे एकान्त की जरूरत थी, इसलिए वह बोरोदुएव के यहां नहीं गया। भीतर उमड़ते हुए ओजपूर्ण और रोमांटिक सपनों की बाढ़ ने उसके मन को अशान्त कर दिया था। वह एक गम्भीर दृश्य की कल्पना कर रहा था, उसके क्षमापूर्ण हृदय से आंसू निकल रहे हैं, पीटर्सबर्ग के किसी बाल डांस में उसका चेहरा शोक से पीला पड़ गया है, स्पेन, गुआदलकीविर, प्यार, मरणासन्न काउन्ट ने दोनों प्रेमियों के हाथ एक-दूसरे को पकड़ा दिए हैं। फिर जेना जैसी खूबसूरत लड़की से उसकी शादी होगी, जो उसे बेहद चाहेगी और उसकी बहादुरी और सुसंस्कृत व्यक्तित्व को देखकर चकित रह जाएगी। काउन्ट की विधवा जेना से शादी करने के बाद ऊंची सोसाइटी की कोई काउन्टेस भी गुप्त रूप से उसे चाहने लगेगी, फिर उप-गवर्नर का ओहदा, पैसा—

मकोव में मार्या अलेक्सांद्रोवना ने जिन चटकीले रंगों में उसके भविष्य को चित्रित किया था, उन चित्रों ने मोजग्ल्याकोव के आनन्दप्रद मनो-गगनाकार फुला डाला था और उसके अहंकार को प्रोत्साहन दिया था। लेकिन फिर भी, मैं नहीं जानता यह कैसे हुआ, जब उसका मन इन हुले-ल्लार से ऊब गया तो इस ख्याल ने आकर उसके रंग में भंग डाल दिया कि ये सब भविष्य की बातें हैं उसकी वर्तमान स्थिति तो नितान्त हास्यास्पद है। जब उसे यह ख्याल आया तो उसने देखा कि वह टहलता हुआ बहुत दूर मोर्दासोव की अपरिचित बस्तियों में चला आया है। अंधेरा हो चला था, गलियों में, जहां दोनों तरफ धरती में धंसे हुए छोटे मकानों की कतारें थीं, कुत्ते भौंक रहे थे। छोटे शहरों में, खास तौर पर उन मुहल्लों में, जहां न चोरी करने की, न चोरी से बचने की कोई चीज होती है, ऐसे कुत्तों की भरमार रहती है। बर्फबारी हो रही थी। कभी-कभी कोई दुकानदार, जिसे घर लौटने में देर हो गई थी या पोस्तीन का कोट और ऊंचे बूट पहने कोई औरत पास से गुजर जाती थी। इन सब बातों से न जाने क्यों पावेल अलेक्सांद्रोविच को चिढ़ हो रही थी—यह खतरनाक लक्षण था, क्योंकि अच्छी हालत में सब चीजें आकर्षक और इन्द्रधनुष जैसी रंगीन दिखाई देती हैं। पावेल अलेक्सांद्रोविच को इस बात की याद आए बगैर न रह सकी कि अभी तक तो मोर्दासोव में उसी की तूती बोलती थी। जहां भी वह जाता था लोग उसे 'दूल्हा' कहकर बधाई देते थे, जिसे सुनकर उसे बड़ी खुशी होती थी। उसे अपने 'दूल्हा' होने पर अभिमान था, लेकिन अब अचानक वह सब लोगों की आंखों में ठुकराए हुए प्रेमी के रूप में आएगा। सब लोग उसकी हंसी उड़ाएंगे। जो भी हो, वह लोगों को अपनी असली स्थिति के बारे में नहीं समझा सकेगा, न ही उनसे पीटर्सबर्ग के बॉलडांसों की, खम्भों की और स्पेन की बातें कर सकेगा। इस तरह सोच, कुढ़न और परेशानी के बीच उसके मन में आखिर एक ऐसा विचार उठा जो धुंधले रूप में बहुत देर से उसके

दिमाग में चक्कर काट रहा था। मान लो सारी बातें झूठ साबित हुईं, मान लो अवर मारया अलैक्जेंड्रोवना के दिखाए सब्ज बाग ज्यों के त्यों रह गए। वह इस बात को नहीं भूल सका कि मारया अलैक्जेंड्रोवना बड़ी चालाक औरत है और चाहे सब लोग उसकी इज्जत करते हैं, फिर भी वह पक्की चुगलखोर है और सुबह से लेकर शाम तक झूठ बोलती रहती है···हो सकता है कि उसने किसी खास कारण से मोज़ग्ल्याकोव से पिंड छुड़ाने के लिए सारी बातें की हों और फिर सब्ज बाग दिखाने में लगता ही क्या है? उसे ज़ेना का भी ख्याल आया। विदाई के वक्त ज़ेना ने उसे जिस नजर से देखा था, उसमें कहीं प्यार या आकर्षण का संकेत तक न था। इस बात से उसे याद आया कि भविष्य में चाहे कुछ हो, लेकिन एक घंटे पहले ही उसने अपने कानों से मारया अलैक्जेंड्रोवना के मुह से अपने लिए 'मूर्ख' शब्द सुना था। इस याद से उसकी विचार-धारा एकदम रुक गई और उसका चेहरा अपमान की यन्त्रणा से लाल हो गया। उसकी आंखों में आंसू आ गए। सबसे बड़ी बात यह हुई कि अगले ही क्षण एक अप्रिय घटना हुई—उसका पैर फिसल गया और वह लकड़ी के तख्तों से बने रास्तों से फिसलकर बर्फ में जा गिरा—इसी वक्त कुत्तों के एक झुंड ने, जो बहुत देर से भौंकते हुए उसका पीछा कर रहे थे, आकर चारों तरफ से उसपर हमला बोल दिया। सबसे छोटा कुत्ता, जो सबसे ज्यादा तेज था, आकर उसके कोट को दांतों से चबाने लगा। कुत्तों को किसी तरह भगाकर, ज़ोर से गालियां बकता हुआ और अपनी किस्मत को कोसता हुआ पावेल अलैक्जेंड्रोविच अपना फटा कोट और आत्मा में असह्य अवसाद की भावना लेकर सड़क के एक कोने में आकर खड़ा हो गया, तभी उसे पता चला कि वह रास्ता भूल गया है। यह सब जानते हैं कि अपरिचित मुहल्ले में, खास तौर पर रात के वक्त अगर कोई रास्ता भूलकर आ जाए तो वह सीधी सड़क पर चलने की बजाय किसी अदृश्य शक्ति से प्रेरित होकर हर गली के

मोड़ पर पहुंचा जाता है। यह तरीका अपनाकर पावेल अलेक्सान्द्रोविच एकदम गुस्सा भूल गया। 'जहन्नुम में जाएं ये ऊंचे विचार!' उसने मन में थूक दिया। 'श्रीमान तुम लोगों से समझे! भाड़ में जाएं तुम्हारी सुकुमार भावनाएं और रोना!' उस समय मोज्ग्ल्याकोव का जो हुलिया था उसे मैं हरगिज [illegible] नहीं कर सकता। आखिरकार थका-मांदा, दो घंटे भटकने के बाद वह सहसा मारया अलेक्सान्द्रोव्ना के घर के आगे के चौक में आ पहुंचा। वहां खड़ी गाड़ियों की संख्या देखकर वह चकित रह गया। उसने मन ही मन पूछा, 'क्या इन लोगों के मेहमान आए और कोई दावत हो रही है? लेकिन दावत किसलिए हो रही है।' एक नौकर ने, जो मोज्ग्ल्याकोव को देखकर बाहर आया था, उसे खबर दी कि मारया अलेक्सान्द्रोव्ना आज गांव गई थीं। उनके साथ अफानासी मात्वेविच भी सफेद टाई लगाकर आए हैं, काउन्ट जाग गए हैं, लेकिन अभी तक नीचे नहीं आए। पावेल अलेक्सान्द्रोविच बिना कुछ कहे, सीधा ऊपर अपने चचा के कमरे में जा पहुंचा। उसकी मानसिक स्थिति उस बिन्दु पर पहुंच गई थी जब एक कमजोर आदमी बदला लेने के लिए भयंकर से भयंकर और जघन्य से जघन्य काम करने का फैसला कर लेता है और उसके मन में यह ख्याल तक नहीं आता कि वह जिन्दगी भर उसके लिए पछताएगा।

ऊपर जाकर उसने देखा कि काउन्ट अपने सफरी सामान के बीच एक आरामकुर्सी पर बैठे हैं। उनका सिर बिल्कुल गंजा था, लेकिन उन्होंने अपनी नुकीली दाढ़ी और मूछें पहन रखी थीं। सफेद बालों वाले एक बूढ़े नौकर के हाथ में काउन्ट की बनावटी बालों वाली टोपी थी। यह नौकर ईवान पंखोमिच काउन्ट का चहेता नौकर था। काउन्ट की शक्ल अत्यन्त दयनीय दिखाई दे रही थी। क्योंकि अभी तक शराब की खुमारी नहीं उतरी थी। वे कुर्सी पर सिकुड़कर बैठे, मूर्खों की तरह आंखें झपकाकर, उदासी नजरों से इस तरह मोज्ग्ल्याकोव को देख

रहे थे, जैसे उसे पहचानते ही न हों।

'कैसी तबियत है, चचाजान !' मोजग्ल्याकोव ने पूछा।

'अरे···तुम हो ?' चचा ने कुछ देर खामोश रहकर पूछा। 'कुछ देर के लिए मेरी आंख लग गई थी। हे ईश्वर !' सहसा काउन्ट जोर चिल्लाए, जैसे कोई मुर्दा फिर से जिन्दा हो गया हो, 'मेरे सिर पर··· बालों की टोपी नहीं है !'

'चिन्ता न करें चचाजान, मैं···मैं आपको टोपी पहनाने में मदद कर दूंगा।'

'आह, अब तुम मेरा भेद जान गए ! मैंने कहा था कि दरवाजा भीतर से बंद हो जाना चाहिए। अच्छा देखो, मेरे दोस्त, तुम्हें अब भी मेरे सामने ईमान की कसम खानी होगी और वादा करना होगा कि तुम इस भेद का फायदा नहीं उठाओगे न ही किसीको यह बताओगे कि मेरे बाल नक्ली हैं।'

'वाह चचाजान ! मैं ऐसी कमीनी हरकत भला कैसे कर सकता हूं !' मोजग्ल्याकोव ने जवाब दिया। वह बूढ़े को खुश करने के लिए उत्सुक था—अपने स्वार्थ के कारण।

'हां, हां ! देखता हूं तुम निहायत नेक आदमी हो। बस, बस, ठीक है ! मैं तुम्हें अपने सारे भेद बताकर चकित कर दूंगा। कहो मेरे अजीज, तुम्हें मेरी मूछें कैसी लगीं ?'

'शानदार, चचाजान, शानदार ! भला आपकी मूछें इतने बरसों तक कैसे सलामत रहीं ?'

'धोखा मत खाओ मेरे दोस्त, ये [illegible] ने विजेता-भाव से पावेल अलेक्जेन्ड्रोविच [illegible] हुए कहा।

'नहीं, क्या सच ? मुझे तो विश्वास नहीं होता ! [illegible] आपकी गलमुच्छें···शायद आप उन्हें रंगते हैं, यह [illegible] मानना ही [illegible] चचाजान !'

'कहता हूं ? यहीं से भी एकदम बकवासी है।'

'बकवासी ? नहीं चचाजान, आप जो चाहें कहें, लेकिन मुझे आपकी बात पर यकीन नहीं होता। आप उधर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं !'

'ईमान से कहता हूं दोस्त ! और जानते हो, सब लोग तुम्हारी तरह धोखे में आ जाते हैं। यहां तक कि मोहतरमा मारकोव्ना को भी यकीन नहीं होता, हालांकि कभी-कभी यह खुद अपने हाथों से चेहरे पर मूछें लगाती है। लेकिन मुझे यकीन है, मेरे दोस्त, कि तुम इस भेद को अपने तक ही सीमित रखोगे, वचन दो—"

'मैं कसम खाकर कहता हूं चचाजान, कि किसीसे नहीं कहूंगा। मैं फिर पूछता हूं—क्या आप समझते हैं कि मैं ऐसी नीच हरकतें कर सकता हूं ?'

'ओह मेरे दोस्त, आज जब तुम यहां नहीं थे तो मैं बुरी तरह गिर पड़ा था। फिलोफिल ने मुझे फिर गाड़ी में से धक्का दे दिया था।'

'फिर ? किस वक्त ?'

'हम आश्रम के नजदीक पहुंच गए थे—'

'मैं जानता हू—चचाजान, आज सुबह की बात है।'

'नहीं, नहीं, सिर्फ दो घंटे पहले की यह बात है। मैं आश्रम की तरफ जा रहा था, उसने मुझे धक्का दे दिया। मैं बेहद डर गया—अभी भी मुझे अच्छी तरह होश नहीं आया।'

'वाह, चचाजान, आप तो सो रहे थे !' मोज़ग्ल्याकोव ने चकित भाव से कहा।

'हां, हां, सो रहा था'''लेकिन बाद मे बाहर गया था और शायद—मैं—ओह कैसी अजब बात है !'

'मैं आपको यकीन दिलाता हू चचाजान, कि आप सपना देख रहे होंगे। आप दोपहर भर सोते रहे।'

'सच ?' काउन्ट ने सोचकर जवाब दिया, 'अरे हां, शायद यह सपना

हो था ! लेकिन जानते हो, मुझे सपने की सारी बातें याद हैं । पहले तो ने सींगों वाला एक भयंकर बैल देखा, फिर मुझे एक हिप्पिट्रस एटमो दिखाई दिया, उसके सिर पर भी सींग थे !'

'शायद वह निकोलाई वेसीलिविच एन्ट्रीशेव था, क्यों चचाजान !'

'अरे हां, शायद वही था । इसके बाद मुझे नैपोलियन ब्यूनापार्ते दिखाई दिया । जानते हो, मेरे अजीज, सब लोग कहते हैं कि मैं नैपोलियन ब्यूनापार्ते जैसा हूं । लेकिन मेरी आकृति पुराने ज़माने के पोपों की तरह शानदार है । तुम्हारा क्या ख्याल है मेरे अजीज, क्या मेरी शक्ल पोप जैसी है ?'

'मेरा ख्याल है कि आपकी शक्ल नैपोलियन से ज्यादा मिलती है, चचाजान !'

'हां, हां, चेहरा तो जरूर मिलता है ! मैं तुमसे सहमत हूं मेरे अजीज ! मैंने सपने में देखा कि ब्यूनापार्ते एक द्वीप के भीतर कैद है। वह इतना बातूनी और शरारती आदमी था कि उसे देखकर मुझे बड़ी हंसी आई।'

'नैपोलियन ? चचाजान !' पावेल अलेक्सेन्द्रोविच ने गौर से अपने चा की तरफ देखा । उसके मन में एक विचित्र विचार कौंधा था, जैसे वह पूरी तरह समझ नहीं पाया था ।

'हां, हां, नैपोलियन । हम दोनों में फिलासफी पर बहस हुई। जानते हो, मेरे दोस्त, मुझे सचमुच इस बात का अफसोस है कि अंग्रेजों ने उसके साथ इतनी सख्ती की । माना कि अगर अंग्रेज उसे कैद न करते तो वह फिर देशों पर धावा बोल देता । वह बड़ा दुस्साहसी आदमी था ! लेकिन फिर भी मुझे उसपर बहुत तरस आया ! अंग्रेजों की जगह अगर मैं होता तो ऐसा हरगिज न करता । मैं उसे एक उजाड़ द्वीप में रखता ।'

'उजाड़ द्वीप में किसलिए रखते ?' मोजग्ल्याकोव ने अनमने भाव

से पूछा।

'अच्छा तो बसे हुए द्वीप में रखना, जहां ज्यादा लोग नहीं... मैं उसके मनोरंजन के लिए थियेटर, संगीत, बैं... सरकारी खर्च पर! मैं उसे घूमने की इजाजत भी देता, लेकिन ... में। नहीं तो वह फौरन वहां से भाग जाता! उसे खास ... पेस्ट्रियां बहुत पसंद थीं। मैं रोज उसके लिए पेस्ट्रियां बनवाता... हो, मैं उससे एक पिता की तरह पेश आता। मुझे यकीन है कि... अपने किए पर अफसोस होता।'

मोजग्ल्याकोव बेचैनी से नाखून चबाता हुआ अनमने, ... की बकवास सुन रहा था। काउन्ट की नींद अभी पूरी तरह से नहीं ... थी। मोजग्ल्याकोव बातचीत में शादी का प्रसंग लाने के लिए बेचैन ... इसका कारण उसे खुद भी मालूम नहीं था। उसकी नसों में ... क्रोध जाग उठा था। सहसा बूढ़ा आश्चर्य से चीख पड़ा।

'ओह, मेरे अजीज, मैं तुम्हें एक बात बताना तो भूल ही ... जरा सोचो तो सही, आज मैंने एक लड़की से शादी का प्रस्ताव ... था!'

'शादी का प्रस्ताव किया था चचाजान!' मोजग्ल्याको... टूटी।

'हां, हां, शादी का प्रस्ताव किया था। तुम जा रहे हो? ... तो जाओ! वह कितनी खूबसूरत है! लेकिन मैं मानता हूं मेरे अजीज— मैंने गलती की। मेरी समझ में यह बात अभी आई है। हे ईश्वर!'

'लेकिन चचाजान, यह बताइए कि आपने शादी का प्रस्ताव कब किया?'

'सच पूछो तो मुझे यह याद ही नहीं—शायद यह भी एक सपना था—ओह कैसी अजब बात है!...'

मोजग्ल्याकोव खुशी से कांप उठा। उसके दिमाग में एक और

चार कौंध उठा। उसने अधीर स्वर में पूछा, 'आपने किसके आगे शादी का प्रस्ताव रखा था, चचाजान?'

'यहां की गृहस्वामिनी की बेटी से, मेरे अज़ीज़—उस खूबसूरत लड़की से। अरे हां, मुझे उसका नाम तो भूल ही गया, लेकिन देखो मेरे अज़ीज़, मैं शादी हरगिज़ नहीं कर सकता, लेकिन अब क्या किया जाए?'

'शादी करना आपके लिए घातक सिद्ध होगा। लेकिन मैं आपसे एक और सवाल पूछने की इजाज़त चाहता हूं, चचाजान। क्या आपको पूरी तरह यकीन है कि आपने शादी का प्रस्ताव किया था?'

'हां, हां, मुझे पूरा यकीन है।'

'और मान लीजिए कि यह भी एक सपना निकले, जैसे आपने सपने में देखा था कि आपको दुबारा गाड़ी में से धकेल दिया गया था?'

'हे ईश्वर! मैंने सच सपना ही देखा था! अब मेरी समझ में नहीं आता कि नीचे जाकर लोगों से किस तरह मिलूं। क्या किसी तरह चुपके से यह मालूम नहीं किया जा सकता कि मैंने शादी का प्रस्ताव रखा था या नहीं? तुम मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हो।'

'मैं बताऊं, चचाजान,—मेरी राय में तो कुछ भी पता करने की ज़रूरत नहीं है।'

'क्या मतलब?'

'यकीन है मुझे कि आपने सपना देखा था।'

'मेरा भी यही ख्याल है, मेरे अज़ीज़, क्योंकि मुझे अक्सर इस तरह के सपने दिखाई देते हैं।'

'देखा चचाजान! आपने सुबह के खाने के वक्त शराब पी थी, फिर डिनर के वक्त भी और···'

'हां, हां, मेरे दोस्त, शायद सब कुछ इसी तरह हुआ था।'

'और चचाजान, फिर आप चाहे कितने ही जोश में रहे हों, लेकिन

जागरित अवस्था में आप ऐसा अविवेकपूर्ण प्रस्ताव हरगिज नहीं सकते थे। आप बिलकुल विवेकशील व्यक्ति मालूम होते हैं, च और···'

'हां, हां!'

'जरा सोचिए तो सही कि अगर कहीं आपके रिश्तेदारों को आपके हक में नहीं हैं, यह बात पता चल गई तो क्या नतीजा निकले

'ओह! तुम्हारे ख्याल में वे लोग क्या करेंगे?' काउन्ट स्वर में बोले।

'वाह, वे लोग एक स्वर से कहेंगे कि जब आपने यह प्रस्ताव था तब आपका दिमाग सही हालत में नहीं था। वे कहेंगे कि पागल हैं और आपको धोखा दिया गया है। वे लोग आपको जबर न किसी पागलखाने में भेज देंगे?'

मोडग्ल्याकोव जानता था कि बूढ़े को किस तरह डराया सकता है।

'ओह! मेरे ईश्वर!' काउन्ट पत्ते की तरह कांपता हुआ बो 'क्या सचमुच वे लोग मुझे कैद करवा देंगे?'

'चचाजान, इसीलिए तो मैं कहता हूं, जरा सोचकर देखिए, आप जागरित अवस्था में भला इस तरह का अनुचित प्रस्ताव रख स थे? आप खुद जानते हैं, आपकी भलाई किस बात में है। मैं ईमानद से एलान करता हूं कि यह सब सपना था।'

'सपना—यह सपना था!' भयभीत काउन्ट ने ये शब्द दुहरा 'ओह, तुमने कितनी अच्छी तरह यह बात मुझे समझा दी है, अजीज! तुमने मेरा उद्धार कर दिया, इसके लिए मैं तुम्हें हार्दि धन्यवाद देता हूं!'

'मुझे खुशी है चचाजान, कि हमारी मुलाकात आज हो ही गई जरा सोचिए तो सही, अगर मैं यहां न होता तो आपका दिमाग एकद

'फिक्र न कीजिए चचाजान, मैं आपके साथ रहूंगा।'

'मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं, मेरे अज़ीज़ ! तुम तो सचमुच मेरे मुक्ति-दूत हो ! लेकिन मैं सोचता हूं कि अगर यहां से चला जाऊं तो बेहतर होगा।'

'कल सुबह सात बजे का वक्त ठीक रहेगा। और आज आप सब लोगों से रुखसत ले लें और कह दें कि आप जा रहे हैं।'

'मैं कल जरूर चला जाऊंगा—फादर मिखाइल के पास—लेकिन मान लो, अगर उन लोगों ने कोशिश करके मेरी शादी कर दी, तब क्या होगा मेरे अज़ीज़ !'

'डरिए मत चचाजान, मैं आपके साथ रहूंगा और वे लोग आपसे चाहे जो कहें, चाहे किसी भी बात की तरफ संकेत करें—बस आप इतना ही कहिएगा कि सब कुछ सपना था—जो कि सचमुच था भी…'

'हां, हां—सपना। लेकिन मेरे दोस्त, जानते हो यह बड़ा मज़ेदार सपना था। वह बड़ी खूबसूरत है, ऐसी रेखाएं…'

'अच्छा गुडबाई, चचाजान, मैं नीचे जा रहा हूं आप…'

'क्या ? तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो ?' काउन्ट घबराकर बोले।

'नहीं चचाजान, हम दोनो नीचे जाएंगे, लेकिन अलग-अलग। पहले मैं जाऊंगा, बाद में आप। यही सबसे अच्छा रहेगा।'

'अच्छी बात है, और इस वक्त मेरे दिमाग में एक ऐसा विचार आ रहा है, जिसे मैं फौरन लिखना चाहता हूं।'

'ठीक है चचाजान, आप अपना विचार लिखने के बाद नीचे आइएगा, लेकिन ज्यादा देर मत कीजिएगा। कल सुबह…'

'कल सुबह मैं होली फादर के यहां जाऊंगा। जरूर होली फादर के यहां जाऊंगा। चार्मिंग ! चार्मिंग[१] ! लेकिन तुम जानते हो, मेरे दोस्त, वह बेहद खूबसूरत है—उसकी रेखाएं…और अगर मुझे लगा कि मुझे

१. सुन्दर, अति सुन्दर

सचमुच शादी करनी ही पड़ेगी तो…'

'ईश्वर ऐसा न करे!'

'हां, हां, ईश्वर ऐसा न करे। अच्छा गुडबाई, मेरे अज़ीज़, मैं अभी नीचे जाता हूं—मैं फौरन कुछ लिखूंगा। इसी सिलसिले में याद आ गया, मैं बहुत दिनों से तुमसे एक बात पूछना चाहता था—क्या तुमने कैसेनोवा के संस्मरण[1] पढ़े हैं?'

'हां चचाजान, आप किसलिए मुझसे यह पूछ रहे हैं?'

'ओह, कुछ नहीं। मैं भूल गया कि मैं क्या कहना चाहता था!'

'बाद में याद आ जाएगा, चचाजान, गुडबाई!'

"गुडबाई, मेरे दोस्त, गुडबाई। लेकिन वह सपना बड़ा मज़ेदार था, बड़ा मज़ेदार!'

१२

'हम लोगों ने सोचा, चलकर तुमसे मिल आएं—प्रास्कोव्या इल्यी-नीचना भी आ रही है। लुईज़ा कार्लोव्ना ने कहा था कि वह भी आएगी,' अन्ना निकोलाईव्ना ने ड्राइंगरूम में घुसते समय उत्सुक नेत्रों से चारों तरफ देखा।

वह छोटे कद की खूबसूरत औरत थी। उसने बड़े भड़कीले, लेकिन कीमती कपड़े पहन रखे थे। उसे अपनी खूबसूरती का अच्छी तरह ज्ञान था। उसे यकीन था कि काउन्ट और ज़ना किसी कोने में छिपे थे।

'और कैटेरीना पेत्रोव्ना आ रही है, फ़ेलीसता मिखाईलोव्ना ने

१. यूरोप का प्रसिद्ध कामुक व्यक्ति

कहा था कि वह भी आएगा," जिसका जवाब नतालिया दमित्रीवना ने
जिसके शरीर की 'रेखाओं' से कारण इतने प्रभावित हुए थे, उन्हें
वह देखने में एकदम फौज का ब्रिगेडियर मालूम देती थी। ...
पर बहुत छोटा गुलाबी रंग का हैट पहन रखा था, जो सिर के
निकल रहा था। वह पिछले तीन हफ्तों से अन्ना निकोलाईवना
पक्की सहेली बन गई थी, जिसकी कृपादृष्टि के लिए वह बहुत दिन
लालायित थी। जहां तक शरीर का सवाल है नतालिया दमित्रीवना
अन्ना निकोलाईवना को एक ही बार में समूचा निगल सकती थी और
उसकी हड्डियां तक चबा सकती थी।

'आप लोगों को अपने यहां, वह भी शाम के वक्त देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका जिक्र मैं नहीं कर रही, लेकिन यह बताइए, बहुत दिनों से आपने यहां पधारने की कृपा नहीं की, आज यह चमत्कार कैसे संभव हुआ!' मारया अलेक्सेइव्ना ने अपने स्वाभाविक आदर भाव जैसे जताते हुए कहा।

'हे ईश्वर, तुम कैसी बातें करती हो मारया अलेक्सेइव्ना!' नतालिया दमित्रीवना ने आवाज़ में शहद जैसी मिठास लाते हुए कहा लेकिन उसकी बनावटी, पतली आवाज़ और झूठी मुस्कराहट उसके विकट शरीर के साथ बिलकुल मेल नहीं खा रही थी।

'मेरी प्यारी दोस्त, अब हमें ड्रामे की तैयारी करने में ज़्यादा देर नहीं करनी चाहिए,' अन्ना निकोलाईवना चहचहाई। 'आज ही प्योत्र मिखाईलोविच ने कालिस्त स्तेनीस्लाविच से कहा था कि उन्हें हम लोगों से सख्त निराशा हुई है क्योंकि हमने ड्रामे की कोई तैयारी नहीं की, और सिवा लड़ाई-झगड़े के हम लोगों को कुछ नहीं आता। इसीलिए आज शाम को हम सब इकट्ठी हुईं और सोचा कि चलो मारया अलेक्सेइव्ना के यहां चलकर सारी बातें पक्की कर लें! नतालिया दमित्रीवना ने औरों को भी खबर भिजवा दी है। सब यहीं आ रहे हैं, यहीं पर सारी

र्तें तय हो जाएंगी, बड़ा अच्छा रहेगा। हम यह हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे कि लोग कहें कि हम लोगों को सिवा लड़ाई-झगड़े के कुछ नहीं आता, क्यों मेरी प्यारी!' उसने शरारत से मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना को चूमते हुए कहा।

'अरे वाह, ज़िनेदा अफ़ानासीव्ना, तुम तो दिन-ब-दिन खूबसूरत होती जाती हो!' अन्ना निकोलाईव्ना ज़ेना को चूमने के लिए बढ़ी।

'इसके अलावा बेचारी करे भी क्या?' नतालिया दमित्रीव्ना ने अपनी बड़ी-बड़ी हथेलियों को मलते हुए मोठी आवाज़ में कहा।

'शैतान इनसे समझे! मैं तो ड्रामे की बात भूल ही गई थी। इन औरतों ने बहाना निकाल ही लिया, कम्बख्त कहीं की!' मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ने गुस्से से जल-भुनकर मन ही मन कहा।

'ज़ेना पहले से भी ज़्यादा खूबसूरत हो गई है। अब प्रिय काउन्ट भी तो तुम्हारे यहां हैं न।' अन्ना निकोलाईव्ना ने टिप्पणी जोड़ी, 'तुम जानती हो कि दुखानोवो के भूतपूर्व मालिक एक थिएटर भी चलाते थे। हम लोगों ने इस बारे में पूछताछ की है और हमें मालूम हुआ है कि वहां पुरानी सीनरी, पर्दे और पोशाकें भी रखी हैं। काउन्ट आज मेरे यहां आए थे, लेकिन उन्हें देखकर मुझे इतनी हैरानी हुई कि मैं इस सिलसिले में उनसे बात करना ही भूल गई। अब तुम थिएटर के बारे में काउन्ट से बातचीत करने में हमारी मदद करना, फिर काउन्ट सारी पुरानी चीज़ें हमें भिजवा देंगे। यहां भला कौन सीनरी पेंट कर सकता है? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम चाहते हैं कि काउन्ट हमारे थिएटर में भी दिलचस्पी लें। उन्हें चंदा ज़रूर देना चाहिए—गरीबों की सहायता के लिए ही यह सब हो रहा है। शायद काउन्ट हमारे ड्रामे में पार्ट भी कर सकें। वे बड़े अच्छे आदमी हैं। क्यों हैं न? कैसी शानदार बात रहेगी!'

[illegible]

"आप लोगों को अपने यहां, वह भी [illegible] के बाद देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका जिक्र ही नहीं कर रही, लेकिन वह [illegible] बहुत दिनों से आपने यहां पधारने की कृपा नहीं की, आज यह [illegible] कैसे संभव हुआ ?" मारया अर्केदेयेव्ना ने अपने [illegible] धीमे आवाज हुए कहा।

'हे ईश्वर, तुम कैसी बातें करती हो मारया अर्केदेयेव्ना!' नतालिया दमित्रीयेव्ना ने आवाज में शहद जैसी मिठास भरते हुए कहा, लेकिन उसकी कर्कश रूखी आवाज और भद्दी मुस्कराहट उसके विकट शरीर के साथ बिलकुल मेल नहीं खा रही थी।

'मेरी प्यारी दोस्त, अब हमें ड्रामे की तैयारी करने में देर नहीं करनी चाहिए,' अन्ना निकोलायेव्ना चहचहाई। 'आज ही प्योत्र मिखाईलोविच ने कालिस्त [illegible] से कहा था कि उन्हें इस बात से सख्त निराशा हुई है क्योंकि हमने ड्रामों की कोई तैयारी नहीं की और सिवा लड़ाई-झगड़े के हम लोगों को कुछ नहीं आता। इसीलिए आज शाम को हम सब इकट्ठी हुई और सोचा कि चलो मारया अर्केदेयेव्ना के यहां चलकर सारी बातें पक्की कर लें! नतालिया दमित्रीयेव्ना ने औरों को भी खबर भिजवा दी है। सब यहीं आ रहे हैं, यहीं पर सारी

कहा था कि वह भी आएगा,' विशालकाय नतालिया दमित्रीवना बोली, जिसके शरीर की 'रेगाओं' से काउन्ट इतने प्रभावित हुए थे, हालांकि वह देखने में एकदम फौज का ग्रेनेडियर मालूम देती थी। उसने सिर पर बहुत छोटा गुलाबी रंग का हैट पहन रखा था, जो सिर के पीछे लिसक रहा था। वह पिछले तीन हफ्तों से अन्ना निकोलाईवना की पक्की सहेली बन गई थी, जिसकी कृपादृष्टि के लिए वह बहुत समय से लालायित थी। जहां तक शरीर का सवाल है नतालिया दमित्रीवना अन्ना निकोलाईवना को एक ही बार में समूचा निगल सकती थी और उसकी हड्डियां तक चबा सकती थी।

'आप लोगों को अपने यहां, वह भी शाम के वक्त देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका जिक्र मैं नहीं कर रही, लेकिन यह बताइए कि बहुत दिनों से आपने यहां पधारने की कृपा नहीं की, आज यह चमत्कार कैसे सम्भव हुआ!' मारया अलेक्जेंड्रोवना ने अपने क्षणिक आश्चर्य से जैसे जागते हुए कहा।

'हे ईश्वर, तुम कैसी बातें करती हो मारया अलेक्जेंड्रोवना?' नतालिया दमित्रीवना ने आवाज में शहद जैसी मिठास लाते हुए कहा। लेकिन उसकी बनावटी, पतली आवाज और झूठी मुस्कराहट उसके विकट शरीर के साथ बिलकुल मेल नहीं खा रही थी।

'मेरी प्यारी दोस्त, अब हमें ड्रामे की तैयारी करने में ज्यादा देरी नहीं करनी चाहिए,' अन्ना निकोलाईवना चहचहाई। 'आज ही प्योत्र मिखाईलोविच ने कालिस्त स्तेनीस्लाविच से कहा था कि उन्हें हम लोगों से सख्त निराशा हुई है क्योंकि हमने ड्रामे की कोई तैयारी नहीं की, और सिवा लड़ाई-झगड़े के हम लोगों को कुछ नहीं आता। इसीलिए आज शाम को हम सब इकट्ठी हुई और सोचा कि चलो मारया अलेक्जें-ड्रोवना के यहां चलकर सारी बातें पक्की कर लें! नतालिया दमित्रीवना ने औरों को भी खबर भिजवा दी है। सब यहीं आ रहे हैं, यहीं पर सारी

बातें तय हो जाएंगी, बड़ा अच्छा रहेगा। हम यह हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे कि लोग कहें कि हम लोगों को सिवा लड़ाई-भगड़े के कुछ नहीं आता, क्यों मेरी प्यारी !' उसने शरारत से मारया अलैक्जेंड्रोव्ना को चूमते हुए कहा।

'अरे वाह, जिनेदा अफानासीव्ना, तुम तो दिन-ब-दिन खूबसूरत होती जाती हो !' अन्ना निकोलाईव्ना जेना को चूमने के लिए बढ़ी।

'इसके अलावा बेचारी करे भी क्या ?' नतालिया दमित्रीव्ना ने अपनी बड़ी-बड़ी हथेलियों को मलते हुए मीठी आवाज में कहा।

'शैतान इनसे समझे ! मैं तो ड्रामे की बात भूल ही गई थी। इन औरतों ने बहाना निकाल ही लिया, कम्बियां कहीं की !' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने गुस्से से जल-भुनकर मन ही मन कहा।

'जेना पहले से भी ज्यादा खूबसूरत हो गई है। अब प्रिय काउन्ट भी तो तुम्हारे यहां हैं न।' अन्ना निकोलाईव्ना ने टिप्पणी जोड़ी, 'तुम जानती हो कि दुखानोवो के भूतपूर्व मालिक एक थिएटर भी चलाते थे। हम लोगों ने इस बारे में पूछताछ की है और हमें मालूम हुआ है कि वहां पुरानी सीनरी, पर्दे और पोशाकें भी रखी हैं। काउन्ट आज मेरे यहां आए थे, लेकिन उन्हें देखकर मुझे इतनी हैरानी हुई कि मैं इस सिलसिले में उनसे बात करना ही भूल गई। अब तुम थिएटर के बारे में काउन्ट से बातचीत करने में हमारी मदद करना, फिर काउन्ट सारी पुरानी चीजें हमें भिजवा देंगे। यहां भला कौन सीनरी पेंट कर सकता है ? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम चाहते हैं कि काउन्ट हमारे थिएटर में भी दिलचस्पी लें। उन्हें चंदा ज़रूर देना चाहिए—गरीबों की सहायता के लिए ही यह सब हो रहा है। शायद काउन्ट हमारे ड्रामे में पार्ट भी कर सकें। वे बड़े अच्छे आदमी हैं। क्यों हैं न ? कैसी शानदार बात रहेगी !'

नतालिया दमित्रीवना ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

अन्ना निकोलाईवना ने सच कहा था। महिलाओं का तांता लग गया था। मारया अलैक्जेंड्रोवना के पास उचित शब्दों में उनका स्वागत करने तक का समय नहीं था, जोकि शिष्टाचार और तिकड़मबाजी के लिए बेहद जरूरी था। मैं उन सारी महिलाओं का वर्णन करने की कोशिश नहीं करूंगा, मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि वे इस तरह व्यवहार कर रही थीं, जैसे उन्हें सब कुछ मालूम हो। सबके चेहरों पर उम्मीद और अधीरता छाई थी। कुछ महिलाएं इस दृढ़ इरादे के साथ आई थीं कि उन्हें कोई कलंकपूर्ण दृश्य जरूर देखने को मिलेगा, अगर उनकी यह इच्छा पूरी न होती तो वे बेहद नाराज होकर वहां से लौटतीं। बाहर से सब शिष्टता से पेश आ रही थीं, लेकिन मारया अलैक्जेंड्रोवना ने अपने-आपको हमले के लिए तैयार कर लिया। काउन्ट के बारे में बड़े ही मासूम संकेतों और तानों से भरे हुए सवालों की बौछार शुरू हो गई। मेहमानों के लिए चाय लाई गई और सारी महिलाएं कमरे में बिखर गईं। एक ग्रुप ने प्यानो पर अधिकार जमा लिया। जेना से बार-बार प्यानो बजाने और गाना सुनाने का आग्रह किया गया लेकिन जेना ने शुष्क स्वर में, यह कहकर कि उसकी तबियत ठीक नहीं है, इन्कार कर दिया। उसके चेहरे का पीलापन इस बात का प्रमाण था। फौरन उसकी तबियत के बारे में हमदर्दी भरी पूछताछ की जाने लगी और यहां भी उल्टे-सीधे सवाल और संकेत किए जाने लगे। जेना से मोजग्ल्याकोव के बारे में भी पूछा गया। मारया अलैक्जेंड्रोवना दुगने उत्साह से कमरे के हर कोने पर नजर रखे हुए थी और हर मेहमान की बात सुन रही थी। हालांकि कमरे में दस के करीब महिलाएं थीं फिर भी वे मात नहीं खा रही थीं। उन्हें जेना के लिए डर लग रहा था और उन्हें ताज्जुब था

पर हमेशा किया था। अफानासी मातविच भी आकर्षण का केन्द्र बन गया था। हमेशा महिलाएं मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को चोट पहुंचाने के लिए उनके पति का मजाक उड़ाया करती थीं। अब वे मंदबुद्धि और जड़मति अफानासी मातविच से कुछ न कुछ उगलवाने की नीयत से उस बेचारे पर घेरा डाले बैठी थीं। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना इस सारी गतिविधि को ध्यानपूर्वक देख रही थीं। इसके अलावा जिस परेशान और बनावटी आवाज में अफानासी मातविच सारे सवालों के जवाब में 'आहं' कह रहा था, उससे मारया अलैक्जैंड्रोव्ना गुस्से से पागल हो उठी थीं।

'देखो मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ! अफानासी मातविच तो हम लोगों से बात भी नहीं करते।' एक दुःसाहसी, पैनी नजर वाली महिला, जो न किसीसे डरती थी, न किसी बात से घबराती थी, बोली, 'इन्हें कहो कि महिलाओं के साथ शिष्टता से पेश आएं।'

'न जाने आज इन्हें क्या हो गया है ! यहां तक कि मेरे साथ भी ये एक शब्द तक नहीं बोले। ये कतई मिलनसार नहीं हैं। कहिए आप फेलिस्ता मिखाईलोव्ना की बात का जवाब क्यों नहीं देते, हठीले महाशय ?···तुमने इनसे क्या सवाल किया था ?'

'लेकिन—लेकिन तुमने मुझे खुद ही तो कहा था, माई डियर,' अफानासी मातविच चकित और घबराई आवाज में बोला। वह अंगीठी के पास खड़ा चाय पी रहा था। उसका एक हाथ वास्कट की जेब में था और वह तस्वीर के अन्दाज में खड़ा था। महिलाओं के सवालों से वह इतना घबरा गया कि उसका चेहरा एक युवती की तरह शर्म से लाल हो गया। उसकी अस्पष्ट क्षमा-याचना से क्रुद्ध होकर उसकी पत्नी ने इस तरह उसकी तरफ देखा कि वह डर के मारे बेहोश होते-होते बचा। सकपकाकर, महिलाओं का आदर फिर से पाने के लिए और अपनी गलती ठीक करने के इरादे से उसने चाय का एक और घूंट पी लिया,

है!' उसने मारया अलैक्जैंड्रोव्ना की तरफ एक अर्थपूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा।

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना थर्रा उठी और मोज़ग्ल्याकोव को गौर से देखकर मन ही मन सोचने लगीं, 'क्या? क्या यह मौक़ा भी मेरे खिलाफ हो जाएगा। यह तो सबसे बुरी बात होगी।'

'क्या यह सच है पावेल अलैक्जैंड्रोविच कि तुम्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है?' गुस्ताख फेलिस्ता मिखाईलोव्ना तिरस्कारपूर्वक मोज़ग्ल्याकोव की आंखों में झांककर बोली।

'बर्खास्त कर दिया गया है? क्या मतलब? मैं एक दूसरी नौकरी पर पीटर्सबर्ग जा रहा हूं,' मोज़ग्ल्याकोव ने शुष्क स्वर में कहा।

'तब तो मेरी बधाई स्वीकार करो। जब हम लोगों ने सुना कि तुम मोर्दासोव में नौकरी तलाश कर रहे हो तो हम सब लोगों को बहुत डर लगा, यहां की नौकरियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, पावेल अलैक्जैंड्रोविच, यहां आदमी को किसी वक्त भी हटाया जा सकता है,' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'सिवा डिस्ट्रिक्ट स्कूल के टीचरों के—वहां तो अब भी नौकरी मिल सकती है,' नतालिया दमित्रीव्ना ने फब्ती कसी।

संकेत इतना फूहड़ और बेहूदा था कि अन्ना निकोलाईव्ना को भी बुरा लगा और उसने अपनी सहेली को डांटने के लिए उसे ठोकर मारी।

'वाह, तुम्हारा ख्याल है कि पावेल अलैक्जैंड्रोविच किसी टीचर की जगह पर जाएंगे,' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

पावेल अलैक्जैंड्रोविच को कोई जवाब न सूझा, और वह अफानासी मातविच से टकरा गया जो मोज़ग्ल्याकोव से हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाए खड़ा था, लेकिन मोज़ग्ल्याकोव ने एक फूहड़ झटके से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया और व्यंग्यपूर्वक कमर झुकाकर नमस्कार किया। फिर वह तुनककर सीधा ज़ेना के पास पहुंचा और उसकी आंखों

[illegible] तो तुम्हारे यहाँ [illegible]
सोफिया देवोवना पर बैठी मोटे युवती रहे ! तुम कहाँ रहीं कौन
बन रही हो—किसलिए ! अभी कुछ दिन पहले मैं तुम्हारी बहनें और
मारिया थी, जब मैं तुम्हें बताने आई थी कि काउन्ट मर्फ़ीसा [illegible]
भीरूना के यहाँ पहुँच गए हैं और अब यही मर्फ़ीसा दमित्रीयना, जि
तुमने अभी कुछ देर पहले भी मर के मर्फ़ीसा दी थी, और जिसने तु
मार्फ़िसा दी थी, तुम्हारे ड्राइंगरूम में बैठी है। मुझे तुम्हारा इस
बात का बाद मेहनत नहीं चाहिए ! फिक्र न करो मर्फ़ीसा दमित्रीयना
मैं घर बैठकर भी बातचीत कर सकती हूँ और तुमसे यही कहना चा
रहूँ !'

'यह तो साफ़ ज़ाहिर है !' मर्फ़ीसा दमित्रीयना ने कहा बनी
'अरे, सोफिया देवोवना तुम्हें क्या हो गया है ! कुछ तो ख़्याल
ध्यान करो !' मारया अर्भेस्ईहोवना ने गुस्से से लाल होकर कहा।
'मेरी फ़िक्र न करो, मारया अर्भेस्ईहोवना ! मैं सब कुछ जान
हूँ ! मैंने सब कुछ सुन लिया है !' सोफिया देवोवना अपनी कर्क
आवाज़ में बोली, सारी महिलाएँ उसके गिर्द जमा हो गईं, जैसे इस अ
रयाशित झगड़े का लुत्फ़ उठाने आई हों। 'मैंने सब कुछ सुन लिया है
तुम्हारी नस्तास्या भागती हुई मेरे पास आई थी और मुझे सारी ब
बता गई। तुमने बेचारे काउन्ट को हथियाकर उसे खूब शराब पि
और उससे अपनी बेटी के आगे शादी का प्रस्ताव रखवाया—तुम्हा
बेटी के आगे, जिससे इस शहर में कोई भी शादी नहीं करना चाहता
हा, और तुम्हारा ख्याल है कि तुम खुद भी बड़ी बन जाओगी—लेस
पोशाक में बनी-ठनी काउन्टेस बन जाओगी ! क्या कहने हैं तुम्हारे
कोई हर्ज नहीं, मैं खुद भी कर्नल की बीवी हूँ। तुम मुझे अपनी बेटी की
सगाई में बुलाओ या न बुलाओ, मुझे क्या परवाह है ? मैंने तुमसे कहीं
अच्छे लोग देखे हैं। मैंने काउन्टेस खलीखवास्त्काया के यहाँ खाना खाया

है ! खुद ओवर—कमिसार कुरोश्किन मुझसे शादी करना चाहते थे ! तुम्हारी और तुम्हारे निमंत्रण की ऐसी-तैसी !'

मारया अलेक्जेंड्रोव्ना गुस्से में आपे से बाहर होकर बोली, 'देखो सोफिया पेत्रोव्ना, मैं तुम्हें बता दूं कि शरीफ घरों में इस तरह नहीं घुसा जाता, खास तौर पर जिस हालत में तुम हो, अगर तुमने अपना भाषण बन्द न किया और यहां से न चली गई तो मैं फौरन कोई न कोई कदम उठाऊंगी।'

'मैं जानती हूं—तुम अपने मनहूस नौकरों से कहकर मुझे निकलवा दोगी ! इतनी तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं। मुझे बाहर जाने का रास्ता मालूम है। गुडबाई, चाहे जिसकी शादी करो। और नतालिया दमित्रीव्ना, खबरदार जो मुझपर हंसी ? मुझे तुम्हारे चाकलेट की कोई परवाह नहीं। मुझे यहां आने का निमंत्रण चाहे न मिला हो, लेकिन कम से कम मैंने काउन्ट के आगे यूक्रेनियन डान्स तो नहीं दिखाया। और तुम किस बात पर हंस रही हो, अन्ना निकोलाईव्ना ? सुशीलोव की टांग टूट गई है—लोग उसे अभी उठाकर घर ले गए हैं—उह ! और फेलिस्ता मिखाईलोव्ना, अगर तुमने अपनी नंगी टांगों वाली मैत्रयोश्का से कहकर अपनी गाय को मेरी खिड़की से परे न हटाया तो मैं तुम्हारी मैत्रयोश्का की टांग तोड़ डालूंगी। गुडबाई मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ! गुडलक ! उह !'

सब लोग हंस पड़े, सोफिया पेत्रोव्ना वहां से चली गई। मारया अलेक्जेंड्रोव्ना एकदम अप्रतिभ हो गई थी।

'मेरा ख्याल है, उसने शराब पी रखी थी,' नतालिया दमित्रीव्ना मधुर आवाज में बोली।

'लेकिन इतनी गुस्ताखी ! इतनी गुस्ताखी !'

'कैसी घृणित स्त्री है !'

'लेकिन उसने हम लोगों को खूब हंसाया !'

'लेकिन उसने किसी लड़ाई का जिक्र किया था। न जाने उसका मतलब क्या था।' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना व्यंग्यपूर्वक बोली।

आखिरकार मारया अलेक्सान्द्रोव्ना बोल उठी, 'ऐसी बकवास बात है! इसी तरह के शैतान लोग झूठी अफवाहें फैलाते हैं! फेलिस्ता मिखाईलोव्ना, मुझे इस बात पर हैरानी नहीं कि ऐसी औरतें हमारे बीच में हैं, बल्कि हैरानी इस बात पर है कि ऐसी औरतों को घरों में बुलाया जाता है, उनकी बातें सुनी जाती हैं, उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है और उनकी बातों पर विश्वास किया जाता है!'

'काउन्ट! काउन्ट!' सहसा सब औरतें बोल उठीं।

'हे ईश्वर! ये तो प्यारे प्रिंस आ गए!'

'चलो अब सारी पोल खुल जाएगी! ईश्वर का शुक्र है!' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना अपनी पड़ोसिन के कान में फुसफुसाई।

१३

काउन्ट हर्षातिरेक से मुस्कराते हुए कमरे में दाखिल हुए। पन्द्रह मिनट पहले मोज़ग्ल्याकोव ने उनके खोखले हृदय में जो डर बैठाया था वह सब महिलाओं को देखते ही काफूर हो गया और काउन्ट का दिल चूसे हुए बेर की तरह पिघल गया। महिलाओं ने आनन्दभरी चीखों से काउन्ट का स्वागत किया। हम यह जरूर कहेंगे कि मोर्दासोव की महिलाएं बूढ़े काउन्ट से बहुत लाड़ करती थीं और असाधारण आत्मीयता दिखाती थीं। काउन्ट को देखने मात्र से ही उनका अजीब मनोरंजन हो

जाता था। आज सुबह ही फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने घोषित किया था (निश्चय ही मजाक में !) कि वह सहर्ष काउन्ट की गोद में बैठने को तैयार होगी, अगर इससे काउन्ट को सुख मिले—'क्योंकि काउन्ट बत्तख-सा प्यारा है, एकदम शानदार आदमी !' मारया अलेक्जैंड्रोव्ना ने अपनी स्थिति का समाधान पाने के लिए अपनी नजरों से काउन्ट के चेहरे को टटोला। साफ जाहिर था कि मोजग्ल्याकोव ने कोई भयकर शरारत की थी, और सारी स्कीमों को तबाह कर दिया था। लेकिन काउन्ट का चेहरा हमेशा की तरह ही था, उसपर कोई विशेष भाव नहीं प्रकट हो रहा था।

'हे ईश्वर ! लीजिए, काउन्ट आ गए ! हमारा ख्याल था कि आप कभी नहीं आएंगे !' बहुत-सी महिलाएं एकसाथ बोलीं।

'हम यही सोच रही थीं काउन्ट, यही सोच रही थीं !' बाकी महिलाएं भी चिल्लाईं।

'मैं बहुत खुश हूं,' काउन्ट तुतलाए और उस मेज पर बैठ गए जहां समावार उबल रहा था। फौरन सब महिलाओं ने उन्हें घेर लिया। सिर्फ अन्ना निकोलाईव्ना और नतालिया दमित्रीव्ना ही मारया अलेक्जैंड्रोव्ना के पास बैठी रहीं। अफानासी मातविच आदरभाव से मुस्करा रहे थे। मोजग्ल्याकोव भी जेना की तरफ अवज्ञापूर्ण दृष्टि से देखकर मुस्करा रहा था। जेना ने उसकी तरफ कतई ध्यान नहीं दिया और अंगीठी के नजदीक जाकर अपने पिता के पास एक कुर्सी पर बैठ गई।

'ओह काउन्ट, क्या यह सच है कि आप हम लोगों को छोड़कर जा रहे हैं ?' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना चीखती हुई आवाज में बोली।

'हां, हां, श्रीमतियो ! मैं जा रहा हूं, मैं फौरन विदेश चला जाऊंगा।'

'विदेश जा रहे हैं काउन्ट ? यह ख्याल आपके दिमाग में किसने

याद है अफानासी मातविच—हां, हां, वो सेट में रहता है। शाबिश! बड़ी खुशी हुई। क्या यह वही आदमी नहीं है जिसे साथ मुझ हम दोनों ने एक देर घूमा था, क्यों मेरे अजीज!' ने मारया अलेक्जेंड्रोव्ना को मुखातिब करते हुए कहा, 'क्या नाम है? तुम्हें नहीं? तुम। या उसकी एक की ओर ली थी। हां, हां, ... है और बीवी—अरे हां, वह भी कोई मजेदार बात कहती है।'

'यह सौर भी उस मादाम में था जो हम दोनों ने लिये था।' फेलिसाता मिखाईलोव्ना ने कहा।

'अरे हां वही था। मैं सब कुछ भूल जाता हूं। खाविन, अच्छा, तो वह आदमी तुम्ही हो! तुमसे मिलकर बड़ी खुशी है। कहिए कैसे मिजाज है।' काउन्ट ने अपनी आरामकुर्सी में उठे बगैर अफानासी मातविच से मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। अफानासी मातविच मुस्करा रहा था।

'आह!'

'ये बिल्कुल सैरियन से हैं, काउन्ट', मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने जल्दी से जवाब दिया।

'अरे हां, यह तो मैं देख ही रहा हूं कि ये सैरियन से हैं। और तुम सारा वक्त गांव में ही गुजारते हो? अच्छा मुझे खुशी हुई। इतने लाल गाल और हर वक्त हंसता—'

अफानासी मातविच ने मुस्कराकर आदरपूर्वक सिर भुकाया, यहां तक कि फर्श पर अपने जूते भी रगड़े, लेकिन काउन्ट के अन्तिम वाक्य से न जाने क्यों उसका सयम टूट गया और वह बेवकूफों की तरह जोर से ठहाका मारकर हंस पड़ा। सब लोगों को हंसी आ गई। महिलाएं खुशी से चीख उठीं। जेना का चेहरा लाल हो गया और उसने आग्नेय दृष्टि से मारया अलेक्जेंड्रोव्ना की तरफ देखा। मारया अलेक्जेंड्रोव्ना मारे गुस्से के आपे से बाहर हो गई और विषय बदलते हुए, शहद जैसी

मीठी आवाज में बोली, 'आपको कैसी नींद आई काउन्ट !' साथ ही गुस्से भरी एक दृष्टि से उन्होंने अफानासी मातविच को समझा दिया कि वह फौरन अपनी जगह पर चला जाए।

'ओह, मैं खूब सोया और मैंने एक बड़ा प्यारा सपना देखा !' काउन्ट ने जवाब दिया।

'सपना ! मुझे लोगों के सपने सुनना बडा अच्छा लगता है !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'मुझे भी, मुझे तो इसका बेहद शौक है।' नतालिया दमित्रीव्ना ने कहा।

'बड़ा प्यारा सपना था,' काउन्ट ने एक द्रवित मुस्कान के साथ कहा, 'लेकिन यह सपना एक रहस्य है।'

'क्या कहा काउन्ट ! आपके कहने का मतलब है कि इसे बताया नहीं जा सकता ? तब तो सचमुच बडा शानदार सपना रहा होगा।' अन्ना निकोलाईव्ना ने टिप्पणी की।

'यह तो अद्भुत बडा रहस्य है,' काउन्ट ने दुबारा कहा। उन्हें महिलाओं की उत्सुकता को गुदगुदाने में बडा आनन्द आ रहा था।

'कितना दिलचस्प सपना रहा होगा।' महिलाएं चिल्लाईं।

'मैं शर्त बद सकती हूं कि सपने में काउन्ट ने किसी खूबसूरत लड़की के आगे घुटने टेककर उससे शादी का प्रस्ताव किया था ! आपको यह मानना ही पड़ेगा, डियरेस्ट काउन्ट !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना चिल्लाई।

'मान लीजिए काउन्ट ! मान लीजिए !' चारों तरफ से आवाजें आईं।

काउन्ट हर्षोन्माद की अवस्था में इन सारी बातों को विजेता के भाव से सुनते रहे। महिलाओं के इस संकेत से उनके अहंकार को बेहद तुष्टि मिली, बस चटखारे लेने की कसर बाकी रह गई थी।

आखिरकार काउन्ट ने कह ही डाला, 'हालांकि मैंने बहुत कि
मेरा मामला एक रहस्य है, लेकिन मुझे यह मानना ही पड़ेगा कि मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ है महाशय, कि आपका अनुमान सही है।'

'मैंने भांप लिया न !' फेलिसता मिखाईलोव्ना खुशी से चिल्लाई। 'अच्छा काउन्ट, आपको अब यह भी बताना पड़ेगा कि वह खूबसूरत लड़की कौन थी।'

'जरूर बताना पड़ेगा ! जरूर।'

'क्या वह यहां रहती है ?'

'बताइए भी, प्यारे काउन्ट !'

'डियर, डार्लिंग काउन्ट ! बताइए ! चाहे इससे आपकी मौत ही क्यों न हो जाए !' चारों तरफ से आवाजें आने लगीं।

'श्रीमतियो, श्रीमतियो'''अगर आप जानना ही चाहती हैं तो मैं आपको सिर्फ इतना ही बता सकता हूं कि ऐसी खूबसूरत और शरीफ लड़की मैंने जिन्दगी में कभी नहीं देखी,' काउन्ट ने बुदबुदाकर कहा। वे एकदम प्रेरित हो गए थे।

'सबसे खूबसूरत ! और वह यहां रहती है ? भला वह लड़की कौन हो सकती है !' महिलाओं ने भेदभरी नजरों से एक-दूसरे की तरफ देखा और कटाक्ष किए।

'जो हम लोगों में खूबसूरती की मलिका समझी जाती है, वही होगी।' नतालिया दमित्रीव्ना ने अपने लाल हाथों को रगड़ते हुए बिल्ली जैसी आंखों से जेना की तरफ देखा। उसका अनुकरण करते हुए सब महिलाओं की नजरें जेना की तरफ मुड़ गईं।

'अच्छा, तो काउन्ट अगर आपको ऐसे सपने आते हैं तो आप सच-मुच शादी क्यों नहीं कर लेते ?' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने एक अर्थपूर्ण दृष्टि चारों तरफ फेंकते हुए पूछा।

'हम आपकी शादी बड़ी धूमधाम से करेंगे !' एक दूसरी महिला

बोली।

'प्यारे काउन्ट ! शादी करवा लीजिए न !' तीसरी चिल्लाई।

'शादी कर लीजिए ! शादी कर लीजिए ! भला आप शादी क्यों नहीं करते !' चारों तरफ से आवाजें आईं।

'हां, हां, भला मैं शादी क्यों न करूं ?' इस शोर से घबराकर काउन्ट ने यही बात दुहरा दी।

'चचाजान !' मोजग्ल्याकोव बोला।

'हां, हां, मेरे अज़ीज़, मैं समझ गया। श्रीमतियो, मैं आपको बताना चाहता था, श्रीमतियो, कि मैं अब शादी करने की स्थिति मे नहीं रहा, यहां मेरी खूब खातिरदारी हुई है और शाम बड़े आनन्द से कटी है। कल सुबह मैं फादर मिसाईल से मिलने उनके आश्रम मे जा रहा हूं और वहां से सीधा विदेश चला जाऊंगा—यूरोप के सांस्कृतिक विकास का नजदीक से अध्ययन करने के लिए।'

जेना का रंग पीला पड़ गया और वह आकुल भाव से अपनी मां की तरफ देखने लगी। लेकिन मारया अलेक्जेंड्रोव्ना मन ही मन पक्का फैसला कर चुकी थी। अभी तक तो वे स्थिति का जायजा ले रही थीं, हालांकि वे जान गई थीं कि मामला एकदम बिगड़ गया है और दुश्मनों ने उन्हें पूरी तरह परास्त कर दिया है। आखिरकार वे सब कुछ भांप गईं और एक ही बार से उन्होंने सौ सिरों वाले हाइड्रो[1] को खत्म करने का फैसला कर लिया। वे बड़ी शान से अपनी कुर्सी से उठीं और एक अहंकार भरी नज़र से अपने बौने शत्रुओं की शक्ति को तोलते हुए मेज के पास जा पहुंचीं। उनकी आंखों में प्रेरणा की चमक थी, वे तय कर चुकी थीं कि वे इन तमाम नीच, अफवाहें फैलाने वाली औरतों का मुंह बंद कर देंगी। बदमाश मोजग्ल्याकोव को भुनगे की तरह कुचलकर रख देंगी और एक ही भरपूर वार में मूर्ख काउन्ट पर अपना खोया हुआ

१. ग्रीक पौराणिक कथाओं में वर्णित भयंकर दानव

प्रभाव फिर से जमा लगी। इसके लिए असाधारण साहस की आवश्यकता थी, लेकिन मारया अलेक्जेंड्रोव्ना जोखिम से डरने वाली औरतों में से नहीं थी।

'श्रीमतियो !' गंभीर और शालीन स्वर में वे बोली, (उन्हें गंभीर अवसरों का बड़ा चाव था) 'श्रीमतियो, मैं आपकी बातचीत, हंसी, और वाक्‌चातुरी को बहुत देर से सुनती रही हूं और सोच रही हूं कि अब मुझे भी कुछ कहना चाहिए। जैसा कि आप जानती हैं, हम यहां संयोगवश इकट्ठे हुए हैं (और आप सबको यहां देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है)। मैं कभी भी शालीनता के नियमों का उल्लंघन करके आपको अपने परिवार का महत्त्वपूर्ण रहस्य समय से पहले न बताती। मैं खास तौर पर अपने मेहमान से माफी चाहती हूं। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वे भी प्रच्छन्न संकेतों द्वारा मुझे यह दिखाने की कोशिश कर रहे थे कि हमारे परिवार के इस रहस्य की घोषणा से न सिर्फ उन्हें खुशी होगी बल्कि वे चाहते हैं कि मैं ऐसी घोषणा कर दूं···मैं ठीक कह रही हूं काउन्ट?'

'हां, हां, तुम ठीक कह रही हो···और मुझे बहुत-बहुत खुशी है,' काउन्ट ने, जिसे कतई पता नहीं था कि किस बारे में बात की जा रही है, जवाब दिया।

मारया अलेक्जेंड्रोव्ना सांस लेने के लिए रुक गई और सब एकत्रित महिलाओं की तरफ देखने लगीं। सब महिलाएं उत्सुक भाव से उनकी बात सुन रही थीं। मोज़ग्ल्याकोव कांप उठा। ज़ेना का चेहरा सुर्ख हो गया और वह अपनी कुर्सी से आधी खड़ी हो गई। अफानासी मात्वेविच किसी असाधारण घटना की उम्मीद में अपनी नाक पोंछने लगा।

'हां श्रीमतियो, आपको अपने परिवार का रहस्य बताते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। मेरी बेटी की खूबसूरती और नेकी से आकर्षित होकर आज दोपहर को काउन्ट ने मेरी बेटी के आगे शादी का प्रस्ताव रखकर उसपर मेहरबानी की है। काउन्ट !' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना

ने आंसुओं और उत्तेजना से भरी आवाज में कहा। 'प्यारे काउन्ट, इस लापरवाही के लिए आप मुझसे नाराज मत होइएगा। इस असाधारण आनन्द ने ही मुझे इस अमूल्य रहस्य को बताने पर मजबूर किया है—भला कौन मां इस बात के लिए मुझे दोष दे सकती है?'

मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना की इस अप्रत्याशित भावुकता का क्या असर पड़ा, इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। सब लोग जैसे आश्चर्य से पत्थर हो गए। ये मक्कार औरतें, जिन्हें इस बात का पूरा भरोसा था कि वे मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना के रहस्य का समय से पहले भंडाफोड़ करके उन्हें आतंकित कर देंगी, जो सोचती थीं कि सिर्फ संकेतों से ही वे मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना की छाती पर मूंग दलेंगी, इस दुस्साहस-पूर्ण स्पष्टवादिता पर भौंचक्की रह गईं। ऐसी निर्भीक स्पष्टवादिता के मूल में कोई न कोई विश्वास तो होगा ही! 'तो काउन्ट सचमुच अपनी मर्जी से ही ज़ेना से शादी करने जा रहे हैं। इसका मतलब है कि काउन्ट को शराब पिलाकर धोखा नहीं दिया गया। इसका मतलब है कि काउन्ट को चुपके से चोरों की तरह शादी करने के लिए मजबूर नहीं किया गया। इसका मतलब है कि मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना को किसी का डर नहीं है। इसका मतलब है कि इस शादी में गड़बड़ नहीं डाली जा सकती, क्योंकि काउन्ट पर जोर-जबरदस्ती नहीं चल सकती।' सब महिलाएं खुशी से चीख उठीं। सबसे पहले नतालिया दमित्रीव्ना ने उठकर मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना को गले से लगाया, इसके बाद अन्ना निकोलाईव्ना और फेलिसता मिखाईलोव्ना ने उसका अनुकरण किया। बाकी महिलाएं, जिनमें से कुछ के चेहरे गुस्से से पीले पड़ गए थे, अपनी कुर्सियों पर से उछलकर चारों तरफ खड़ी हो गईं। उन्होंने घबराई हुई ज़ेना को बधाइयां देनी शुरू कर दीं। यहां तक कि वे अपाहिज मास्कित के ऊपर भी टूट पड़ीं। मारया अलेक्जेन्द्रोव्ना ने बड़े नाटकीय अन्दाज में अपनी बाहें फैलाकर जोर से अपनी बेटी को गले से लगा लिया।

सिर्फ काउन्ट चकित दृष्टि से यह सारा दृश्य देख रहे थे। लेकिन उन्हें इस दृश्य से प्रसन्नता हुई थी और वे मुस्करा रहे थे। जब मां-बेटी गले मिली तो काउन्टने अपना रूमाल निकालकर अपनी असली आंख पोंछी जिसमें एक आंसू आ गया था। कहना न होगा कि सब महिलाएं काउन्ट को मुबारक देने के लिए इकट्ठी हो गईं।

'मुबारक हो काउन्ट, मुबारक !' सब तरफ से आवाज आई।

'अच्छा तो आप शादी कर रहे हैं !'

'तो आप सचमुच शादी कर रहे हैं ?'

'प्यारे काउन्ट ! आप शादी कर रहे हैं ?'

'हां, हां,' काउन्ट ने मुबारकबादों और महिलाओं के उत्साह से प्रसन्न होकर कहा, 'और मुझे मानना पड़ेगा कि सबसे ज्यादा खुशी मुझे आपकी हमदर्दी को देखकर हुई है, जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। चार्मिंग ! चार्मिंग ! आप लोगों ने मेरी आंखों में आंसू ला दिए हैं...'

'मुझे चूमिए, काउन्ट !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना सबसे ऊंची आवाज में बोली।

'और मैं स्वीकार करता हूं कि सबसे ज्यादा हैरानी मुझे यह देखकर हुई कि हमारी आदरणीय मेजबान मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने अपनी असाधारण तीक्ष्ण बुद्धि से मेरे सपने का अर्थ जान लिया है। आप लोग सोचेंगे कि सपना मैंने नहीं बल्कि मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने देखा था। गजब की तीक्ष्ण बुद्धि है ! गजब की तीक्ष्ण बुद्धि है !'

'ओह काउन्ट, आप तो फिर अपने सपने पर लौट आए !'

'अच्छा तो काउन्ट ! इस बात को स्वीकार कीजिए ! स्वीकार कीजिए !' सब महिलाओं ने नजदीक सरककर कहा।

'हां काउन्ट, इस भेद को छिपाने से कोई फायदा नहीं ! बल्कि इस भेद को जाहिर करने का वक्त आ गया है !' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने कठोर निश्चय के स्वर में कहा, 'मैं आपके गूढ़ रूपक का अर्थ और

जिस शानदार और कोमल ढंग से आपने मुझे यह भेद सबके सामने बताने का संकेत किया था, उसको समझ गई थी। हां श्रीमतियो ! यह सच है। काउन्ट ने आज सपने में नहीं, बल्कि सचमुच मेरी बेटी के आगे घुटने टेककर बाकायदा शादी का प्रस्ताव रखा था !'

'ऐसा लगता है कि जैसे यह बात सचमुच हुई हो, और परिस्थितियां भी यही थीं,' काउन्ट ने समर्थन किया और फिर अत्यन्त शिष्ट ढंग से ज़ेना की ओर, जो अभी तक चकित थी, मुड़कर कहा, 'मदमोज़ेल ! मैं कसम खाकर कहता हूं कि अगर और लोग आपका नाम न लेते तो मुझे कभी भी आपका नाम ज़बान पर लाने का साहस न होता। वह एक सुखद सपना था, बड़ा ही सुखद सपना था। मुझे दुगनी खुशी है कि मैं आपको ये सारी बातें सुना सका। चार्मिंग ! चार्मिंग !'

'आखिर माजरा क्या है ? काउन्ट अभी भी अपने सपने की बात करते आ रहे हैं !' अन्ना निकोलाईव्ना मारया अलेक्जेंड्रोव्ना के कान में फुसफुसाई। घबराहट के मारे मारया अलेक्जेन्ड्रोव्ना का चेहरा पीला पड़ गया था।

अफसोस ! कि इन चेतावनियों के बग़ैर भी मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना के दिल में बहुत समय पहले से सदेह और चिन्ताएं मौजूद थीं।

'आखिर इस बात का क्या मतलब हो सकता है !' महिलाएं एक दूसरे की तरफ देखकर फुसफुसाईं।

मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ने एक रूखी, शुष्क मुस्कान के साथ कहा, 'सचमुच काउन्ट, आपका व्यवहार देखकर मुझे बेहद ताज्जुब हुआ है। भला यह सपने का अजब किस्सा कहां से आ गया ? सच पूछिए तो मैं अभी तक यही सोच रही थी कि आप मज़ाक कर रहे हैं, लेकिन—अगर यह सचमुच मज़ाक है तो बड़ा ही असंगत है—मैं कहना चाहती हूं कि आपके भुलक्कड़पन के कारण ही ऐसा हुआ है। फिर भी…'

'शायद यह सारा किस्सा सिवा भुलक्कड़पन के कुछ नहीं था।'

मनालिया दमित्रीवना ने फुफकारकर कहा।

'हां, हां—भुलक्कड़पन ही था,' काउन्ट ने समर्थन किया। उन्हें अभी तक नहीं पता था कि ऐसी स्थिति में उन्हें क्या कहना चाहिए। 'इस बात से मुझे एक छोटी-सी घटना याद आ गई। एक बार मुझे पीटर्सबर्ग में किसीके जनाज़े में शामिल होना पड़ा। वे काफी बड़े लोग थे। वहां जाकर मैं फिर सब कुछ भूल गया। मेरा ख्याल था कि मुझे किसी जन्म-दिन में बुलाया गया है। एक हफ्ता पहले किसीके यहां जन्म-दिन मनाया गया था। मैं वहां फूलों का गुलदस्ता लेकर पहुंचा, लेकिन घर के भीतर जाकर मैंने देखा कि एक शरीफ, इज्जतदार आदमी की लाश मेज पर रखी है! मैं एकदम हैरान रह गया। मेरी समझ में न आया कि फूलों के गुलदस्ते का क्या करूं!'

मारया अलेक्जेंड्रोवना ने चिढ़कर काउन्ट को बीच ही में टोक दिया, 'लेकिन यह चुटकुले सुनाने का वक्त नहीं है काउन्ट। मेरी बेटी को दूल्हों के पीछे दौड़ने की जरूरत नहीं है, लेकिन अभी कुछ देर पहले आपने यहीं, प्यानो के पास, मेरी बेटी से शादी का प्रस्ताव किया था। मैंने आपसे इसके लिए याचना नहीं की थी, सच पूछिए तो आपका प्रस्ताव सुनकर मुझे एक धक्का-सा लगा था···उस वक्त मेरे मन में एक विचार उठा था, लेकिन मैंने सोचा आप सोकर उठ जाएंगे तभी आपसे इस बारे में बात करूंगी। लेकिन मैं एक मां हूं। यह मेरी बेटी है······ आपने अभी एक सपने का जिक्र किया था। मेरा ख्याल था कि आप एक रूपक द्वारा अपनी सगाई की घोषणा करना चाहते हैं। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपको जरूर किसीने पट्टी पढ़ाई है, किसने पढ़ाई है, यह भी मैं जानती हूं—लेकिन अपनी सफाई दीजिए काउन्ट, फौरन अपने इस व्यवहार की सफाई दीजिए। आप एक शरीफ खानदान के साथ इस तरह खिलवाड़ नहीं कर सकते।'

'हां, हां, कोई भी आदमी एक शरीफ खानदान के साथ इस तरह

खिलवाड़ नहीं कर सकता !' काउन्ट ने यंत्रवत् दुहराया, हालांकि अब उनके चेहरे पर घबराहट के लक्षण नजर आ रहे थे।

'लेकिन यह मेरे सवाल का सही जवाब नहीं है, काउन्ट। मैं कहती हूं, मुझे साफ-साफ जवाब दीजिए। फौरन और इसी वक्त। सब लोगों के सामने मानिए कि आपने कुछ देर पहले मेरी बेटी से शादी का प्रस्ताव किया था।'

'हां, हां, मैं यह मानने को तैयार हूं, लेकिन यह तो मैं पहले ही कह चुका हूं और फेलिस्ता मिसाईलोव्ना ने मेरे सपने को बिल्कुल ठीक भांप लिया था।'

'यह सपना नहीं था ! यह सपना नहीं था !' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना गुस्से में चीख पड़ी, 'यह सपना नहीं था, सच्ची बात थी, सुना आपने काउन्ट ! यह सच्ची बात थी।'

'सच्ची बात !' काउन्ट हैरानी से अपनी कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए। 'देखा मेरे दोस्त ! तुम्हारी भविष्यवाणी बिल्कुल सच निकली !' काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव की ओर मुड़कर कहा, 'लेकिन आदरणीय मारया अलेक्जेंड्रोव्ना, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें गलतफहमी हो गई। मुझे अच्छी तरह पता है कि यह सिर्फ सपना था।'

'हे ईश्वर !' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना बोली। 'निराश मत होओ मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ! शायद काउन्ट भूल गए हैं······उन्हें यह बात याद आ जाएगी,' नतालिया दमित्रीव्ना ने कहा।

मारया अलेक्जेंड्रोव्ना गुस्से में बोली, 'ताज्जुब है नतालिया दमित्रीव्ना, भला ऐसी बात भी कोई भूल सकता है ? वाह काउन्ट ! क्या आप हमारी हंसी उड़ा रहे हैं। क्या आप द्यूमा के उपन्यासों में वर्णित रीजेंसी काल के परोकोर या लोगों जैसे ओछे पात्रों की तरह आचरण करने पर तुले हैं ? मैं आपसे कह दूं कि आप इस चाल में सफल नहीं होने पाएंगे। आपकी उम्र को देखते हुए यह रोल आपको नहीं

जचता। मेरी बेटी कोई फ्रेंच वाईकाउन्टेस नहीं है। कुछ देर पहले, इ कमरे में, ठीक इसी जगह पर ज़ेना ने आपको गाना सुनाया था, आप इतने प्रभावित हुए थे कि घुटनों के बल बैठकर उससे शादी का प्रस्ताव किया था। आपका ख्याल है कि मैं सपना देख रही हूं ? मैं सो तो नहीं रही ! बोलिए काउन्ट—मैं जाग रही हूं या सो रही हूं ?'

'हां, हां······मेरा मतलब है—नहीं !' घबराए हुए काउन्ट ने कहा, 'मेरा मतलब है कि इस वक्त मालूम होता है कि मैं जाग रहा हूं। लेकिन उस वक्त मैं सो रहा था और मैंने सपना देखा था······यह सब सपने में हुआ था।'

'ईश्वर के लिए ज़रा मुझे समझाइए कि आपका मतलब क्या है? यह सपना नहीं था—यह सपना था, यह सपना था—यह सपना नहीं था ! वाह कैसी हिमाकत है ! आप कहीं प्रलाप तो नहीं कर रहे काउन्ट ?'

'हां, आखिर ··लेकिन अब लगता है कि मेरा दिमाग एकदम गड़बड़ हो गया है,' काउन्ट ने घबराई नज़रों से चारों तरफ देखा।

मारया अलेक्सान्द्रोव्ना ने विशिष्ट आग्रह के स्वर में कहा, 'भला यह सपना कैसे हो सकता जब कि आपके किसी और को बताने से पहले मैंने इतने विस्तार से सारी घटना बयान की है !'

'आह, लेकिन शायद काउन्ट ने यह सपना किसीको बताया हो !' नतालिया दमित्रीव्ना ने बीच में ही टिप्पणी की।

'हां, हां, शायद मैंने किसीको बताया,' काउन्ट ने बदहवासी की हालत में जवाब दिया।

'यह तो बिल्कुल नाटक हो गया !' फेलिसता मिखाईलोव्ना ने अपने साथ बैठी महिला के कान में फुसफुसाकर कहा।

'हे मेरे ईश्वर ! ऐसी परिस्थितियों में तो कोई संत भी अपना धैर्य खो सकता है !' मारया अलेक्सान्द्रोव्ना ने बेचैनी से अपने हाथ मलते

हुए कहा, 'ज़ेना ने आपको गाना सुनाया था, गाना सुनाया था ! क्या यह भी सपना था ?'

'हां, हां, मेरा ख्याल है कि सचमुच उसने मुझे गाना सुनाया था,' काउन्ट ने सोचा और सहसा किसी स्मृति से उनका चेहरा खिल उठा।

काउन्ट ने मोजल्याकोव की तरफ मुड़ते हुए कहा, 'मेरे अज़ीज़ ! मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि सचमुच मैंने एक गाना सुना था, जिसमें किलों का और किसी गायक का ज़िक्र था। अरे हां—मुझे सारी बात याद आ गई—उस गाने को सुनकर मुझे रोना तक आ गया था—तो तुमने देख लिया, मैं यकीन से नहीं कह सकता कि यह निरा सपना था—शायद यह सपना बिल्कुल नहीं था !'

मोजल्याकोव ने अपनी आवाज़ को भरसक शान्त बनाने की कोशिश की, हालांकि उसकी आवाज़ से घबराहट साफ झलक रही थी, 'मैं कहना चाहता हूं कि मेरी राय में यह सारा मामला बड़ी आसानी से सुलझ सकता है। मेरा ख्याल है कि आपने सचमुच गाना सुनाया था। ज़िनेदा अफनासीव्ना बहुत सुन्दर गाती हैं। खाने के बाद आपको इस कमरे में लाया गया था और ज़िनेदा अफनासीव्ना ने आपको गाना सुनाया। मैं खुद तो यहां मौजूद नहीं था, लेकिन शायद बीते दिनों को याद आने से आपका दिल भर आया था। शायद आपको वाईकाउन्टेस की याद आ गई होगी, जिनके साथ आप गीत गाया करते थे, और जिनके बारे में आपने हम लोगों को आज सुबह बताया था। अच्छा तो उसके बाद, आप सोने के लिए चले गए और इन सुखद प्रभावों के कारण आपने सपना देखा कि आपको किसीसे प्यार हो गया और आपने उससे शादी का प्रस्ताव किया है।'

मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ऐसी गुस्ताखी से एकदम स्तब्ध रह गई।

काउन्ट ने हर्षोन्माद से कहा, 'हां, बिल्कुल यही बात थी। मेरे अज़ीज़ ! सुखद प्रभावों के कारण ही ऐसा हुआ। मुझे अच्छी तरह याद

है कि सपने में किसीने मुझे गाना सुनाया था, और मेरे मन में
करने की इच्छा पैदा हुई थी। वाईकाउन्टेस भी उस सपने में
दी थी। तुमने कितनी होशियारी से सारी समस्या को
मेरे अज़ीज़ ! अच्छा तो अब मुझे बिल्कुल यकीन हो गया कि
सपना था। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ! मैं यकीन दिलाता हूं कि
गलतफहमी हो गई है ! यह सपना था वरना मैं कभी भी तुम्हारी
भावनाओं से खिलवाड़ न करता !'

'आह ! अब मैं समझ गई कि यह किसकी करतूत है !'
अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने गुस्से से पागल होकर मोज़ग्ल्याकोव से कहा,
तुम्हारी ही करतूत है, नीच आदमी ! तुमने इस बेचारे नामर्द के
मे उलझन पैदा कर दी है, क्योंकि तुम्हें खुद ठुकरा दिया गया
लेकिन तुम्हे इस अपमान का बदला चुकाना पड़ेगा, घृणित
चुकाना पड़ेगा ! चुकाना पड़ेगा ! चुकाना पड़ेगा !

मोज़ग्ल्याकोव का चेहरा केंकड़े की तरह लाल हो गया। वह
से चिल्लाया, 'मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ! समझ में नहीं आता कि तुम्हारे
शब्दों के बारे में क्या कहूं —भद्र वर्ग की कोई भी महिला अपने-आप
कम से कम, मैं अपने रिश्तेदार की रक्षा ज़रूर करूंगा। आप अच्छी तरह
जानती हैं कि आपने इन्हें फुसलाकर…'

'हां, हां, फुसलाया था !' काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव के पीछे छिपने
की कोशिश करते हुए कहा।

'अफ़नासी मातविच !' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना अस्वाभाविक
आवाज़ में चीख पड़ी, 'तुम सुन नहीं रहे, हम लोगों की किस तरह
बेइज़्ज़ती की जा रही है ! क्या तुमने अपने-आपको इस ज़िम्मेदारी से
मुक्त कर लिया है ? क्या तुम इस परिवार के पिता नहीं हो ? क्या तुम
नरी के बदसूरत कुन्दे के सिवा कुछ नहीं हो ? इस तरह मूर्खों की तरह
आंखें मत झपकाओ ! तुम्हारी जगह अगर कोई और पति होता तो

'जेना, कहीं तुम सब कुछ बक तो नहीं दोगी ? है मेरे
मुझे पहले से ही आशंका थी कि यह छुरा हमेशा मेरे सीने
रहेगा।'

'हां, मां, मैं सब कुछ बता दूंगी ! मेरी, तुम्हारी, हम सब
की बेइज्जती हुई है।'

*'तुम बात को तूल दे रही हो, जेना ! तुम आपे में नहीं हो !
नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो ! कुछ कहने से क्या
बेइज्जती हमारी नहीं हुई—मैं अभी इसी क्षण साबित कर दूं
बेइज्जती हमारी नहीं हुई—'*

'नहीं मां !' जेना की आवाज़ क्रोध से कांप रही थी, 'मैं इन
के सामने हरगिज खामोश नहीं रह सकती, जिनकी राय से मुझे
है और जो यहां हमारी हंसी उड़ाने आई हैं। मैं उनके हाथों
बेइज्जती नहीं करा सकती ! इनमें से किसी एक को भी मुझपर
उछालने का अधिकार नहीं है। ये सबकी सब इसी क्षण, तुम्हारी
मेरी नीचता से भी सौ गुना बड़ी नीचता कर सकती हैं। फिर क्या
इतना साहस है कि हमारी अच्छाई-बुराई परख सकें ? क्या उन्हें
तमीज़ है ?'

'वाह, क्या तरीका है ! ज़रा सुनो तो इस लड़की की बातें !
कैसी लगीं ! यह हमारी बेइज्जती कर रही है !' चारों तरफ से आवा
आईं।

'उसे नहीं मालूम कि वह क्या कह रही है,' नतालिया दमित्रीव
बोली।

हम यहां प्रसंगवश कह दें कि नतालिया दमित्रीव्ना का कहना
बिल्कुल सही था। अगर जेना उन महिलाओं को इस काबिल नहीं सम
झती थी कि वे उसकी अच्छाई-बुराई परख सकें तो फिर वह उनके
सामने यह घोषणा क्यों कर रही थी ? यह सारी बातें क्यों स्वीकार क

ी थी ? ज़िनेदा अफ़नासीव्ना ने बहुत जल्दबाज़ी दिखाई थी। बाद मोर्दासोव के सबसे आला दिमागों ने यही राय दी थी। सारा मामला क हो सकता था, सारी कठिनाइयां सुलझ सकती थीं। यह सच है कि उ दिन शाम को अपनी जल्दबाज़ी और गुस्ताख़ी से मारया अलैक्ज़ें-व्ना ने अपने-आपको नुकसान पहुंचाया था। उन्हें चाहिए था कि उस मर्द बूढ़े की बातों पर हंस देतीं और उसे घर से निकाल देतीं। लेकिन ना ने, जो मोर्दासोव की सहज बुद्धि और विवेक के विरुद्ध आचरण र रही थी, जाकर काउन्ट से कहा—

'काउन्ट !' बूढ़ा इस वक्त ज़ेना के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित ा कि आदर-भाव से खड़ा हो गया।

'मुझे माफ़ कर दीजिए काउन्ट ! हम लोग माफ़ी चाहते हैं। हम ोगों ने आपको बहकाया, फुसलाया—'

'चुप रहो ! अभागी लड़की !' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना क्रोध से ालीं।

'मदाम ! मदाम ! मेरी प्यारी बच्ची—' स्तब्ध काउन्ट बड़बड़ाया।

लेकिन ज़ेना का अहंकारी, मनमाना और रोमांटिक स्वभाव उसे रम्परागत शालीनता की सीमा से बहुत दूर ले गया। वह अपनी मां ो बिल्कुल भूल गई जो बेटी की बातें सुनकर मानसिक यंत्रणा से तड़प ही थीं।

'हां, काउन्ट हम दोनों ने आपको बहकाया था—मां ने आपको ुझसे शादी करने के लिए मजबूर किया था इसलिए, और मैंने इसलिए योंकि मैं इस बात के लिए राज़ी हो गई थी। मैं आपके आगे गाना गाने ौर ढोंग रचने के लिए तैयार हो गई थी। आप कमज़ोर और अरक्षित ; आपकी आंखों में धूल झोंकी गई, जैसा कि पावेल अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने हा है, आपकी दौलत और आपके ओहदे की खातिर यह सब किया या। यह भयंकर कमीनापन था, जिसके लिए मुझे सख्त अफ़सोस है।

लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूं काउन्ट कि मैंने किसी कमीने इरादे से इस कमीनेपन पर उतरने का फैसला नहीं किया था। मैं चाहती थी—लेकिन जाने दीजिए इस बात को ! ऐसे मामले में अपने लिए औचित्य ढूंढ़ना दुगना कमीनापन होगा। लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूं, काउन्ट कि अगर मैं आपसे कुछ भी लेती तो उसके बदले में अपने-आपको आपके हाथों का खिलौना, नौकर, नाच करने वाली सेविका बना देती—मैंने यह करने की कसम खाई थी और मैं अपना वचन जरूर पूरा करती—'

इसी वक्त उसका गला रुंध गया। सब महिलाएं स्तब्ध होकर, आखें फाड़-फाड़कर सुन रही थीं। जेना के अप्रत्याशित और अनर्गल व्यवहार से सबको ताज्जुब हुआ था। सिर्फ काउन्ट की आंखों में आंसू आ गए थे, हालांकि जेना की बातों में से सिर्फ आधी बातें ही उनके पल्ले पड़ी थीं।

'मैं तुमसे जरूर शादी करूंगा, मेरी बच्ची, चूंकि तुम शादी के लिए इतनी उत्सुक हो,' काउन्ट बड़बड़ाया, 'और मेरे लिए यह बड़े गर्व की बात होगी। लेकिन मेरे ख्याल में यह सब सपना था। सचमुच मैं यही सोचता हूं। लेकिन मुझे सपने में क्या दिखाई दिया इससे कौन-सा फर्क पड़ता है ? इससे परेशान मत होओ। मेरी समझ में तो कोई बात नहीं आ रही। मेरे प्यारे', काउन्ट ने मोजग्ल्याकोव की तरफ मुड़कर कहा, 'मेहरबानी करके मुझे समझाओ कि यह सब क्या है ?'

जेना ने भी मोजग्ल्याकोव की तरफ मुड़कर कहा, 'और तुम पावेल अलेक्जेंड्रोविच, किसी जमाने में मैंने तुम्हें अपने भावी पति के रूप में देखने का निश्चय किया था, तुमने अब मुझसे क्रूर बदला लिया है, भला तुम मुझे पीड़ा देने और मेरी बेइज्जती करने के लिए इन सब लोगों के साथ कैसे मिल गए ? तुम तो कहते थे कि तुम्हें मुझसे प्यार है ! लेकिन तुम्हें उपदेश देने वाली भला मैं कौन होती हूं ? तुमसे ज्यादा कसूर मेरा

है ! मैंने तुम्हारी बेइज्जती की, मैंने तुम्हें वादों से बांधे रखा और मैंने तुमसे जो भी कहा, वह सब झूठ और धोखे का जाल था। मुझे तुमसे कभी प्यार नहीं था और मैंने तुमसे शादी करने का फैसला सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मैं किसी तरह इस मनहूस शहर से, यहां की सड़ांध से निकलकर दूर जाना चाहती थी'''लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूं कि अगर मैं तुमसे शादी करती तो जरूर एक नेक और वफादार बीवी की तरह रहती। तुमने मेरे साथ क्रूर बदला लिया है और अगर इससे तुम्हारे अहंकार को तुष्टि मिलती है—'

'जिनेदा अफनासीव्ना !' मोजग्ल्याकोव बोला।

'अगर अभी भी तुम्हारे दिल में मेरे लिए नफरत है—'

'जिनेदा अफनासीव्ना !'

जेना ने अपने आंसुओं को थामकर कहा, 'अगर तुमने कभी भी मुझसे प्यार किया था—'

'जिनेदा अफनासीव्ना !'

'जेना ! जेना ! मेरी बेटी !' मार्या अलेक्जेंड्रोव्ना शोकातुर होकर चिल्लाईं।

'मैं बदमाश हूं, जिनेदा अफनासीव्ना, इससे ज्यादा कुछ नहीं !' मोजग्ल्याकोव ने कहा। श्रोताओं की उत्तेजना बढ़ गई थी। क्षोभ और आश्चर्य की आवाजें सुनाई दीं लेकिन मोजग्ल्याकोव इस तरह खड़ा था जैसे उसे काठ मार गया हो। उसका दिमाग खाली हो गया था, आवाज बंद हो गई थी।

कमजोर और ओछे लोग, जो हमेशा दूसरों के आगे झुकने के आदी होते हैं, जब आवेश में आकर किसी बात के खिलाफ प्रतिवाद करते हैं या संक्षेप में कहा जाए कि दृढ़ता और एकाग्रता दिखाते हैं तो हमेशा एक बाधा आकर उनके सामने खड़ी हो जाती है। उनकी दृढ़ता और एकाग्रता की एक सीमा होती है। शुरू में उनका प्रतिवाद बेहद जोरदार

होता है। यह शक्ति विजिनिन की सोमा तक भी पहुंच सकती है
लोग अपनी आंख मूंदकर अपने-आपको बाधाओं के बीच धकेल
और अपने ऊपर इतना बोझ उठा लेते हैं जो उनके लिए बहुत
होता है। लेकिन एक विशेष बिन्दु पर पहुंचने के बाद, ऐसे लु
अपने ही रोष से भयभीत होकर घबरा जाते हैं और अपने को सं
की कोशिश करते हैं। उनके मन में सवाल उठता है, 'यह मैं
किया !' इसके बाद वे भावुक हो उठते हैं, सफाई पेश करते हैं,
घुटने टेककर माफी मांगते हैं। और इस बात के लिए याचना क
कि पहले की सी स्थिति फिर लौट आए। और बिल्कुल यही
मोज़ल्याकोव के साथ भी हुई। आवेश के पहले दौरे के बाद,
वह ऐसी तबाही मचा चुका था और जिसके लिए अब वह अपने
किसीको दोष नहीं दे सकता था, अपना पूरा गुस्सा दिखाने
अहंकार-तुष्टि के बाद, जिसके लिए उसे आत्मग्लानि का अनुभव
रहा था, उसने सहसा अपने को थामा। ज़ेना के अप्रत्याशित रह
द्घाटन से उसका हृदय पश्चात्ताप से चूर-चूर हो रहा था। ज़ेन
आखिरी शब्दों ने तो उसे बिल्कुल ही खत्म कर दिया। एक क्षण मे
मोज़ल्याकोव एक सीमा से उछलकर दूसरी सीमा पर जा पहुंचा।

'मैं गधा हूं ज़िनेदा अफनासीव्ना !' उसे भयकर पश्चाताप
रहा था, 'गधा ? वह तो कुछ भी नहीं। मैं गधे से भी गया-गुज़रा
लेकिन तुम्हें दिखा दूंगा ज़िनेदा अफनासीव्ना, लेकिन मैं तुम्हें दि
दूंगा, मैं दिखा दूंगा कि एक गधा कितना नेक और शरीफ हो सक
है ! चचाजान, मैंने आपको धोखा दिया है ! धोखा देने वाला मैं था
आप सोए नहीं थे। आपने सचमुच शादी का प्रस्ताव किया था, अ
चूंकि मुझे ठुकराया जा चुका था, इसलिए बदला लेने के लिए मैं
आपको यकीन दिलाया कि यह सब निरा सपना था—मैं बदमाश
ठहरा !'

'मालूम होता है, आज असाधारण रहस्योद्घाटन सुनने को मिलेंगे,' नतालिया दमित्रीव्ना अन्ना निकोलाईव्ना के कान में बोली।

'अपने को शान्त करो मेरे अज़ीज़ ! तुम्हारे चीखने-चिल्लाने से मुझे डर लगता है। मैं यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें गलतफहमी हो गई है।—अगर शादी करना जरूरी हो तो मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार हूं, लेकिन तुमने खुद ही मुझसे कहा था कि यह सिर्फ सपना था—'

'ओह, अब मैं आपको किस तरह समझाऊं ! कोई बताए कि इन्हें किस तरह यकीन दिलाऊं ? चचाजान, चचाजान, ! यह बड़ा महत्त्वपूर्ण घरेलू मामला है। ज़रा सोचिए। गौर कीजिए।''

'अच्छी बात है मेरे दोस्त ! मैं दुबारा इस बारे में सोचूंगा ! ज़रा मुझे सारी घटनाओं को क्रमानुसार याद करने दो ! सबसे पहले मैंने सपने में अपने कोचवान फ्योफिल को देखा था—'

'ओह चचाजान ! इस वक्त फ्योफिल को छोड़िए !'

'हां, हां, फ्योफिल को छोड़िए! फिर मैंने नेपोलियन को देखा, उसके बाद लगा कि हम लोग चाय पी रहे हैं, फिर कोई औरत आई और सारी चीनी खा गई !'

'लेकिन चचाजान ! मेरे सामने नतालिया दमित्रीव्ना की यह बात तो मारया अलैक्जेन्ड्रोव्ना ने आपको बताई थी। मैंने अपने कानों से यह बात सुनी थी। मैं छिपकर एक दरार में से आपको देख रहा था।' मोज़ग्ल्याकोव ने बिना सोचे-समझे कि वह क्या कह रहा है—यह बात कह डाली।

'क्या कहा ? तुमने काउन्ट से कहा था कि मैंने तुम्हारे कटोरे में से चीनी चुराई थी ? तो मैं तुम्हारे यहां चीनी चुराने आती हूं, क्यों ?'

'मेरी नज़रों से दूर चले जाओ !' मारया अलैक्जेन्ड्रोव्ना विक्षिप्त होकर चिल्लाई।

'यह सब नहीं चलेगा, मारया अलैक्जेन्ड्रोव्ना ! खबरदार जो ऐसी

बात मुह से निकाली। तो मैंने तुम्हारी चीनी चुराई थी। क्यों? बहुत पहले सुन रखा है कि तुम मेरे बारे में गंदी अफवाहें फैला हो। सोफिया पेत्रोव्ना ने मुझे सारी बातें बता दी हैं—अच्छा त तुम्हारी चीनी चुराती हू, क्यों?'

'श्रीमतियो' यह तो सिर्फ एक सपना था। सपने में आदमी कुछ देख सकता है।' काउन्ट बोले।

'मनहूस टब कहीं को!' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना दबी जबान बोलीं।

'तो मैं टब हू, क्यो?' नतालिया दमित्रीव्ना जोर से चिल्लाई, 'अं तुम क्या हो? मुझे बहुत दिनों से मालूम है कि तुम मुझे टब कह हो। कम से कम मेरा पति तो ढंग का आदमी है, तुम्हारा पति मूर्ख—'

'हा, हा, टब! मुझे याद है,' अनायास ही काउन्ट बड़बड़ा उठे उन्हें मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के साथ हुई अपनी बातचीत याद आ गई

'क्या कहा? और आप भी एक खानदानी औरत को गाली दे हैं? एक खानदानी औरत को गाली देने की हिम्मत आपको कैसे हुई काउन्ट? अगर मैं टब हू तो आप एक टाग वाले अपाहिज हैं!'

'मैं—एक टाग वाला—'

'हां, हां, अपाहिज और साथ ही बिना दात के पोपले भी।'

'और काने भी!' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना चिल्लाईं।

'आपने पसलियों की जगह कारसेट लगा रखी है।' नतालिया दमित्रीव्ना बोली।

'आपका चेहरा स्प्रिगों के सहारे खडा है!'

'आपके सारे बाल नकली हैं।'

'इस बूढ़े बेवकूफ की मूछें भी नकली हैं,' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने टिप्पणी की।

'कम से कम मेरी नाक को तो बख्श दो, मारया अलैक्जैन्ड्रोवना !' काउन्ट ने कहा। इतने अप्रत्याशित रहस्योद्घाटनों से उनके पैरों तले जमीन खिसक गई थी। 'मेरी नाक तो असली है। मेरे दोस्त, जरूर तुम्हीने मुझे धोखा दिया है—तुम्हींने इन लोगों को बताया है कि मेरे बाल नक्ली हैं—'

'ओह चचाजान !'

'नहीं मेरे दोस्त, अब मैं और ज्यादा नहीं ठहर सकता ! कैसी सोसाइटी है ! मुझे यहा से ले चलो। हे ईश्वर, तुम मुझे कहा ले आए हो !'

'नामर्द ! बदमाश !' मारया अलैक्जैन्ड्रोवना चिल्लाई।

'हे ईश्वर !' बदकिस्मत काउन्ट बोले, 'मैं यहा किसलिए आया था, यह तो मुझे याद नही लेकिन अभी याद आ जाएगा। मुझे यहा से ले चलो भाई, ले चलो, वरना ये लोग मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे···इसके अलावा मुझे एक नया विचार लिखना है—'

'मेरे साथ आइए चचाजान, अभी भी वक्त है। मैं फौरन आपको होटल मे ले चलूगा और खुद भी वहीं आ जाऊगा।'

'हा, हा, होटल मे चलो। अलविदा मेरी प्यारी बच्ची—सिर्फ तुम—तुम ही नेक हो। तुम एक शरीफ लड़की हो ! आओ मेरे अज़ीज़ ! हे मेरे ईश्वर !'

लेकिन काउन्ट के जाने के बाद के अप्रिय दृश्य के अन्तिम अंक का मैं यहा वर्णन नही करूगा। सारी महिलाए गाली-गलौज और चीख-चिल्लाहट के साथ वहां से विदा हुईं। और मारया अलैक्जैन्ड्रोवना अपने वैभव के खडहरो के बीच अकेली रह गई। अफसोस ! शक्ति, वैभव, इज्जत सब एक ही शाम मे धूल मे मिल गए। मारया अलैक्जैन्ड्रोवना को महसूस हुआ कि वे कभी भी अपनी पहली ऊचाइयो तक नहीं पहुंच सकेंगी। कई बरसों से मोर्दासोव के सारे समाज पर लगातार जो अत्या-

था। उसका चेहरा पीला और विकृत था। उसकी आँखें जैसे बुखार से चमक रही थीं। उसकी बाहें लकड़ियों की तरह सूखी और पतली थीं। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी और गले में घर्राहट हो रही थी। उसे देखने से लगता था कि कभी वह खूबसूरत रहा होगा लेकिन बीमारी ने उसके खूबसूरत चेहरे को गुमराह आकृति को विकृत कर दिया था। तपेदिक के मरीजों के चेहरों की तरह या यूं कहें कि सभी मरणासन्न व्यक्तियों के चेहरों की तरह उसका चेहरा भी देखने वाले के मन में भय और दया जागरित करता था। उसकी बूढ़ी मां, जो पूरे एक बरस से आखिरी क्षण तक अपने वास्या के स्वस्थ होने की उम्मीद लगाए बैठी थी, समझ गई कि अब वास्या की जिन्दगी जल्द ही खत्म होने वाली है। इस वक्त वह अपने बेटे के सिरहाने शोकातुर भाव से अपने दोनों हाथ बांधे विस्फारित आंखों से अपने बेटे को देख रही थी, उसकी आंखों में आंसू नहीं थे, उसे यह जानते हुए भी यकीन नहीं हो रहा था कि कुछ ही दिनों में उसका लाड़ला वास्या बर्फ से ढकी जमीन के नीचे मनहूस कब्रिस्तान में दफना दिया जाएगा। लेकिन उस वक्त वास्या अपनी मां की तरफ नहीं देख रहा था। उसका क्षीण और पीड़ित चेहरा आनन्द से चमक उठा। उसने अपने सिरहाने खड़ी ज़ेना को देखा, पिछले डेढ़ बरस से सोते, जागते, बीमारी की लम्बी दुखदायी रातों में वह जिसके सपने देखता आ रहा था। वह समझ गया कि ज़ेना ने उसे माफ कर दिया है और वह उसके जीवन की अन्तिम घड़ी में दैवी फरिश्ता बनकर खड़ी है। ज़ेना ने उसके हाथों को दबाया, उसपर झुककर रोने लगी, उसे देखकर मुस्कराई। वह अपनी दिव्य आंखों से उसकी तरफ देखने लगी। मरणासन्न व्यक्ति के हृदय में सारा अतीत फिर से जाग उठा, वह अतीत जो कभी लौटकर नहीं आने वाला था। उसके हृदय में जीवन की ज्योति फिर से जल उठी, शायद उसे छोड़ने से पहले जिन्दगी उस अभागे को महसूस करा देना चाहती थी कि जिन्दगी से जुदा होना

कितना कठिन होगा !

उसने कहा, 'जेना ! प्यारी जेना ! मेरी खातिर मत रोओ, शोक मत मनाओ, दु:खी मत होओ ! मुझे याद मत दिलाओ कि मैं जल्द ही मरने वाला हूं। मैं जिस तरह तुम्हारी तरफ इस वक्त देख रहा हूं, उसी तरह देखता रहूंगा। मुझे महसूस होगा कि हमारी आत्माएं फिर एक हो गई हैं, और तुमने मुझे माफ कर दिया है। मैं पहले की तरह तुम्हारे हाथ चूमूंगा और शायद बिना यह महसूस किए कि मैं मर रहा हूं, इस दुनिया से चला जाऊंगा। तुम कितनी दुबली हो गई हो जेना ! मेरी देवी, अब तुम कितनी दयालु नज़रों से मेरी तरफ देख रही हो ! तुम्हें याद है तुम किस तरह हंसा करती थी ? तुम्हें याद है'''ओह जेना, मैं तुमसे माफी नहीं माग रहा। जो कुछ हुआ है मैं उसे याद नहीं करना चाहता, क्योंकि जेना प्यारी, तुमने चाहे मुझे माफ कर भी दिया हो, लेकिन मैं अपने को माफ नहीं कर सकता। मैंने लम्बी रातें काटी हैं जेना, बिना नींद के, भयंकर रातें। इसी बिस्तर पर लेटकर, मैं सोचता रहा हूं, बहुत-सी बातों के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा हूं, मैं बहुत दिनों से फैसला कर चुका था कि मेरे लिए मर जाना ही बेहतर है, कहीं बेहतर ! मैं जीने के काबिल नहीं हूं, जेना प्यारी !'

जेना रो पड़ी और खामोशी से वास्या के हाथ दबाने लगी, जैसे उसे इस तरह की बातें बन्द करने को कह रही हो।

'तुम रोती क्यों हो मेरी देवी !' रोगी ने कहा, 'क्योंकि मैं मर रहा हूं—सिर्फ इसलिए ? लेकिन बाकी सब कुछ तो कभी का मर चुका है और दफनाया जा चुका है। तुम मुझसे ज्यादा अक्लमन्द हो, तुम्हारा दिल भी ज्यादा पवित्र है और तुम बहुत दिनों से जान गई होगी कि मैं एक बुरा आदमी था, फिर भी क्या तुम मुझसे प्यार करती रहोगी ? यह सोचकर कि तुमने मुझे मेरे असर्स,

"तुम मुझे रोशनी कहती हो बेटा ! मैं जानता हूँ कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया है। शायद तुमने मुझे बहुत पहले ही क्षमा कर दिया था। लेकिन तुमने मेरा असली रूप देखने के बाद मुझसे मेरे बारे में क्या राय बनायी की होगी, इसी तरह के मेरे दिल में शोला हो रही है। मैं तुम्हारे प्यार के काबिल नहीं हूँ, बेटा ! तुम अपनी जिन्दगी में ईमानदार और मजबूत थीं। तुमने अपनी मां के पास जाकर साफ-साफ कह दिया कि तुम मेरे सिवा किसी और से शादी नहीं करोगी, और तुमने अपनी बात निभाई थी, क्योंकि तुम्हारे लिए प्यार और व्यवहार अलग-अलग चीजें नहीं हैं। लेकिन मैं, मैं ? अब व्यवहार की बात आई—तुम अपने हो बेटा, मैं यह तक नहीं समझ सका कि मुझसे शादी करके तुम्हें कितनी बड़ी कुर्बानी करनी पड़ेगी। उस वक्त मैं यह तक न समझ सका कि मुझसे शादी करके शायद तुम्हें भूखों मरना पड़ेगा। यह बात मेरे दिमाग में ही नहीं आई ! मैंने सिर्फ इतना ही सोचा कि तुम मुझ जैसे महान् कवि से शादी करोगी। (जिसकी महानता भविष्य के गर्भ में छिपी है) और तुमने शादी को स्थगित करने के लिए जो कारण दिए उन्हें मैं बिल्कुल न समझ सका। मैंने तुम्हें पीड़ा पहुँचाई, तुम पर अत्याचार

का वक्त आया तो उसने अपने-आपको बेहद डरपोक महसूस कि उसे मालूम था कि बीमार आदमी को फांसी नहीं दी जाती', उसने से बाल्टी मंगवाई और उसमें थोड़ा-सा तम्बाकू घोलकर पी ग इतनी देर तक उसकी नाली में से खून निकलता रहा कि उसके फे खराब हो गए। उसे अस्पताल में भेज दिया गया और कुछ ही मही बाद स्वाभाविक रूप से उसकी मौत हो गई। ओह मेरी प्यारी, उन दि मुझे उस कैदी की याद आई—उस रात की घटना के बाद—और मैंने आत हत्या करने का निश्चय कर लिया। लेकिन तुम्हारा क्या ख्याल है, मैं तपेदिक को क्यों चुना ? मैंने अपने गले में फांसी क्यों नहीं लगा ली डूब क्यों नहीं गया ? क्या मुझे इतनी जल्दी मरने से डर लगता था? शायद यह बात भी रही हो, लेकिन मैं यह सोचे बगैर नहीं रह सकता, झेना, कि यहां भी मैं मधुर रोमांटिक बेवकूफी से अपने को नहीं बचा सका। उस वक्त भी मैं यह रोमांटिक कल्पना किए बगैर न रह सका—मैं बिस्तर पर लेटा हूं, तपेदिक से मैं मर रहा हूं, तुम दुखी और शोकातुर हो, मैं सोचता हूं कि तुम्हारी वजह से ही मुझे तपेदिक हुआ है। तुम मुझसे माफी मांगने आओगी···तुम मेरे आगे घुटनों के बल गिर पड़ोगी···मैं तुम्हें माफ कर दूंगा और तुम्हारी बांहों में मर जाऊंगा। कैसी बेवकूफ थी झेना ! थी न ?'

'ये सारी बातें भूल जाओ।' झेना ने कहा, 'इस बात की चर्चा मत करो ! दरअसल तुम ऐसे नहीं हो। आओ, किसी और विषय पर बातें करें—उन दिनों की जो हम दोनों ने एकसाथ गुजारे थे।'

'मेरा दिल उदास है, मेरी प्यारी, इसीलिए मैं इन बातों को याद कर रहा हूं। मैंने डेढ़ बरस से तुम्हें नहीं देखा ! मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपनी सारी आत्मा तुम्हारे आगे खोलकर रख सकता हूं। इस बीच सारा वक्त मैं बिल्कुल अकेला रहा हूं और मेरे ख्याल में एक क्षण भी ऐसा नहीं गुजरा जब मैंने तुम्हें याद न किया हो। मेरी खूबसूरत

देवी ! काश, तुम्हें मालूम होता ज़ेना, कि मैं कोई ऐसा काम करने के लिए बेचैन था, जिससे मैं इस काबिल हो जाऊं कि मेरे बारे में तुम्हारी राय बदल सके। आखिरी वक्त तक मुझे कभी यकीन नहीं हुआ कि मैं मर जाऊंगा। आखिर मैं पहली बार तो बीमार नहीं पड़ा। बहुत लंबे अरसे तक मैं कमज़ोर फेफड़े लिए घूमता रहा और मेरे दिमाग में कैसी फिज़ूल बातें आती रहीं ! मिसाल के लिए मैंने कल्पना की कि मैं अचानक एक महान् कवि बन गया हूं और मेरी एक कविता ओतेचेस्तवेनीय ज़ेपीस्की में छपी है, ऐसी कविता जैसी पहले कभी नहीं लिखी गई। मैंने सोचा कि उस कविता में अपनी सारी भावनाएं उड़ेल दूंगा, अपनी सारी आत्मा डाल दूंगा ताकि तुम जहां भी रहोगी मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा, अपनी कविताओं द्वारा हमेशा तुम्हें अपनी याद दिलाता रहूंगा। मेरा सबसे प्यारा सपना यह था कि किसी दिन तुम सारी बातों पर फिर से सोचोगी और कहोगी, 'नहीं, यह आदमी इतना बुरा नहीं है, जितना मैं उसे समझती थी। कैसी बेवकूफी थी ज़ेना, थी न ?'

'नहीं, नहीं, वास्या, नहीं !' ज़ेना ने कहा। वह वास्या के सीने पर गिर पड़ी और उसने वास्या के दोनों हाथ चूम लिए।

'और मुझे सारा वक्त कितनी ईर्ष्या होती थी, मेरा ख्याल है अगर मुझे खबर मिलती कि तुम्हारी शादी हो गई है तो मैं मर जाता। मैं तुम्हारी सारी खबरों का पता लगाने की कोशिश करता था। मैंने तुम-पर पहरा रख छोड़ा था, जासूसी करता था, जासूसी···मैं इसे वहां भेजता रहता था (उसने अपनी मां की तरफ इशारा किया)। तुम मोज़ग्ल्याकोव से प्यार तो नहीं करती थीं, ज़ेना ? ओह मेरी प्यारी ! मेरे मरने के बाद क्या कभी तुम मुझे याद करोगी ? मैं जानता हूं कि तुम करोगी, लेकिन वक्त के साथ ही तुम्हारा दिल भी ठंडा पड़ता जाएगा, तुम्हारी आत्मा में शीत समा जाएगा और तुम्हारा दिल ठंडा पड़ जाएगा, तुम मुझे भूल जाओगी'

का वक्त आया तो उसने अपने-आपको बेहद डरपोक साबित कि उसे मालूम था कि बीमार आदमी को फांसी नहीं दी जाती, उसने से थोड़ा मंगवाई और उसमें थोड़ा-सा तम्बाकू घोलकर पी ग इतनी देर तक उसकी खांसी में से खून निकलता रहा कि उसके फें खराब हो गए। उसे अस्पताल में भेज दिया गया और कुछ ही मह बाद राजयक्ष्मा रोग से उसकी मौत हो गई। ओह मेरी प्यारी, उस मुझे उस कैदी की याद आई—खून की घटना के बाद—और मैंने आत हत्या करने का निश्चय कर लिया। लेकिन तुम्हारा क्या ख्याल है, तपेदिक को क्यों चुना ? मैंने अपने गले में फांसी क्यों नहीं लगा ली डूब क्यों नहीं गया ? क्या मुझे इतनी जल्दी मरने से डर लगता था शायद यह बात भी रही हो, लेकिन मैं यह सोचे बगैर नहीं रह सकत ज़ेना, कि यहां भी मैं मधुर रोमांटिक बेवकूफी से अपने को नहीं बच सका। उस वक्त भी मैं यह रोमांटिक कल्पना किए बगैर न रह सका—*मैं बिस्तर पर लेटा हूं, तपेदिक से मैं मर रहा हूं, तुम दुःखी और घोकातुर हो, मैं सोचता हूं कि तुम्हारी वजह से ही मुझे तपेदिक हुआ है। तुम मुझसे माफी मांगने आओगी '' 'तुम मेरे आगे घुटनों के बल गिर पड़ोगी '' 'मैं तुम्हें माफ कर दूंगा और तुम्हारी बांहों में मर जाऊंगा।* कैसी बेवकूफ थी ज़ेना ! थी न ?'

'ये सारी बातें भूल जाओ।' ज़ेना ने कहा, 'इस बात की चर्चा मत करो ! दरअसल तुम ऐसे नहीं हो। आओ, किसी और विषय पर बातें करें—उन दिनों की जो हम दोनों ने एकसाथ गुज़ारे थे।'

'मेरा दिल उदास है, मेरी प्यारी, इसीलिए मैं इन बातों को याद कर रहा हूं। मैंने डेढ़ बरस से तुम्हें नहीं देखा ! मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपनी सारी आत्मा तुम्हारे आगे खोलकर रख सकता हूं। इस बीच सारा वक्त मैं बिल्कुल अकेला रहा हूं और मेरे ख्याल में एक क्षण भी ऐसा नहीं गुज़रा जब मैंने तुम्हें याद न किया हो। मेरी खूबसूरत

देवी ! काश, तुम्हें मालूम होता जेना, कि मैं कोई ऐसा काम करने के लिए बेचैन था, जिससे मैं इस काबिल हो जाऊं कि मेरे बारे में तुम्हारी राय बदल सके। आखिरी वक्त तक मुझे कभी यकीन नहीं हुआ कि मैं मर जाऊंगा। आखिर मैं पहली बार तो बीमार नहीं पड़ा। बहुत लंबे अरसे तक मैं कमज़ोर फेफड़े लिए घूमता रहा और मेरे दिमाग में कैसी फिज़ूल बातें आती रहीं ! मिसाल के लिए मैंने कल्पना की कि मैं अचानक एक महान् कवि बन गया हूं और मेरी एक कविता ओतेचेस्त्वेनीय ज़ेपीस्की में छपी है, ऐसी कविता जैसी पहले कभी नहीं लिखी गई। मैंने सोचा कि उस कविता में अपनी सारी भावनाएं उड़ेल दूंगा, अपनी सारी आत्मा डाल दूंगा ताकि तुम जहां भी रहोगी मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा, अपनी कविताओं द्वारा हमेशा तुम्हें अपनी याद दिलाता रहूंगा। मेरा सबसे प्यारा सपना यह था कि किसी दिन तुम सारी बातों पर फिर से सोचोगी और कहोगी, 'नहीं, यह आदमी इतना बुरा नहीं है, जितना मैं उसे समझती थी। कैसी बेवकूफी थी जेना, थी न ?'

'नहीं, नहीं, वास्या, नहीं !' जेना ने कहा। वह वास्या के सीने पर गिर पड़ी और उसने वास्या के दोनों हाथ चूम लिए।

'और मुझे सारा वक्त कितनी ईर्ष्या होती थी; मेरा ख्याल है अगर मुझे खबर मिलती कि तुम्हारी शादी हो गई है तो मैं मर जाता। मैं तुम्हारी सारी खबरों का पता लगाने की कोशिश करता था। मैंने तुम पर पहरा रख छोड़ा था, जासूसी करता था, जासूसी···मैं इसे वहां भेजता रहता था (उसने अपनी मां की तरफ इशारा किया)। तुम मोज़ग्ल्याकोव से प्यार तो नहीं करती थीं, जेना ? ओह मेरी प्यारी ! मेरे मरने के बाद क्या कभी तुम मुझे याद करोगी ? मैं जानता हूं कि तुम करोगी, लेकिन वक्त के साथ ही तुम्हार···   ठंडा पड़ता जाएगा, तुम्हारी   ठंडा पड़ जाएगा, तुम मुझे

'नहीं, नहीं, कभी नहीं ! और मैं कभी शादी नहीं करूंगी। तुम पहले'''मेरे सब कुछ—'

'सब चीजें मर जाती हैं जेना, यहां तक कि स्मृतियां भी''' हमारे उदात्त से उदात्त विचार भी मर जाते हैं। उनका स्थान वि ले लेता है। शिकायत क्यों करो जेना ! जिन्दगी का आनन्द लो जेन तुम्हारी लंबी उम्र हो, तुम सुखी रहो ! अगर तुम्हें प्यार करता हो तो किसी और से प्यार करना। कोई भी मरे हुए आदमी से प्यार न कर सकता। लेकिन कभी-कभी मेरी याद जरूर कर लिया करना। गलत था उसे भूल जाओ, गलतियों को माफ कर दो। हमारे प्यार अच्छाई भी थी। क्या नहीं थी, जेना ? ओह् वे सुनहरी, कभी न लौट वाले दिन—सुनो मेरी प्यारी, मैंने हमेशा सूर्यास्त की बेला से प्या किया है। इसी वक्त कभी-कभी तुम मुझे याद कर लिया करना। ओह नहीं, नहीं। दुनिया में आखिर किसीकी मौत क्यों हो ? ओह, अपनी जिन्दगी वापस पाकर मुझे कितनी खुशी होगी ? याद रखना, मेरी प्यारी, उन दिनों को याद रखना ! उन दिनों वसन्त था, सूरज में चमक थी, फूल खिले थे, चारों तरफ आनन्द का उत्सव था। और अब ! देखो ! ओह, देखो !'

उस अभागे ने अपने सूखे हाथ से खिड़की के धुंधले शीशे की तरफ इशारा किया, जिसपर बर्फ जमी थी। फिर उसने जेना के हाथ पकड़-कर अपनी आंखों से लगा लिए और वह बुरी तरह सिसकने लगा। उसकी सिसकियों ने उसके दु:खी हृदय को करीब-करीब तोड़ डाला।

वास्या दिन-भर विलाप करता रहा और रोता रहा। जेना ने उसे भरसक सान्त्वना देने की कोशिश की, लेकिन खुद उसकी तबियत भी बहुत खराब हो रही थी। उसने वास्या से कहा कि वह उसे कभी नहीं भूलेगी, और जितना प्यार उसने वास्या से किया है, उतना किसीसे नहीं किया। वास्या को उसकी बात पर यकीन हो गया, वह मुस्कराया।

उसने जेना के हाथ चूमे, लेकिन अतीत की स्मृतियां उसके मन को पहले से और भी ज्यादा कचोटने लगीं। इसी तरह पूरा दिन गुज़र गया। इस बीच भयभीत मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने बार-बार जेना को कहलवा भेजा कि वह घर लौट आए और दुनिया की नजरों में अपनी रही-सही इज्जत भी मिट्टी में न मिलाए। फिर जब बिल्कुल अंधेरा हो गया, तो मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने, जो आतंक से पागल हो रही थी, खुद ही जाकर जेना को बुलाने का निश्चय किया। जेना को साथ वाले कमरे में बुलाकर वे घुटनों के बल गिरकर मिन्नत करने लगी, 'इस आखिरी और सबसे ज्यादा चुभने वाले छुरे को मेरे दिल से निकाल दो।' जेना जब मां से मिलने आई तो उसका माथा जल रहा था और वह अपने को बीमार महसूस कर रही थी। उसने मां की बातों को सुना लेकिन उसकी समझ में एक भी शब्द न आया। आखिरकार मारया अलेक्जेंड्रोव्ना निराश होकर वहां से चली गई, क्योंकि जेना ने मरणासन्न रोगी के घर में रात बिताने का फैसला किया था। रात-भर वह उसके सिरहाने बैठी रही, लेकिन रोगी की हालत लगातार बिगड़ती गई। दिन निकला, लेकिन रोगी के जिन्दा रहने की कोई उम्मीद न रही। बूढ़ी मां शोक से पागल हो रही थी और बेटे को दवाई दे रही थी, जिसे पीने से वह इन्कार कर देता था। मृत्यु की यन्त्रणा बहुत लंबी हो गई। उसकी जबान बन्द हो गई। सिर्फ उसके सीने में से भर्राई, अस्पष्ट आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, आखिरी क्षण तक वह जेना की तरफ देखता रहा, जेना की नजरों को तलाश करता रहा, लेकिन जब उसकी आंखों की रोशनी धुंधली पड़ गई तो फिर उसने अपनी कांपती उंगलियों से जेना की उंगलियों को टटोला, अपनी उंगलियों में जकड़ लिया। उधर जाड़ों का छोटा दिन जल्दी से बीत रहा था। और आखिरकार जब धूप की आखिरी किरन उस छोटी कोठरी की बर्फ से जमी खिड़की से टकराई तो पीड़ित आदमी की आत्मा उसके शरीर से चली गई। बूढ़ी मां ने जब अपनी आंखों से अपने लाड़ले

'नहीं, नहीं, कभी नहीं! और मैं कभी शादी नहीं करूंगी। तुम पहले ···मेरे सब कुछ—'

'सब चीजें मर जाती हैं ज़ेना, यहां तक कि स्मृतियां भी···बं हमारे उदात्त से उदात्त विचार भी मर जाते हैं। उनका स्थान वि ले लेता है। शिकायत क्यों करो ज़ेना! ज़िन्दगी का आनन्द लो ज़ेना तुम्हारी लंबी उम्र हो, तुम सुखी रहो! अगर तुम्हें प्यार करना हो तो किसी और से प्यार करना। कोई भी मरे हुए आदमी से प्यार न कर सकता। लेकिन कभी-कभी मेरी याद ज़रूर कर लिया करना। जं गलत था उसे भूल जाओ, गलतियों को माफ कर दो। हमारे प्यार अच्छाई भी थी। क्या नहीं थी, ज़ेना? ओह वे सुनहरी, कभी न लौट वाले दिन—सुनो मेरी प्यारी, मैंने हमेशा सूर्यास्त की बेला से प्या किया है। इसी वक्त कभी-कभी तुम मुझे याद कर लिया करना। ओह, नहीं, नहीं। दुनिया में आखिर किसीकी मौत क्यों हो? ओह, अपनी ज़िन्दगी वापस पाकर मुझे कितनी खुशी होगी? याद रखना, मेरी प्यारी, उन दिनों को याद रखना! उन दिनों वसन्त था, सूरज में चमक थी, फूल खिले थे, चारों तरफ आनन्द का उत्सव था। और अब! देखो! ओह, देखो!'

उस अभागे ने अपने सूखे हाथ से खिड़की के धुंधले शीशे की तरफ इशारा किया, जिसपर बर्फ जमी थी। फिर उसने ज़ेना के हाथ पकड़कर अपनी आंखों से लगा लिए और वह बुरी तरह सिसकने लगा। उसकी सिसकियों ने उसके दुःखी हृदय को करीब-करीब तोड़ डाला।

वास्या दिन-भर विलाप करता रहा और रोता रहा। ज़ेना ने उसे भरसक सान्त्वना देने की कोशिश की, लेकिन खुद उसकी तबियत भी बहुत खराब हो रही थी। उसने वास्या से कहा कि वह उसे कभी न भूलेगी, और जितना प्यार उसने वास्या से किया है, उतना किसीसे न किया। वास्या को उसकी बात पर यकीन हो

कर सड़क पर आ गया और नीचे, जेना के साथ-साथ भागने लगा। वह लगातार जेना के चेहरे की तरफ झांक रहा था।

'ज़िनेदा अफ़नासीव्ना, मैं इस मामले पर सोचता रहा हू और अगर तुम चाहो तो मैं नये सिरे से शादी का प्रस्ताव करने के लिए तैयार हूं। यहा तक कि मैं पुरानी सारी बातें भूलने के लिए भी तैयार हू। ज़िनेदा अफ़नासीव्ना, सारा अपमान भूलने के लिए और तुम्हें माफ करने के लिए तैयार हू, लेकिन सिर्फ एक शर्त पर—अब तक हम यहा हैं यह भेद गुप्त रहना चाहिए। तुम जल्द से जल्द यहा से चली जाओगी और मैं चुपके से तुम्हारे पीछे आ जाऊगा। हम दूर किसी जगह जाकर शादी कर लेंगे, जहा हमें देखने वाला कोई न हो। फिर सीधे पीटर्सबर्ग चले आएगे, अगर ज़रूरत पड़ी तो रास्ते मे रुकते हुए चलेंगे, अपने साथ सिर्फ एक छोटा-सा सफ़री बैग ले चलेंगे'''क्यो ? तुम राजी हो ज़िनेदा अफ़नासीव्ना ? मुझे जल्दी से बताओ ! मैं इन्तज़ार नहीं कर सकता—लोग हम दोनो को एक साथ देख लेंगे।'

जेना ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ उसकी तरफ देखा, और ऐसी नज़रों से देखा कि वह सब कुछ समझ गया। उसने अपना हैट उतारकर सिर झुकाया और अगला मोड़ आने पर गायब हो गया।

उसे ताज्जुब हुआ, 'आखिर माजरा क्या है ! परसो तो वह इतने भावावेश मे बातें कर रही थी और सारा दोष अपने ऊपर ले रही थी। सच है, कोई दो दिन एक जैसे नहीं होते।'

इस बीच मोर्दासोव में अनेक नई घटनाए घटती गई। एक दु खात घटना भी घटी। काउन्ट, जिन्हे मोज़ग्ल्याकोव होटल मे छोड़कर आया था उसी रात बीमार पड़ गए और उनकी बीमारी खतरनाक साबित हुई। अगले दिन सुबह मोर्दासोव के लोगों को यह खबर मालूम हुई। अलिस्त स्तेनिस्लाविच काउन्ट के सिरहाने से हिला तक नहीं। शाम

के वक्त मोर्दासोव के सारे डाक्टरों ने मिलकर मरीज की हालत पर विचार किया। इस गोष्ठी के निमन्त्रण-पत्र लैटिन में लिखे गए, लेकिन लैटिन के बावजूद काउन्ट का मन बहुत रहा था और प्रचार कर रहे थे। वे कार्लिस्बाद और स्पेनिश्लाविक से कोई चीज मंगाने के लिए चिन्तन कर रहे थे और नकली बालों की टोपियों के बारे में बहस कर रहे थे। डाक्टरों ने कहा कि मोर्दासोव के अतिथि-सत्कार से काउन्ट की आंतों में सूजन हो गई है, जो उनके दिमाग तक पहुंच गई है (सूजन अभी तक दिमाग के रास्ते में ही थी)। किसी नैतिक आघात के परिणामों की ओर भी इशारा किया गया। अंत में लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि बहुत अरसे से काउन्ट मौत के नजदीक बढ़ते आ रहे थे, इसलिए उनकी मौत लाज़मी ही थी। यह अनुमान गलत नहीं निकला, क्योंकि तीसरे दिन शाम को ही काउन्ट की होटल में मृत्यु हो गई। इस खबर से मोर्दासोव के लोगों पर जैसे वज्रपात हुआ। मामला इतना गम्भीर हो जाएगा, यह किसीको उम्मीद नहीं थी। लोगों की भीड़ होटल में जमा हो गई, जहां काउन्ट की लाश रखी थी, अभी तक उसे सजाया नहीं गया था। लोगों ने बहसें कीं, प्रवचन दिए, सिर हिलाए और अंत में बड़े कठोर स्वर में उन्होंने अभागे काउन्ट के हत्यारों की भर्त्सना भी की। उनका संकेत मारया अलेक्जैंड्रोव्ना और उसकी बेटी की तरफ था। सब महसूस कर रहे थे कि यह मामला बड़ा रहस्यमय था। उसके बड़े अप्रिय अर्थ लगाए जा सकते थे। इस मामले की चर्चा बहुत दूर-दूर तक फैल सकती थी। लोगों की बातों और भविष्य-वाणियों का कोई अंत न था। मोज़ग्ल्याकोव सारा वक्त परेशानी में इधर से उधर चक्कर काटता रहा और आडम्बर दिखाता रहा। उसका सिर चकराने लगा। इसी हालत में वह ज़ेना से मिलने गया था। उसकी स्थिति भी कम नाजुक नहीं थी। वही तो काउन्ट को इस शहर में लाया था, उन्हें होटल में ले गया था। अब उसकी समझ में नहीं आ

रहा था कि लाश का क्या करे, लाश को कहां दफनाए, किन-किन लोगों को खबर करे, लाश को दुखोनोवो भेजे या नहीं। चाहे जो हो वह अपने को काउन्ट का भतीजा समझता था। उसे डर था कि कहीं उसपर बूढ़े की मौत का अपराध न लगाया जाए। उसने कांपते हुए मन से सोचा, 'क्या पता इस मामले की चर्चा पीटर्सबर्ग के समाज में भी पहुंचे।' मोर्दासोव में सलाह देने वाला भी कोई नहीं था! सब लोग सहसा भयभीत हो गए, लाश छोड़कर चले गए, और मोज्ग्ल्याकोव उदास और अकेला रह गया। लेकिन जल्द ही सारी स्थिति एकदम बदल गई। अगले दिन सुबह एक आदमी मोर्दासोव में आया। पलक झपकते ही लोगों में इस नये आगन्तुक की चर्चा होने लगी, लेकिन भेद भरे ढंग से, फुसफुसाकर। लोग खिड़कियों और छेदों में से उसे झांककर देखते रहे, जब वह बड़ी सड़क पर से गुजरकर गवर्नर के यहां पहुंचा। खुद गवर्नर भी घबरा गया था, उसकी समझ में नहीं आता था कि आगन्तुक से किस ढंग से बात करे।

यह आगन्तुक प्रिंस शेपीतीलोव था जिसकी चर्चा सबने सुनी थी। वह काउन्ट का रिश्तेदार था, वह अभी तक जवान था, ज्यादा से ज्यादा उसकी उम्र पैंतीस बरस की होगी। उसकी वर्दी पर कर्नल के ओहदे के चिह्न थे, *जिन्हें देखते ही मोर्दासोव के सारे अफसरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।* मिसाल के लिए पुलिस के चीफ के होश-हवास गुम हो गये—मैं तो आलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहा हूं, क्योंकि वैसे देखा जाए तो वह सही-सलामत था। उसका सिर भी सलामत था, हालांकि अब वह इस सिर को बहुत ऊंचा नहीं उठा सकता था! फौरन लोगों को यह खबर मिल गई कि शेपीतीलोव पीटर्सबर्ग से आया है। रास्ते में वह दुखानोवो भी गया था। अपने चचा को वहां न पाकर वह मोर्दासोव आया था, जहां आकर उसे बूढ़े काउन्ट की मौत की खबर मिली थी। उसे बेहद सदमा [illegible]

... काउण्ट की मृत्यु के बारे में बताते हुए शर्मिंदा हो गया। योर्दानोव के हर आदमी के चेहरे पर आतंक छा गया, जैसे उसने कोई भीषणतापूर्ण काम कर डाला हो। इसके अलावा आगुंतुक के चेहरे पर कठोरता और नाराजगी का भाव था—यह समझना कठिन था कि कोई जायदाद निगम पर भी इतना नाराज कैसे हो सकता है। आगन्तुक ने फौरन, खुद अपने स्वर्गीय चचा के मामलों की छानबीन करनी शुरू कर दी। मोनास्त्यारोव ने जब देखा कि काउण्ट का असली भतीजा आ गया है तो वह फौरन वहाँ शर्मनाक ढोंग करके वहाँ से गायब हो गया और फिर उसकी सूरत भी नहीं दिखाई दी। यह तय हुआ कि लाश को फौरन मठ में ले जाना चाहिए जहाँ अन्तिम प्रार्थनाएं पढ़ी जाएंगी। आगन्तुक ने बड़े मुहज्जब, कठोर, मातहत लेकिन शिष्ट और शालीन ढंग से हुक्म दिए। अगले दिन शहर के सारे लोग जनाजे के लिए मठ में इकट्ठे हुए। महिलाओं में एक बेहूदा अफवाह फैली कि मारया अलेक्जेंड्रोव्ना गिर्जे में आकर ताबूत के आगे घुटने टेककर माफी मांगेगी, क्योंकि कानून में ऐसा लिखा है। यह सब निरी बकवास थी क्योंकि मारया अलेक्जेंड्रोव्ना तो गिर्जे तक भी नहीं गई। हम यह बताना भूल गए कि जब जेना घर लौटी तो उसकी मां ने उसी रात गांव में जाने का फैसला कर लिया, क्योंकि उनका ख्याल था कि शहर में उनका रहना नामुमकिन है। अपने घर के एकान्त में जिज्ञासा का ज्वर लिए वे शहर की इन अफवाहों को सुनती रहीं और आगन्तुक के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने जासूस भेजे। मठ से दुखानोवो जाने वाली सड़क मारया अलेक्जेंड्रोव्ना के देहात के घर से एक मील से भी कम थी, इसलिए वे आराम से दुखानोवो लौटने वाले लम्बे जलूस को देख सकती थीं। एक ऊंची अर्थी पर ताबूत रखा था, उसके बाद गाड़ियों की लम्बी कतारें थीं, जो जनाजे को शहर के मोड़ तक पहुंचाने जा रही थीं। बहुत देर तक सफेद बर्फ से ढके खेतों की

तक पहुंची थीं। काउन्ट की मृत्यु के बारे में बताते हुए गवर्नर भी घबरा गया। मोर्दासोव के हर आदमी के चेहरे पर आतंक छा गया था जैसे सबने कोई नीचतापूर्ण काम कर डाला हो। इसके अलावा आगतुक के चेहरे पर कठोरता और नाराजगी का भाव था—यह कल्पना करना कठिन था कि कोई जायदाद मिलने पर भी इतना नाराज कैसे हो सकता है। आगन्तुक ने फौरन, खुद अपने स्वर्गीय चचा के मामलों की छान-बीन करनी शुरू कर दी। मोज़ग्ल्याकोव ने अब देखा कि काउन्ट का असली भतीजा आ गया है तो वह फौरन बड़ी शर्मनाक शीघ्रता के साथ वहां से गायब हो गया और फिर उसकी शक्ल भी नहीं दिखाई दी। यह तय हुआ कि लाश को फौरन मठ मे ले जाना चाहिए जहा अन्तिम प्रार्थनाएं पढ़ी जाएगी। आगतुक ने बड़े मुहफट, कठोर, भावशून्य लेकिन शिष्ट और शालीन ढंग से हुक्म दिए। अगले दिन शहर के सारे लोग जनाजे के लिए मठ मे इकट्ठे हुए। महिलाओं मे एक बेहूदा अफवाह फैली कि मारया अलेक्सांद्रोव्ना गिर्जे मे आकर ताबूत के आगे घुटने टेककर माफी मांगेंगी, क्योंकि कानून मे ऐसा लिखा है। यह सब निरी बकवास थी क्योंकि मारया अलेक्सांद्रोव्ना तो गिर्जे तक भी नहीं गईं। ...न यह जानकर भूल गए कि जब जेना घर लौटी तो उसकी मां ने उसी ...त गांव में जाने का फैसला कर लिया, क्योंकि उनका ख्याल था कि ...हर मे उनका रहना नामुमकिन है। अपने घर के एकान्त मे जिज्ञासा ...ा ज्वर लिए वे शहर की इन अफवाहों को सुनती रहीं और आगतुक ... बारे मे जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होने जासूस भेजे। मठ से ...तानोवो जाने वाली सड़क मारया अलेक्सांद्रोव्ना के देहात के घर से ...क मील से भी कम थी, इसलिए वे आराम से दुखानोवो लौटने वाले ...्बे जलूस को देख सकती थीं। एक ऊंची अर्थी पर ताबूत रखा था, ...के बाद गाड़ियों की लम्बी कतारें थीं, जो जनाजे को शहर के मोड़ ... पहुंचाने जा रही थीं। बहुत देर तक सफेद बर्फ से ढके खेतों की

पृष्ठभूमि में काला, उदास ताबूत नजर आता रहा और धीमी, शालीन रफ्तार से आगे बढ़ता गया, लेकिन मारया अलैक्जैंड्रोव्ना इस दृश्य को बर्दाश्त न कर सकीं और जल्द ही खिड़की से हट गईं।

अगले ही हफ्ते वे अफानासी मातविच और अपनी बेटी को लेकर मास्को चली गईं, और एक महीने बाद मोर्दासोव के लोगों को खबर *मिली कि मारया अलैक्जैंड्रोव्ना का शहर और देहात का मकान बिकाऊ* हैं। इस तरह मोर्दासोव हमेशा के लिए अपनी सबसे शालीन और शिष्ट महिला से वंचित हो गया। इस खबर में भी बदनामी का पुट था जैसा कि अक्सर खबरों में रहता है। मिसाल के लिए जोर-शोर से यह कहा गया कि जायदाद के साथ ही अफानासी मातविच को भी फेंका जा रहा है। एक बरस बीत गया, दो बरस बीत गए और मोर्दासोव के लोग मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को करीब-करीब भूल गए। अफसोस! हमेशा से दुनिया का यही दस्तूर रहा है? खबर मिली कि मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने किसी दूसरे छोटे शहर में जायदाद खरीद ली है और वे वहीं चली गई हैं। वहां जाकर उन्होंने जरूर ही सबपर अपना रौब जमा लिया होगा, ज़ेना अभी तक कुआरी होगी और अफानासी मातविच···लेकिन ऐसी अफवाहों को दुहराने से क्या फायदा। वे कतई विश्वसनीय नहीं होतीं।

तीन बरस पहले मैंने मोर्दासोव के इतिहास के पहले भाग को खत्म किया था। मुझे अपनी पाण्डुलिपि खोलकर अब अपनी कहानी में एक ब्यौरा और जोड़ना पड़ेगा, इसपर भला किसको विश्वास हो सकता था। लेकिन मैं अपनी कहानी का जिक्र कर रहा था। सबसे पहले मैं पावेल अलैक्जैंड्रोविच मोज़ग्ल्याकोव की बात लिखूंगा। मोर्दासोव से दुम दबाकर भागने के बाद वह सीधा पीटर्सबर्ग चला गया, जहां खुश-किस्मती से उसे वह नौकरी मिल गई जिसका वादा उसे बहुत दिनों से दिया गया था। जल्द ही वह मोर्दासोव की दुःखान्त घटनाओं को भूल

रूसा और बेलोरूसकी ईस और मार्सेलीज बन्दरगाह की मौसम के बारे में कूद पड़ा। वह भोग-विलास में लिप्त रहने लगा; उस के रिवाज के मुताबिक औरतों से प्रेम-निवेदन, प्यार और शादी इकरार करने लगा। अन्त में दूसरी बार प्यार में ठुकराए जाने पर जब वह न बर्दाश्त कर सका तो उसने अपने स्वाभाविक कौशल और निश्चयात्मकता से प्रेरित होकर अपनी नियुक्ति ऐसे मिशन पर करा ली जो हमारे विशाल देश के सबसे दूर कोने में जा रहा था। वह मिशन निरीक्षण के लिए था किसी और काम से वहां जा रहा था, यह मैं नहीं जानता। अन्तहीन जंगलों, ऊसर जमीनों को नदी-जंगलात पार करता हुआ बहुत भारी भटकने के बाद वह मिशन उस दूर प्रदेश के बड़े शहर में आ पहुंचा और वहां के गवर्नर जनरल के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए उसके यहां गया। गवर्नर जनरल एक लम्बा, दुबला, कठोर व्यक्ति था जो लड़ाई के मैदान में जख्मी हो चुका था, जिसकी वर्दी पर दो सितारे और एक सफेद क्रास चमक रहे थे। गवर्नर ने मिशन के सदस्यों का बड़ी धूमधाम से स्वागत किया और उसी दिन शाम को अपने यहां एक दावत में निमन्त्रित किया, क्योंकि उस दिन उसकी पत्नी का जन्मदिन था। पावेल अलेक्जेंड्रोविच बहुत खुश हुआ। वह पीटर्सबर्ग के सिले कपड़े पहनकर आया था और उसे उम्मीद थी कि वह अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित कर लेगा। वह बड़ी बेतकल्लुफी से ड्राइंग-रूम में दाखिल हुआ, लेकिन हाल में बहुत-से फौजी अफसर बैठे थे, जिनकी वर्दियों पर गुंथे हुए डोरों के चिह्न थे। नागरिक अफसरों की वर्दियों पर सितारे चमक रहे थे। मोझग्ल्याकोव ने सबसे पहले गवर्नर की पत्नी को झुककर सलाम किया, जिसकी खूबसूरती की शोहरत वह पहले से सुन चुका था। वह बड़े तपाक से आगे बढ़ा, लेकिन अगले ही क्षण वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गया। उसके सामने जेना डास की एक भड़कीली पोशाक, और हीरों के जेवर पहने गर्व और बेरुखी से खड़ी

थी। उसने पावेल अलैक्जैंड्रोविच को नहीं पहचाना। उसने लापरवाही से मोज़ाल्याकोव की तरफ एक निगाह डाली और फिर फौरन अगले मेहमान की तरफ मुड़ गई। मोज़ाल्याकोव चकित होकर एक तरफ हट गया और भीड़ में एक भीरु युवक अफसर से जा टकराया, जो अपने-आपको गवर्नर जनरल के डान्स में पाकर आतंकित हुआ जा रहा था। पावेल अलैक्जैंड्रोविच ने उस अफसर से सवाल पूछने शुरू किए और उसे बहुत-सी दिलचस्प बातें मालूम हुईं। उसे पता चला कि दो बरस हले गवर्नर जनरल मास्को गया था, वहां उसने एक बेहद अमीर और ाला खानदान की युवती से शादी की थी। गवर्नर जनरल की पत्नी नुपम सुन्दरी है, लेकिन वह बड़ी अहंकारी है और सिवा जनरलों के सी और के साथ डान्स नहीं करती, इस डान्स में कम से कम नौ नरल आएंगे, जिनमें से कुछ बाहर से इस शहर में आए हुए हैं और छ सिर्फ काउन्सलर ऑफ स्टेट हैं। गवर्नर जनरल की पत्नी की मां भी उसके साथ ही रहती है। मां बहुत ऊंची सोसाइटी की महिला हैं और बड़ी चालाक हैं, लेकिन वे अपनी बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकतीं। खुद गवर्नर जनरल भी अपनी पत्नी की पूजा करते हैं। मोज़ाल्याकोव ने अफानासी मातविच के बारे में संकेत किया, लेकिन उस 'सुदूर प्रदेश' में किसीको अफानासी मातविच के बारे में कुछ भी पता न था। अपना मन स्थिर करने के बाद मोज़ाल्याकोव कमरों में चक्कर काटने लगा, वहां जल्द ही उसकी नज़र मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना पर पड़ी जो सिर से लेकर पांव तक बनी-ठनी, हाथ में एक कीमती पंखा लिए बैठी थी और बड़ी ज़िन्दादिली से किसी सम्मानित व्यक्ति से बातें कर रही थीं, जो ज़ाहिरा तौर पर कोई अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति था। उनके चारों तरफ बहुत-सी महिलाएं बैठी थीं जिनके प्रति मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का व्यवहार अत्यन्त स्नेहपूर्ण दिखाई दे रहा था। मोज़ाल्याकोव ने साहस बांधकर अपना परिचय दिया। मारया

अलेक्जेन्द्रोव्ना प्रसन्न मन से खिल उठी, लेकिन फौरन उसी क्षण गंभीर हो गई। उन्होंने बड़ी शिष्टता से पावेल अलेक्जेन्द्रोविच को पहचानने की इच्छा की, पीटर्सबर्ग के कुछ परिचितों के बारे में पूछताछ की और पावेल अलेक्जेन्द्रोविच से पूछा कि वह इस साल विदेश क्यों नहीं गया। मोज्ग्ल्याकोव के बारे में मार्या अलेक्जेन्द्रोव्ना ने एक शब्द भी नहीं कहा, जैसे मोज्ग्ल्याकोव का कभी संसार में अस्तित्व ही न रहा हो। आखिर पीटर्सबर्ग के किसी मशहूर व्यक्ति का जिक्र करने और उसकी सेहत का हालचाल पूछने के बाद, हालांकि मोज्ग्ल्याकोव ने उस व्यक्ति का नाम कभी नहीं सुना था, मार्या अलेक्जेन्द्रोव्ना सुवासित मखमली बालों वाले एक बड़े अफसर की तरफ मुड़ गई, जो उनकी तरफ आ रहा था और अगले ही क्षण पावेल अलेक्जेन्द्रोविच को एकदम भूल गई जो उनकी कुर्सी के पास खड़ा था।

एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ अपना हैट हाथ में लेकर मोज्ग्ल्याकोव बालरूम में लौट आया। वह अपने को अगर अपमानित नहीं तो चोट खाया हुआ महसूस कर रहा था, इसलिए उसने डान्स न करने का फैसला कर लिया। शाम भर वह उदास और खोया-खोया-सा रहा, उसके चेहरे पर मेफिस्तोफील[1] की सी मुस्कान छाई रही। चित्रवत् अन्दाज में एक खम्भे के सहारे एक ही जगह खड़ा (उस बॉलरूम में सचमुच खम्भे लगे हुए थे, जैसे चित्र को सम्पूर्णता देने के लिए जान-बूझकर वहां खड़े किए गए हों) वह घंटों तक लगातार सारे डान्सों के बीच, ज़ेना को देखता रहा। लेकिन अफसोस, उसकी सारी चतुराई, चित्रवत् पोज़, निराश अदाज़, इत्यादि सब बेकार गए! ज़ेना ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। आखिर क्षुब्ध होकर, उसके पाव इतनी देर खड़े रहने के कारण दुख रहे थे, भूख से परेशान होकर—क्योंकि उसका दुखी प्रेमी का रोल उसे खाने तक रुकने की इजाजत नहीं दे रहा था—वह

१. गेटे के काव्य, फ़ास्ट का एक पात्र

अपने क्वार्टर में लौट आया। उस वक्त वह थकान से चूर हो गया। उसे महसूस हो रहा था, जैसे किसीने उसकी खूब पिटाई की हो।

उस रात वह बड़ी देर तक सो न सका, बल्कि बैठकर अपने अतीत की सारी घटनाओं को मन में दुहराता रहा। अगले दिन सुबह एक ओहदा खाली हुआ और मोझग्ल्याकोव ने सहर्ष अपने-आपको उस ओहदे के लिए पेश किया। वह शहर छोड़ने के बाद उसका मन एकदम ताज़ा हो गया। अनन्त मैदान पर बर्फ झिलमिलाते हुए सफद कफन की तरह फैली थी। दूर क्षितिज में, बर्फीले रेगिस्तान के किनारे जंगलों की काली रेखा थी।

जोशीले घोड़े सरपट चाल, अपनी टापों से बर्फ को बिखेरते हुए दौड़ रहे थे। स्लेज की घंटियां बज रही थीं। पावेल अलेक्सांद्रोविच किसी गहरी सोच में डूब गया, फिर दिवास्वप्न देखने लगा। अन्त में उसे आराम की नींद आ गई। तीसरे पड़ाव पर पहुंचकर उसकी नींद खुली। उसने अपने-आपको ताज़ा और स्वस्थ महसूस किया। और उसके विचारों का केन्द्र भी बदल गया था।

कुलटा

काफी रात बीत चुकी थी। बारह बजने वाले थे। मैं झपकी ले रहा था कि एकाएक नींद टूट गई। लालटेन की रोशनी इतनी कम थी कि अंधेरा मुश्किल से छट पाता था। सभी सोए थे। लगता था उस्तिपान्तसेव भी सो रहा है। उसके खर्राटों से रात का सन्नाटा तार-तार हो रहा था। तभी शायद पहरा बदलने का समय हुआ। बाहर दूर बरामदे मे गारद के चलने की भारी-भारी आवाजें सुनाई पड़ीं। उसने बन्दूक को जमीन पर जोर से टेका। दरवाजा खुला। सिपाही बड़ी ही सावधानी से अन्दर घुसा और सारे रोगियों की गिनती की। फिर वार्ड मे ताला लगा। नये गारदो ने ड्यूटी सभाली और फिर सब कुछ शांत हो गया। तभी मुझे लगा मेरे बायें कुछ ही दूर पर दो आदमी आपस में कानाफूसी कर रहे हैं। अस्पताल मे कभी-कभी ऐसा होता कि लोग अगल-बगल चारपाइयों पर मुद्दत से लेटे हुए हैं और आपस मे एक शब्द भी नहीं बोलते, जैसे एक-दूसरे को जानते ही न हो और एकाएक वे रात के अंधेरे मे बातें शुरू कर देते और उनमे से एक ऐसा होता जो अपनी सारी दास्तान दूसरे से कह सुनाता। मेरे पास वाले वे दो लोग बहुत देर से बातें कर रहे थे। शुरुआत कैसे हुई—मैं नहीं सुन सका था और अब भी मैं सब कुछ साफ-साफ नहीं सुन पा रहा था। लेकिन टुकड़े-टुकड़े मे अब मैं उनकी कानाफूसी सुनने लगा। उनमे से एक बड़े ही भावावेश मे बातें कर रहा था, कुहनी के बल अपनी गर्दन को आगे निकाले अपने पड़ोसी की ओर लपक-लपककर अपनी दास्तान सुना रहा था। वह बहुत ही उत्तेजित था और अपनी कहानी सुनाने के लिए

बहुत ही भद्दा। कहानी सुनने वाला असमंजस-सा बैठा था। वे
कौन हैं वह हस्ती के दुबारा नाम भी कह देता। लेकिन यहाँ
परिस्थिति में ही कह रहा था। उसे जैसे कोई दिलचस्पी न थी। ले
मुझे सुनाने वह अपनी स्थिति से मुक्ति निकालकर आगे बढ़
या लिया करता। कहानी सुनाने वाले का नाम था बेंजामिन और वह
फौज का सिपाही था। उसकी उम्र पचास के आसपास रही होगी।
वह अपने को बहुत कुछ समझने वाला एक बाबू किस्म का आदमी था।
कहानी सुनाने वाला एक नौजवान था। उसकी उम्र तीस तक भी न
पहुँची थी। वह निचले वर्ग का कैदी था और उसे मजदूर वर्ग
का काम करना पड़ता था। इससे पहले मैंने इस आदमी पर कोई
नहीं दिया था। और बाद को भी जाने क्यों उसमें मेरी कोई दिलच
नहीं रही। वह अजब किस्म का आदमी था और उसके दिमाग में
भरा था। कभी-कभी हफ्तों तक वह खामोश रहता, एक बात भी
करता और फिर एकाएक किसी न किसी से उलझ जाता, दर्द
कर देता, मामूली-सी बात पर झगड़ बैठता, एक बैरक से दूस
बैरक तनतनाता फिरता, चुगलियाँ करता और जरा-सी बात प
पाजामे से बाहर होने लगता। और इस सबका नतीजा यह होता कि
कोई उसकी जमकर पिटाई कर देता और वह फिर अपनी उसी रूठी
हुई खामोशी में लौट जाता। वह एक कायर और बेजान-सा आदमी
था। उसे कोई घास तक नहीं डालता था। उसका कद छोटा था और
उसकी आँखें अक्सर रंग बदला करतीं—कभी वह विचारमग्न दिखता
और कभी खाली और शून्य। वह हर बात बड़े ही भावावेश के साथ
शुरू करता, बाँहें घुमाता और फिर एकाएक जैसे कहीं कुछ टूट-सा
जाता और वह फिजूल की बातों में बहक जाता। फिर उसे यह भी याद
न रहता कि उसने कौन-सी बात शुरू की थी। वह अक्सर लोगों से
झगड़ता रहता और इतने जोश में आ जाता कि उसकी आँखों में आँसू

भर आते। वह बालालैका बजाना जानता था और इसमें उसे महारत भी हासिल थी। उसे यह बाजा पसन्द भी था। अगर उससे कोई कहता तो वह छुट्टियों के दिन नाचता भी था और नाच भी उसका बुरा न होता। उससे कुछ भी कराया जा सकता था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह बड़ा आज्ञाकारी था, बल्कि वह हमेशा लोगों से दोस्तियां बढ़ाना और उनपर मेहरबानी दिखाना चाहता था।

बहुत देर तक मुझे उसकी बातों का सिर-पैर समझ में न आ सका। वह हमेशा की तरह अपनी कहानी के खास पहलू से दूर-दूर भटकता रहा। इस बीच उसने यह भी देखा होगा कि चेरिविन को उसकी बातों में कतई कोई दिलचस्पी नहीं। लेकिन वह लगातार अपने को मन ही मन समझाए जा रहा था कि चेरिविन बड़े ही ध्यान से उसकी कहानी सुन रहा है। अगर वह यह मान लेता कि चेरिविन को उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं तो उसे बहुत ठेस पहुंचती।

वह कह रहा था, "जब वह बाजार में निकलता तो हर आदमी हैट उतारकर झुक-झुककर उसकी सलामी बजाता। मतलब यह कि वह एक धनी आदमी था।"

"तुमने कहा कि उसके पास एक दूकान भी थी?"

"हां, एक नहीं दो दूकानें उसके पास थीं। हमारे उस इलाके में लोग बहुत गरीब थे। भिखारियों जैसी उनकी हालत थी। औरतें दूर-दूर से नदी से पानी ढो-ढोकर लातीं और गोभियां सींचतीं। काम करते-करते उनकी कमर टूट जाती और फसल पर उनके पास रखा बनाने के लिए भी गोभी न रहती। सब कुछ उजाड़ और बरबाद। उधर उसके पास एक बड़ा-सा फार्म था जिसमें उसने तीन आदमी लगा रखे थे। उसके पास शहद के कुछ छत्ते भी थे। वह शहद और ढोर बेचकर पैसे बनाता था। किस्सा कोताह कि वह हमारे इलाके का रईस और सरगना था। वह बूढ़ा हो चला था। यही कोई सत्तर के आस-पास। लम्बा-

रहता। कभी-कभी वह दो घोड़ों की बग्घी पर भी निकल जाता। ... के कमरे में चरिया बनी रहती। लड़कियों को उससे बड़ा सुख मिलता और वे उससे प्यार करतीं। वह बाजानवाला बनने के लिए होशियार था।"

"तो अब्दुल्ला ने उसका नामोनिशान मिटा पहले से ही क्या था?"

"रुको, रुको, जरा ठहरो। मैं अपने बाप को अभी दफना कर चुका था और हम सौंठ मिली मोटी रोटी पर गुजारा कर रहे थे। मेरी मा ऐसी ही रोटियां अब्दुर्रहिम की दुकान के लिए बनाया करती थी। लेकिन वह कोई जिन्दगी न थी। जंगल की दूसरी ओर हमारी जमीन थी और वहां हम राई की खेती किया करते थे। लेकिन बाप के मरने के बाद वह खेत भी परती रहने लगा, क्योंकि मुझे अपने मौज-मजे से ही छुट्टी न मिलती थी। मैं मुझको दिखाकर अपनी मा से भी पैसे ऐंठता रहा।"

"यह तो कोई ठीक बात न थी, यह तो पाप था।"

"भई, मैं सुबह से शाम तक नशे में धुत रहता। हमारा घर बुरा न था। हालांकि वह पुराना और सड़ा-गला था, लेकिन वह इतना खाली पड़ा रहता कि उसमें कोई खरगोशों की दौड़ करा सकता था। हम इतने गरीब हो चुके थे कि हफ्तों घर में चूल्हा तक नहीं जलता था। मां हर वक्त मेरे ऊपर गुस्सा उतारती रहती, लेकिन उससे फायदा ही क्या था? मैं तो सुबह से रात तक फिल्का मोरोजोव के पास रहा करता और वह मुझसे कहता, 'तुम अपना गिटार तो बजाओ, तुम उसे बजाओ और नाचो, मैं लेटे-लेटे तुम्हारे इस काम के लिए पैसे फेंकता हूं क्योंकि तुम जानते ही हो कि मैं इस शहर का सबसे धनी आदमी हूं।' वह कैसी-कैसी हरकतें करता! वैसे, उसे चोरी की चीजें मंजूर न थीं। वह कहता, 'मैं कोई चोर नहीं।' एक बार उसने कहा, 'चलो चलें और अकुल्का के दरवाजे पर कोलतार पोत आएं। मैं यह नहीं चाहता कि वह निकिता

गोरिच से शादी करे। मैंने तय कर लिया है।' बूढ़े आदमी की बहुत
नों से ख्वाहिश थी कि वह अपनी बेटी की शादी निकिता से कर दे।
किता बूढ़ा-सा आदमी था। वह आंखों पर चश्मा लगाता था और बहुत
न हुए, उसकी बीवी मर चुकी थी। लेकिन जब उसने अकुल्का के बारे
अफवाहें सुनीं तो वह मुकर गया। उसने कहा, 'इससे मेरी बड़ी बद-
मी होगी और इसके अलावा मैं शादी भी नहीं करना चाहता क्योंकि
अब बहुत बूढ़ा हो चला हूं।' तो हमने अकुल्का के दरवाज़े तारकोल
रंग दिए। और उसके मां-बाप ने उसकी खूब पिटाई की। उसकी मां
रिया स्तेपानोव्ना चिल्लाई, 'मैं इसकी जान लेकर दम लूंगी।' और
बाप ने कहा, 'अगर यह बात पुराने वक्तों में हुई होती तो मैं इसकी
टी-बोटी करके आग में जला देता। लेकिन आज तो दुनिया गंदगी
र अंधेरे में डूब चुकी है।' सारी गली के पड़ोसी अकुल्का का चीखना-
ल्लाना सुनते रहे। सुबह से रात तक उसकी पिटाई होती रही। और
ल्का बाज़ार में घूम-घूमकर चिल्लाता रहा, 'अकुल्का तो तवायफ है
यफ। और वह भी ऐसी कि वोद्का की बोतल सामने हो और वह
र में। क्या खूबसूरत कपड़े पहनती है, कैसी गज़ब की पियक्कड़ है,
हसीन माशूका है। मैंने उन्हें ऐसा सबक सिखाया है कि वे खूब-
याद करेंगे।' तभी अकुल्का से मेरी भेंट हुई। वह दो घड़े उठाए
रही थी। 'गुड मार्निंग, अकुलिना, इतने अच्छे कपड़ों में कहां जा
हो?' उसने बड़ी-बड़ी आंखों से मेरी ओर देखा। वह छाया की
ह दुबली लग रही थी। उसकी मां बरामदे में खड़ी थी। उसने सोचा
उसकी बेटी मेरे साथ नज़रें लड़ा रही है और वह चिल्लाई, 'तू
क्या घूर-घूरकर देख रही है, शर्म नहीं आती तुझे?' और उस दिन
र उसकी पिटाई हुई। कभी-कभी उसकी मां घंटे भर तक उसकी
टाई करती और कहती, 'मारते-मारते मैं तेरी जान ले लूंगी, अब तू
री बेटी नहीं रही।'"

निरोर निकली।"

"बकवास मत करो !"

"बकवास नहीं, ऐसी बीती कि क्या बताऊं ! हाय उसे इस ताड़ना क्यों सहनी पड़ी ! किस्बा के सारे कस्बे में उसकी बदनामी क्यों ?"

"हां, तो बताओ न आखिर क्यों ?"

'मैं घुटनों के बल बैठ गया और अपने दोनों हाथ अपने सीने पर रखकर बोला, 'मेरी जान ! मेरी बेवकूफियों के लिए मुझे माफ कर दो। मेरे अपमानजनक के लिए मुझे माफ कर दो।' और वह बिस्तर पर बैठकर मेरी तरफ देखने लगी। फिर उसने अपने हाथ मेरे कन्धों पर रख दिए और हंसने लगी—बड़ी-बड़ी आखों से आसू बह-बहकर उसके गालों को भिगोने लगे। वह एक साथ हंसती और रोती रही। और मैं उन सबके पास जा-जाकर कह आया, 'अगर किस्का मिल जाए तो मैं उसे जान से मार डालू।' बूढ़े-बुढ़िया को यह न समझ में आया कि इसके लिए वे किसका शुक्रिया अदा करें। अकुल्का की मा उसके पैरों पर गिर पड़ी। और बूढ़े आदमी ने कहा, 'मेरी प्यारी बेटी, काश कि हमें मालूम होता कि तुम्हारे लिए हमने कैसा प्यारा शौहर ढूढ़ा है।' शादी के बाद पहले इतवार को मैं गिरजे गया। उस समय मैंने अस्त्राखान टोपी, बढ़िया जामा और मखमली पाजामा पहन रखा था और अकुल्का ने खरगोश के चमड़े की नई जैकेट और रेशमी रुमाल। मतलब यह कि हमारा बहुत ही खूबसूरत जोड़ा था। काश, तुमने हमें देखा होता ! मैं तुमसे कहता हू कि सबकी जबानो पर हमारी तारीफ थी—मेरी और अकुल्का दोनो की। तुम यह मत समझना कि वह इन्द्र की परी थी। लेकिन हां, वह बहुतो से अच्छी थी।"

"तो मतलब यह कि अन्त मे सब ठीक हो गया !"

'सुनो भी तो। शादी के दूसरे दिन मेहमानो से मैंने [illegible]

हालांकि तब भी मैं नशे में था, मैंने कहा, 'इस निकम्मे फिल्का को मेरे सामने पेश करो, उस चोर को मेरे सामने करो।' यह कहता मैं सारे कस्बे में घूमता रहा। मैं बुरी तरह से नशे में था और ब्लासोव के घर के सामने तीन आदमियों ने मुझे पकड़ा और जबर्दस्ती मेरे घर तक पहुंचा दिया। उसके बाद सारे कस्बे में चर्चा मच गई। 'सुना तुमने, अकुल्का तो बिलकुल निर्दोष निकली,' औरतों ने कानाफूसी शुरू की। लेकिन थोड़ी ही देर बाद फिल्का ने तमाम लोगों के सामने मुझसे कहा, 'तू अपनी बीवी को बेच क्यों नहीं देता और सारे पैसों की शराब क्यों नहीं पी लेता। याश्का ने भी तो इसीलिए शादी की थी। वह अपनी बीवी के साथ कभी नहीं सोया। लेकिन हां, शादी के बाद तीन साल तक खूब पीता रहा।' मैंने कहा, 'तू जलील सुअर है।' इसपर उसने कहा, 'और तू बेवकूफ है। तुझे शराब के नशे में धुत करके उन्होंने तेरे कंधों में जुआ डाल दिया। कहीं नशे में भी ऐसी बातों का पता चलता है!' और मैं सीधा घर गया और चीखकर बोला, 'तुमने मेरी शादी उस समय कर दी जब मैं नशे में बेहोश था।' इसपर मेरी मां मुझपर टूट पड़ी और मैंने उससे कहा, 'मां, तू सुन, तेरे कानों में सोना भर दिया गया है। इसीलिए बाहर लोग क्या कह रहे हैं, तुझे सुनाई नहीं देता। अकुल्का कहां है?' और मैं अकुल्का को दो घंटे तक मारता रहा, मारते-मारते मैं खुद थक गया। तीन हफ्ते तक वह बिस्तर पर पड़ी रही।"

चेरेविन ने आलसी की तरह कहा, "हां, यह तो है कि अगर तुम उन्हें पीटो नहीं तो वे जरूर···लेकिन क्या तुमने उसे किसी आशिक के साथ पकड़ा भी?"

"नहीं, ऐसा तो नहीं हुआ," शिश्कोव ने थोड़ी खामोशी के बाद कहा, "लेकिन तुम समझ सकते हो कि मुझे इससे कितनी चोट लगी होगी। लोग मेरी हंसी उड़ा रहे थे और फिल्का उनमें सबसे आगे था।

'तुम्हारी बीवी तो शहर-भर से इश्क कर सकती है।' उसने इस तरह अपने पर गुमान और कुछ इसी तरह के जुमले कहता रहा, 'उसकी बीवी बड़ी रहमदिल है, भली और अच्छे सलूक वाली। कम से कम इस समय वह ऐसी ही लग रही है। लेकिन दोस्तो, क्या तुम्हें वह दिन भूल गया जब तुमने उसके दरवाज़े पर तारकोल पोता था?' मैं नशे में धुत था और उसने मेरे बाल पकड़कर ज़मीन पर धकेल दिया और बोला, 'मसुल्का के खाविन्द, तुम्हें नाचना होगा। मैं तुम्हारे बाल पकड़े रहूंगा और तुम इसी तरह नाचते रहोगे।' मैंने उसे गालियां दीं। इसपर वह बोला, 'मैं अपना पूरा गिरोह लेकर तेरे घर आऊंगा और जो मरकर तेरी बीवी की पिटाई करूंगा।' और यकीन मानो, उसके बाद मैं एक महीने तक घर से बाहर नहीं निकला। मुझे डर था कि अब मैं कहीं बाहर रहूंगा, तभी वह आ धमकेगा। और इसीलिए मैंने अपनी बीवी को पीटना शुरू कर दिया।"

"लेकिन आखिर क्यों? तुम हरएक की ज़बान तो नहीं पकड़ सकते। बीवी को हर समय पीटते रहना भी अच्छा नहीं। उसे सज़ा भी देनी पड़ती है, सबक भी सिखाना पड़ता है, लेकिन उसके साथ मेहरबानी भी करनी पड़ती है, बीवी इसीलिए बनी ही है।"

शिश्कोव कुछ देर तक खामोश रहा।

फिर उसने शुरू किया, "मेरे दिल में चोट लगी थी, और इसलिए आदत-सी पड़ गई। किसी-किसी दिन तो मैं उसकी सुबह से लेकर शाम तक पिटाई करता। मुझे उसका हर काम गलत लगता। और अगर मैं उसकी पिटाई न करता तो ऊबने लगता। वह बैठी रहती, खिड़की के बाहर देखा करती और हर वक्त रोती रहती। वह हर समय रोती रहती और मैं उसपर तरस भी खाता। फिर भी मैं उसे पीटता। मेरी मां इसके लिए मुझे कितनी गालियां सुनाती, 'ज़लील भेड़िया, राक्षस कहीं का।' और मैं चीखता, 'मुझे कोई कुछ न कहे!

धोखे से मेरी शादी करके मेरी ज़िन्दगी बरबाद कर दी।' शुरू-शुरू में वह बूढ़ा आदमी भी आता और अपनी बेटी का पक्ष लेकर कहता, 'तुमने अपने को समझ क्या रखा है ? मैं तुम्हें कानून के हाथों सज़ा दिला सकता हूं।' लेकिन बाद को वह भी निराश हो गया। और मारिया स्तेपानोव्ना ने भी अपना रुख बदल लिया। उसने एक दिन आंखों में आंसू भरकर गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'इवान सेमिओनिच, मैं तुमसे भीख मांगने आई हूं। बात मामूली-सी है, लेकिन मेरे लिए बहुत बड़ी है। उसे माफ कर दो, रहम करो ! कुछ बदमाशों ने उसे बदनाम कर दिया। लेकिन तुम खुद जानते हो कि जब तुमसे उसकी शादी हुई तो वह निर्दोष थी।' वह रोते-रोते ज़मीन पर झुक गई। लेकिन मुझे लग रहा था कि अब मैं कर्त्ता-धर्त्ता हूं और मैंने कहा, 'मैं तुम्हारी एक बात भी नहीं सुनूंगा। मैं अपनी मर्ज़ी का मालिक हूं, तुम सबके साथ को चाहूंगा, करूंगा। पता नहीं, गुस्से में मैं क्या कर बैठूं ! फ़िल्का मोरोज़ोवा का जहां तक सवाल है, वह मेरा यार और मेरा सबसे अच्छा दोस्त है।' "

"तुम्हारा मतलब है कि तुम फिर उसके साथ गुलछर्रे उड़ाने लगे ?"

"नहीं, मैं तब से कभी नहीं गया। और वह तो अन्धाधुन्ध शराब पीने लगा था। ऐसे में कौन उसके पास जाता। जब उसका सारा पैसा खत्म हो गया तो वह एक अमीर आदमी के सबसे बड़े लड़के की जगह फ़ौज में भर्ती होने के लिए तैयार हो गया। हमारी तरफ़ अगर कोई आदमी इस बात के लिए तैयार हो जाए तो वह उस घर का तब तक मालिक बन बैठता है, जब तक उसकी भर्ती का बुलावा न आ जाए। वैसे पूरे पैसे तो उसे भर्ती होने पर ही मिलते हैं लेकिन तब तक वह उस घर में रह सकता है और मनमानी कर सकता है। और भर्ती का बुलावा कभी-कभी छः-छः महीने तक नहीं आता। घरवाले उसकी हर मनमानी बर्दाश्त करते हैं क्योंकि उन्हें डर लगा रहता है कि ज़रा-सा नाराज़ होते

पर वह मां की लड़की करने से इनकार कर सकता है। तो क्षि
कते भर में मतूसका बना दिया। वह घर की बेटी के हाथ पेंचे।
कान की चुड़ी बोलने लगा और अपने बता-बता करने लगा। वे
उसके लिए हर रोज बढ़ाने का आरा इन्तजाम करते। बोतलों को
जोर से उठाकर मदखाने में आना पड़ता। नशे में चूर वह घर आता।
बाहर खड़े होकर चिल्लाता, 'जल्दा दिखा दो, मैं दरवाजे से घर के अ
नहीं आना चाहता!' और उन्हें अपने का एक हिस्सा निराना पड़ता
लेकिन एक दिन वह भी आया कि उसका नशा ठंडा हुआ और लोग उ
भर्ती के लिए ले गए। उसे जाते देखकर सड़क पर लोगों की भीड़ लग
हो गई। 'किल्का को फौज में भर्ती कराने ले जा रहे हैं।' और वह किल्क
सबसे झुक-झुककर विदा होता रहा। तभी अकुल्का खिड़की से निकली।
किल्का ने कोचवान से चिल्लाकर गाड़ी रोकने को कहा और गाड़ी से
कूद पड़ा। वह अकुल्का के पास आया और जमीन तक झुककर बोला,
'मेरी जान, मेरी प्यारी, मैंने तुमसे दो साल तक प्यार किया और अब
वे मुझे फौज में भर्ती करने ले जा रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि तुम जैसी
निर्दोष लड़की मेरे गुनाहों को माफ कर देगी।' और यह कहकर वह
फिर झुक गया। अकुल्का पहले तो ऐसी निष्कम्प-सी खड़ी रही जैसे वह
भयभीत हो। लेकिन कुछ देर बाद वह भी झुकी और बोली, 'अलविदा,
मेरे जवान, मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं।' इसके बाद वह घर की
ओर मुड़ गई। मैं भी उसके पीछे चल पड़ा। घर में पहुंचकर मैंने कहा,
'चुड़ैल, तूने उससे ऐसा क्यों कहा?' यकीन करो या न करो, मगर उसने
जवाब दिया, 'मैंने उससे ऐसा इसलिए कहा कि मुझे उससे प्यार है।'"

"क्या बकते हो!"

"उसके बाद सारा दिन मैंने उससे कुछ नहीं कहा। शाम हुई और
तब मैं बोला, 'अकुल्का, इसके लिए मैं तुम्हारी जान लेकर रहूंगा।' मैं
उस रात सो नहीं सका और गलियारे में जाकर क्वास पी आया।"

ही सभाल नही पाती है। तत्कालीन उच्च मध्यमवर्गीय नारी समाज इस उपन्यास में बहुत ही यथार्थ चित्रण हुआ है।

रूस वापस आ जाने के बाद उन्होंने फिर एक पत्र, 'द सिटीज़न' सम्पादन शुरू किया। इसमें लिखी रचनाएं बाद में 'ए राइटर्स डाय मे प्रकाशित हुईं। १८७५ मे उन्होने 'ए रॉयथ' लिखा और १८८० उनका सबसे लम्बा और अन्तिम उपन्यास 'कारामाजाव बंधु' निकला इस अन्तिम उपन्यास में उन्होंने दिमित्रि, इवा और अल्योशा—इन ती भाइयो का चित्रण किया है, जिनमे पहला कामुक है, दूसरा लोकवा है, और तीसरा मानवता का प्रेमी है। वैसे इसका केनवस बड़ा है औ इसमे हमे कितने ही बड़े दिलचस्प चरित्र मिलते हैं।

दॉस्तॉयव्स्की के उपन्यासों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें मानव-मन की गहराइयों की छानबीन की गई है और अन्तरात्मा व व्यक्तित्व के आश्चर्यजनक अन्तर्विरोधो को बड़ी सफलता के साथ उजागर किया गया है। टॉलस्टॉय के बाद दॉस्तॉयव्स्की का रूसी गद्य-साहित्य में सबसे ऊंचा स्थान है। कुछ आलोचको की दृष्टि मे तो वे टॉलस्टॉय से भी बड़े हैं। यूरोप ने आरम्भ में दॉस्तॉयव्स्की की उपेक्षा की। परन्तु जैसे-जैसे उनकी कृतियां पश्चिमी यूरोप की भाषाओ मे अनूदित होती गई, लोग उनकी कलम का लोहा मानते गए।

दॉस्तॉयव्स्की अशा रण अपराधियों, पागलो और रहस्यों के चित्रकार थे। उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी थीं। साइबेरिया मे उन्हें भयानक अनुभव हुए थे उनके कारण उनका मिर्गी का जन्मजात रोग और ज़ोर पकड़ गया था। घर की आर्थिक स्थिति सत्यानाश की सीमा तक पहुंच गई थी। वे प्राय: सदा ही ऋण मे रहते थे। पुलिस और अधिकारी उन्हें एक ओर पीसते थे। दूसरी ओर प्रतिगामी उदारवादी उन्हें गालियां देते थे। हज़ार-हज़ार विपत्तियों को झेलते हुए, पैसे-कपड़ों के अभाव में दिन-दिन-भर और रात-रात-भर कलम घिसते हुए, और

रात-दिन की उस लगातार मेहनत के बाद भी कुछ कायदे से न कमा सकते हुए, उन्होंने साहित्य-साधना की थी। उनकी प्रतिभा आग में तपकर कुंदन बनी थी। इसीलिए तरह-तरह के अनुभवों का उनके पास अनन्त भंडार था। इसलिए वे मानव-मन में इतने गहरे पैठ सके और चेतन व अवचेतन की सूक्ष्मतम भावनाओं और लालसाओं को इतनी तीव्रता के साथ चित्रित कर सके।

१८८१ में जब उनकी मृत्यु हुई तो उनकी अर्थी के साथ सभी वर्गों के नर-नारियों की अपार भीड़ थी, मानो वह किसी लेखक की नहीं बल्कि देश के किसी राष्ट्रनायक की अर्थी हो। अपनी कृतियों से तब तक वे जन-साधारण के हृदय सम्राट बन चुके थे और उनकी असीम निष्ठा प्राप्त कर चुके थे।

- हिन्द पॉकेट बुक्स सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं, समाचारपत्र-विक्रेताओं, रेलवे बुक-स्टालों तथा रोडवेज बुक-स्टालों से मिल सकती हैं।
- देश-विदेश के प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें—उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, उर्दू शायरी, ज्ञान-विज्ञान, हास्य-व्यंग्य, स्वास्थ्य, नित्योपयोगी एवं जीवनोपयोगी साहित्य हिन्द पॉकेट बुक्स में प्रकाशित किया जाता है। हिन्द पुस्तकें उच्चकोटि के लेखकों, आकर्षक गेटअप, सुन्दर छपाई, सस्ते दाम के लिए भारत-भर में प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया है। केवल कुछ पुस्तकों का मूल्य दो रुपये प्रति है, परन्तु उनकी पृष्ठ-संख्या २५० के लगभग है।
- यदि आपको हिन्द पॉकेट बुक्स प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई हो तो हमें लिखें। पांच पुस्तकें एकसाथ मंगाने पर डाक-व्यय की भी सुविधा भी दी जाती है। यदि आप चाहते हैं कि आपको हिन्द पॉकेट बुक्स की सूचना निरन्तर मिलती रहे, तो अपना नाम, व्यवसाय और पूरा पता कार्ड पर लिखकर हमें भेज दें। हम आपको नये प्रकाशनों की सूचना देते रहेंगे।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२